जन्म कुण्डली

निर्माण और अध्ययन

जन्म कुण्डली

[निर्माण और अध्ययन]

लेखक :

श्री भारतीय योगी

रचयिता : हस्तरेखा महाविज्ञान, प्रश्न ज्योतिष विज्ञान
राशि ज्योतिष विज्ञान, फलित ज्योतिष विज्ञान
स्वप्न ज्योतिष विज्ञान, ज्योतिष और आर्थिक
समस्याएँ, भाग्य और आकृति विज्ञान,
शकुन ज्योतिष विज्ञान आदि ।

प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब, वेदनगर,
बरेली–२४३००३ (उ० प्र०)

प्रकाशक :

डॉ० चमनलाल गौतम

संस्कृति संस्थान,

ख्वाजा कुतुब (वेदनगर)

बरेली २४३००३ (उ. प्र.)

फोन : ४२४२

*

लेखक :

श्री भारतीय योगी

*

*

तृतीय संस्करण

१९८२

*

मुद्रक :

कान्ता प्रिंटिंग प्रेस

जनरल गंज, मथुरा।

*

मूल्य :

चार रुपये मात्र

भूमिका

□

ज्योतिष का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। इसके द्वारा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति, मातृ-सुख, देश-विदेश की यात्रा; घर, भूमि, कृषि-क्षेत्र, वाहन भ्रातृ-सुख, शिक्षा, सन्तान-सुख, झगड़ा; वाद-विवाद, मुकदमा, रोग, स्त्री-पुरुष में पारस्परिक प्रेम, सुखी या दुखी दाम्पत्य जीवन, आयु, (दीर्घायु, अल्पायु) धन, भाग्य, पितृ-सुख, राज-सम्मान, राजयोग तथा आय एवं व्यय सम्बन्धी विषयों पर शुभा-शुभ फल का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

यह पचभूतात्मक जगत सुख-दुःख सौभाग्य - दुर्भाग्य, लाभ-हानि, भाव-अभाव आदि से भरा पड़ा है। संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो पूर्ण रूप से सुखी या दुःखी कहा जा सके। क्योंकि सुख और दुःख दोनों ही देह-धर्म हैं। आज सुख है तो कल दुःख भी हो सकता है और दुःख है तो कल सुख का होना भी असम्भव नहीं। दुःख-सुख का जोड़ा है, इसे न समझने वाले मनुष्य सुख में प्रसन्न होते और दुःख में हर्ष मानते हैं।

बहुत-से मनुष्य कभी-भी इतने दुःखित और निराश हो जाते हैं कि उन्हें यह विश्वास ही नहीं होता कि कभी सुख का समय भी आयेगा। फिर विश्वास भी हो तो कैसे ? उनके पास ऐसा कोई साधन भी तो नहीं होता, जिसके सहारे वे आशान्वित हो सकें और सुखमय भविष्य की आशा में अपने को अभिभूत रख सकें।

अनेक गृहस्थ दूसरों पर अपनी कमजोरी प्रकट नहीं होने देना चाहते और इसलिए किसी ज्योतिषी आदि के पास जाना भी पसन्द नहीं करते। फल यह होता है कि जीवन के प्रति एक निराशा, एक घुटन, एक अविश्वास उत्पन्न हो जाता है और वह मनुष्य को अत्यन्त चिन्ताग्रस्त बना देता है और सभी जानते हैं कि चिन्ता मानव

मस्तिष्क की एक ऐसी विकृति है जो मन और शरीर को रोगी बना देती है। यदि मनुष्य सौ वर्ष जीवित रहने वाला है तो वह चिन्ता के कारण १०-२० वर्ष कम ही जीयेगा।

इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि अपने भाग्य के विषय में जानकारी की जाय। कहते हैं कि पत्ते के नीचे भाग्य ढका रहता है। पत्ता हटा कि भाग्य खुल गया। संस्कृत के प्राचीन आचार्य तो भाग्य को अत्यन्त गूढ़ मानते आये हैं। उनके मत में 'स्त्रीश्चरित्र पुरुषस्य भाग्य देवो न जानाति कुतो मनुष्य' अर्थात् स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य को तो देवता भी नहीं जानते तो मनुष्य की तो सामर्थ्य हा क्या है ?

और इसीलिए हमारे प्राचीन आचार्य मनुष्य के भाग्य का शुभा-शुभ जानने में सतत् प्रयत्नशील रहे। उन्होंने गणित की ऐसी विधियां निकालीं, जो कि जन्म काल के आधार पर समूचे आयु का लेखा-जोखा तैयार करने में समर्थ थी। उनके द्वारा सभी सांसारिक समस्याओं का समाधान सम्भावित था। ऐसा कोई विषय नहीं था, जिनका उन विधियों के द्वारा पूर्ण हल न निकल आता हो।

वे विधियां कहीं लोप नहीं हो गई हैं, आज भी अध्ययन का विषय बनी हुई हैं। उनके द्वारा मनुष्य ने बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त किया और निरन्तर अनुसन्धान, परीक्षण चलते रहे इसलिए कि कोई अधिक सरल विधि निकल आवे। और आज तो मनुष्य को उतने हिसाब किताब, गणित आदि की फुरसत ही कहां है। ज्योतिषियों की लापरवाही और अधिक परिश्रम न करने के फलस्वरूप लोगों में अविश्वास की भावना उत्पन्न होने लगी। फिर भी वह इस खोज में रहे कि कोई सरल विधि हाथ लगे।

भाग्य निर्णय के लिए सरल विधि की खोज में आज भारतीय विद्वान् ही नहीं, पाश्चात्य जन भी लगे हुए हैं और वे बहुत कुछ निष्कर्ष भी निकाल चुके हैं। वर्तमान में सामान्य रूप से भाग्य-ज्ञान के

लिए अधिक गणित आदि के लिए उतना समय नष्ट करना आवश्यक नहीं रह गया है।

हमारे पाठकों का यह आग्रह रहा है कि 'जन्म कुण्डली के निर्माण और अध्ययन' विषय पर ऐसी ही कोई सरल पुस्तक प्रकाशित की जाय, जिसमें अधिक गणित न करना पड़े, वरन् गणित की भित्ती पर आधारित्त तथ्यों का ज्ञान सरलता से हो सके। समय के देखते हुए यह आग्रह उचित ही है।

इस प्रकार की माँग को ध्यान में रखते हुए हमने 'जन्म कुण्डली निर्माण और अध्ययन' नामक इस पुस्तक की रचना व्यवस्था की इसमें पत्रिका के निर्माण और अध्ययन विषयक तथ्यों को सरलता से समझाने का प्रयत्न किया गया है। नक्षत्रों, राशियों, ग्रहों से सम्बन्धित ऐसे रहस्यों को स्पष्ट रूप से कह दिया है, जिन्हें थोड़ी बुद्धि रखने वाला पाठक भी आसानी से समझ सके। इसमें श्री नारायण हरि गुप्त बी.ए. ने जो सहयोग दिया है, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

जन्म कुण्डल में १२ भाव (घर, कोष्ठक या स्थान) होते हैं उनमें से प्रत्येक में मेषादि के क्रम से बारह राशियों और नौ ग्रहों का स्थान रहता है। इन १२ भावों में ही जातक की पूरी आयु का भविष्य निहित समझिये। यदि इन भावों के विषय में ठीक प्रकार से समझ लिया जाय तो फिर कोई तथ्य अनजान नहीं रहेगा।

प्रस्तुत पुस्तक में यह सभी तथ्य बहुत समझाकर लिखे हैं। प्रत्येक ग्रह और राशि का भावानुसार शुभाशुभ फल निर्दिष्ट होने से भाग्य विषयक जानकारी बहुत सरल हो गई है।

अन्त में विशिष्ट व्यक्तियों के विशिष्ट ग्रह योगों का भाव तथा ग्रह राशि आदि के अनुसार अध्ययनार्थ उदाहरण दिये गये हैं जिनका ज्ञान पाठकों के लिए उनके भाग्य का निकटतम निर्णय प्रस्तुत करने में समर्थ होगा।

—प्रकाशक

विषय-सूची

२—महादशाओं का वर्णन

३—भावानुसार ग्रहों का शुभाशुभ फल

जन्म कुण्डली
(निर्माण और अध्ययन)

जन्म कुण्डली निर्माण

जन्म कुण्डली निर्माण एक ऐसी कला है, जो कि ज्योतिष विज्ञान के अन्तर्गत है। शिशु का जन्म होने पर उसका जन्म समय ही जन्म कुण्डली की आधार शिला है। यदि जन्म-समय का सही अंकन हुआ है तो कुण्डली भी सही बनेगी। जबकि जन्म-समय में किसी प्रकार का अन्तर कुण्डली निर्माण में गड़बड़ी उत्पन्न कर सकता है।

जन्मपत्रिका विषयक ज्ञान

जन्म दिन (तिथि, वार आदि) का अंकन करके समय का अंकन करना चाहिए। उस समय जो नक्षत्र हो वही पूरी जन्म कुण्डली के निर्माण में सहायक है। जन्म पत्रिका बनाने में निम्न तथ्य विशेष रूप से उल्लेखनीय होते हैं—

विक्रम सम्वत्, शक सम्वत्, मास, तिथि, वार, नक्षत्र, योग करण दिनमान, लग्न गोत्र, नवजात शिशु के पिता का नाम इत्यादि। इसके पश्चात् जन्म लग्न कुण्डली लिखनी चाहिए।

उक्त सब तथ्यों के अंकन में पंचांग की सहायता लेनी होती है। सामान्यतः लग्न, कुण्डली इस प्रकार बनाई जाती है—
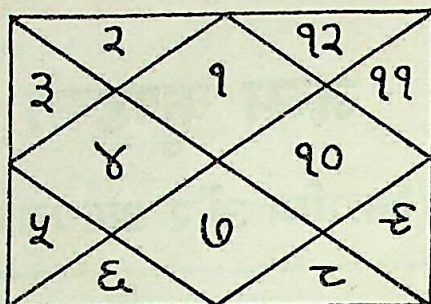
इसमें जहाँ १ का अंक लिखा है वह लग्न राशि का स्थान है। यदि मेष लग्न में जन्म है तो वहाँ १ ही लिखा रहेगा। किन्तु वृषभ लग्न में जन्म हुआ तो १ स्थान पर २ लिखा जायेगा और अन्य अंक क्रमशः अगले घर में बढ़ते जायेंगे। इस प्रकार जहां ११ लिखा है, वहाँ १२ होगा और जहाँ १२ लिखा है, वहां १ लिखा जायगा।

लग्न नक्षत्र और राशि ज्ञान

नक्षत्र २७ होते हैं – (१) अश्विनी (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिरा, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु, (८) पुष्य, (९) आश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वा फाल्गुनी, (१२) उत्तरा फाल्गुनी (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाति, १६) विशाखा (१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढ़ा, (२१) उत्तराषाढा, (२२) श्रवण, (२३) धनिष्ठा, (२४) शतभिषा, (२५) पूर्वा भाद्रपदा, (२६) उत्तरा भाद्रपदा और (२७) रेवती।

प्रत्येक नक्षत्र में चार चरण (पाद) होते हैं। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का चौथा चरण और श्रवण नक्षत्र की प्रथम चार घटिकाओं का समय अभिजित नक्षत्र का भोग काल माना गया है। इस प्रकार विद्वानों ने २८ नक्षत्र माने हैं।

जिस दिन आकाश के जिस नक्षत्र में चन्द्रमा हो, वह दिन उसी

नक्षत्र का कहा जायगा। जैसे कि चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में है तो उस दिन पुष्य नक्षत्र ही होगा।

नक्षत्रों से राशि निर्माण

२७ नक्षत्र मिलकर १२ राशियाँ बनाते हैं, इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक राशि नक्षत्रों के नौ चरणों (सवा दो नक्षत्रों) से बनती है। इसे स्पष्ट रूप से इस प्रकार समझिये —

राशि — नक्षत्र एवं चरण

मेष—अश्विनी ४, भरणी ४, कृत्तिका १

वृषभ—कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशिरा २

मिथुन—मृगशिरा २, आर्द्रा ४, पुनर्वसु ३

कर्क—पुनर्वसु १; पुष्य ४, आश्लेषा।

सिंह—मघा ४, पूर्वा फाल्गुनी ४, उत्तरा फाल्गुनी १

कन्या—उत्तरा फाल्गुनी ३, हस्त ४, चित्रा २

तुला—चित्रा २ स्वाति ४, विशाखा ३

वृश्चिक—विशाखा १, अनुराधा ४, ज्येष्ठा ४

धनु—मूल ४, पूर्वाषाढ़ा ४, उत्तराषाढ़ा १

मकर—उत्तराषाढ़ा ३, श्रवण ४, धनिष्ठा २

कुम्भ—धनिष्ठा १, शतभिषा ४, पूर्वा भाद्रपदा ३

मीन—पूर्वा भाद्रपदा १, उत्तरा भाद्रपदा ४ रेवती ४

राशियों के स्वामी तथा क्रूरत्व और सौम्यत्व

राशियों के स्वामी ग्रह होते है, जिनका यिवरण निम्न प्रकार समझिये

मेष राशि का स्वामी मगल, वृषभ का शुक्र, मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, कन्या का बुध, तुला का शुक्र, वृश्चिक का मंगल, धनु का गुरु, मकर और कुम्भ का शनि तथा मीन का गुरु होता है।

इनमें मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ को क्रूर राशियाँ

तथा वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक मकर और मीन को सौम्य राशियाँ मानते हैं।

राशियों की दिशाएँ

—मेष, सिंह, धनु, की पूर्व दिशा।
—वृषभ, कन्या, मकर की दक्षिण दिशा।
—मिथुन, तुला, कुम्भ की पश्चिम दिशा।
—कर्क, वृश्चिक, मीन की उत्तर दिशा।

ह्रस्व और दीर्घ राशियां

—मेष, वृषभ, कुम्भ, मीन, ह्रस्व राशियाँ।
—मिथुन, कक, धनु, मकर मध्यम राशियाँ।
—सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक दीर्घ राशियाँ।

शून्य राशियां

चैत्र मास में कुम्भ, वैशाख में मीन, ज्येष्ठ में वृष, आषाढ़ में मिथुन श्रावण में मेष, भादों में कन्या, क्वार में वृश्चिक, कार्तिक में तुला, मार्गशीष में धनु, पौष में कर्क, माघ में मकर और फाल्गुन में सिंह राशि शून्य कही गई हैं। इन राशियों के लग्न शुभ कार्यों में शुभ नहीं समझे जाते।

दग्ध राशियां

प्रतिपदा में तुला और मकर, तृतीया में सिंह और मकर, पंचमी में मिथुन और कन्या सप्तमी में धनु और कर्क, नवमी में कर्क और सिंह एकादशी में धनु और मीन तथा त्रयोदशी में वृषभ और मीन दग्ध राशि कही जाती हैं। इन्हें शून्य राशियाँ भी कहते हैं।

राशियों के अन्य शुभाशुभ भेद

पृष्ठोदय राशियाँ—मेष, वृषभ. कर्क, धनु, और मकर पृष्ठोदय राशियाँ हैं। यदि लग्न में कोई पृष्ठोदय राशि हो तो कार्य देर से होता है।

शीर्षोदय राशियाँ—मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ शीर्षोदय राशियाँ हैं। यदि लग्न में कोई शीर्षोदय राशि हो तो कार्य शीघ्र बन जाता है।

उभयोदय राशि—मीन राशि उभयोदय मानी जाती है। इसमें पृष्ठोदय और शीर्षोदय, दोनों के ही गुण होते हैं।

दिवाबल राशियाँ—सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ और मीन दिन में बलवान रहती हैं।

रात्रिबल राशियां—मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, धनु व मकर रात्रि में बलवान होती हैं।

चार राशियाँ—मेष, कर्क, तुला और मकर चर (मूवेबिल) राशियां हैं।

स्थिर राशियाँ—वृषभ, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ स्थिर (फिक्स्ड) राशियाँ हैं।

उभय स्वभाव राशियां—मिथुन, कन्या, धनु और मीन उभय स्वभाव या द्विस्वाभाव (कामन) राशियां मानी गई हैं।

राशियों के तत्व

अग्नि तत्व की राशियाँ—मेष, सिंह और धनु।

जल तत्व की राशियाँ—कर्क, वृश्चिक और मीन।

पृथिवी तत्व की राशियाँ—वृषभ, कन्या और मकर।

वायु तत्व की राशियां—मिथुन, तुला और कुम्भ।

अग्नि तत्व की राशियों की वायु तत्व की राशियों से मित्रता होती है तथा जल तत्व की राशियों की पृथिवी तत्व की राशियों से मित्रता होती है। शेष तत्वों की राशियों में परस्पर शत्रुता होती है, जैसे कि अग्नि तत्व की राशियों की जल तत्व और पृथिवी तत्व की राशियों से शत्रुता होती है।

ग्रहों का वर्णन और उपयोग

यह ज्योतिष में रुचि रखने वाले सभी व्यक्ति जानते हैं कि सूर्य,

चन्द्रमा, मंगल बुध, गुरु (वृहस्पति), शुक्र और शनि के नाम से सात ग्रह हैं तथा राहु और केतु नामक दो ग्रह और हैं, जो कि छाया-ग्रह माने जाते हैं। इस प्रकार इन सबको मिलाकर नवग्रह कहते हैं।

पाश्चात्य विद्वान् भी ग्रहों के अस्तित्व को उपर्युक्त प्रकार ही स्वीकार करते हैं। भाषा-भेद के कारण नामों में परिवर्तन स्वाभाविक हैं। उसका वर्णन इस प्रकार है—

सूर्य को सन, चन्द्रमा को मून, मंगल को मार्स, बुध को मर्करी, गुरु को ज्यूपीटर, शुक्र को वीनस, शनि को सैटर्न, राहु को ड्रैगन्स हैड और केतु को ड्रैगन्स टेल कहते हैं।

ग्रहों का स्वभाव

सौम्य, क्रूर तथा पाप ग्रह आदि के रूप में इसके ३ भेद माने जाते हैं। चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र सौम्य ग्रह हैं तथा सूर्य, मंगल शनि, राहु और केतु क्रूर ग्रह हैं, इनमें मंगल, शनि. राहु और केतु पाप ग्रह भी माने जाते हैं।

ग्रहों के वर्ण

सूर्य का ताम्रवर्ण, चन्द्रमा का श्वेत, वर्ण, मंगल का लालवर्ण, बुध का हरा, गुरु (बृहस्पति) का पीला, शुक्र का श्वेत, शनि और राहु का काला, तथा केतु का धब्बेदार वर्ण होता है।

ग्रहों की शुभाशुभ दृष्टि

शुभ ग्रह की दृष्टि शुभ फल प्रदान करती है, जबकि अशुभ ग्रह की दृष्टि से अशुभ फल होता है। जिस घर (भाव, कोष्ठक, या स्थान) में दो या अधिक ग्रह एक साथ हों, वहाँ फल की निर्भरता ग्रहों के शुभ या अशुभ होने पर है। यदि उनमें परस्पर मित्रता है तो अधिक शुभ फल और शत्रुता है तो अशुभ फल सम्भव है।

इसमें यह भी देखना होता है एक घर में बैठे हुए दो या अधिक ग्रहों में किसका कैसा प्रभाव है। क्योंकि प्रवल ग्रह अपना अधिक प्रभाव रखेगा और निर्बल ग्रह के प्रभाव को दबा देगा।

ग्रह का फल घर के अनुसार तो होता ही है, साथ ही वह जिस घर को देखता है उस घर का फल भी देता है। सभी ग्रह सातवीं दृष्टि वाले होते हैं, अर्थात् अपने से सातवें घर को देखते हैं। उनसे मंगल, गुरु और शनि की सातवीं दृष्टि के अतिरिक्त अन्य विशेष दृष्टियाँ भी मानी जाती हैं। जैसे कि मंगल की चौथी और आठवीं, गुरु की पांचवीं और नवीं तथा शनि की तीसरी और दसवीं दृष्टि होती है।

राशियों के उच्च-नीच आदि भेद

ग्रह स्वराशि	उच्च राशि	नीच राशि
सूर्य—सिंह	मेष	तुला
चन्द्र—कर्क	वृष	वृश्चिक
मंगल—मेष, वृश्चिक	मकर	कर्क
बुध—मिथुन, कन्या	कन्या	मीन
गुरु—धनु मीन	कर्क	मकर
शुक्र—वृष, तुला	मीन	कन्या
शनि—मकर, कुम्भ	तुला	मेष
राहु—कन्या	वृष या मिथुन	धनु
केतु—मीन	वृश्चिक या धनु	मिथुन

कुछ विद्वान राहु की उच्च राशि वृष को मानते हैं और कुछ मिथुन को। इसी प्रकार केतु की उच्च राशि कुछ तो वृश्चिक को मानते हैं और कुछ धनु को। इसलिए हमने दोनों का उल्लेख कर दिया है।

कोई भी ग्रह हो, स्वराशि में प्रवल, उच्च राशि में अति प्रबल तथा नीच राषि में दुर्बल, होता है। मान लीजिए कि किसी लग्न पत्रिका में मंगल मेष राशि अथवा वृश्चिक राशि पर है तो स्वगृही होगा और वह अपने गुणानुसार प्रभाव उत्पन्न करेगा। यदि मंगल मकर राशि के साथ होगा तो उच्च का माना जायगा और कर्क राशि पर होगा तो नीच का समझा जायगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के स्वराशिस्थ या उच्च अथवा नीच राशिस्थ होना समझा जाता है।

ग्रहों का मित्र-शत्रु आदि भाव

अब यह बताया जाता है कि कौनसा ग्रह, किस ग्रह से मित्र-शत्रु अथवा समभाव रखता है—

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम या उदासीन
सूर्य—	चन्द्र, मंगल, गुरु	शुक्र, शनि	बुध
चन्द्र—	बुध, सूर्य	×	मंगल गुरु शु, श,
मंगल—	चन्द्र, गुरु, सूर्य	×	बुध, शु, श,
बुध—	शुक्र, सूर्य	चन्द्र	मंगल, गु, श,
गुरु—	चन्द्र, मंगल सूर्य	बुध शुक्र	शनि
शुक्र—	बुध, शनि	सूर्य; चन्द्र	मंगल, गुरु
शनि—	बुध, शुक्र	सूर्य, चं, मं, गुरु,	

ग्रहों का उदय या अस्त

ग्रह का उदय होना वह है जो आकाश में किसी भी समय दिखाई देता है, किन्तु रात्रि से किसी भी समय दिखाई न दे तो उसे अस्त कहेंगे। उदय और अस्त का सिद्धान्त यह है कि सूर्य के पास पहुँच कर ग्रह दिखाई नहीं देती और उस स्थिति में उसका अस्त|| होना माना जाता है। राहु, केतु उदीयमान ग्रह नहीं है, इसीलिए उनका उदय अस्त नहीं होता।

ग्रहों का वक्री या मार्गी होना

जो ग्रह अपनी गति पर न चल कर उल्टा चले, उसे वक्री कहते हैं तथा अपनी गति पर आगे बढ़ता रहे वह मार्गी कहा जाता है। इस प्रकार वक्री ग्रह निर्बल और मार्गी ग्रह प्रबल होता है। इसमें ध्यान देने की बात है कि सूर्य और चन्द्रमा सदा मार्गी होते हैं, वे कभी उल्टे नहीं चलते। शेष मंगल, बुध, गुरु शुक्र और शनि वक्री भी रहते और मार्गी भी।

कारक ग्रह

कारक ग्रहों के भाव और स्थिर के भेद से दो प्रकार माने जाते हैं। इनका विवरण इस प्रकार है:—

१) भाव कारक ग्रह— प्रथम भाव सूर्य, द्वितीय भाव गुरु, तृतीय भाव मंगल. चतुर्थ भाव चन्द्र और बुध, पंचम भाव गुरु, षष्ठ भाव मंगल और शनि, सप्तम भाव शुक्र, अष्टम भाव शनि, नवम भाव गुरु तथा द्वादश भाव शनि। यह भाव कारक ग्रहों का वर्णन हुआ।

(२) स्थिर कारक ग्रह—आत्मा, आरोग्य, देह, पर्वत, पिता, माणक्य, राज्य. लाल वस्तु तथा स्थिर कारक ग्रह सूर्य हैं।

ईख, कपास, गेहूँ. गन्ध, चांदी, ब्राह्मण, मन, माता, मोती, यात्रा तथा सम्पत्ति आदि का चन्द्रमा है।

अग्नि, क्रोध, खान, पराक्रम, पृथिवी, भाई, मूँगा, राज्य, शत्रु, साहस तथा सेना आदि का मंगल है।

गणित, चिकित्सक, ज्योतिष, नृत्य, पन्ना, मामा, विद्या विवेक व्यवसाय, वाणी तथा शिल्प आदि का बुध है।

अध्यात्म, ज्ञान, देवता, धन, धर्म, पुत्र, पुखराज, ब्राह्मण, मित्र, विवेक, वस्त्र आदि का गुरु है।

कविता, कास, पत्नी, भूषण, मनोरंजन, वैभव, व्यापार, वाहन, हीरा आदि का शुक्र है।

आयु कृषि, कष्ट, तैल, नीलम, नौकर, भूमि, मृत्यु, यात्रा, रोग, शस्त्र तथा शल्प आदि का शनि है।

खोई वस्तु, गोमेद, छिपा. धन, पितामह, मृत्यु, व्यसन, सट्टा सर्प आदि का राहु है।

घाव, त्वचा, दुःख, मातामह, मातामह का परिवार, व्यय तथा लहसुनिया आदि का केतु है।

ग्रहों के निर्माता तत्व

समूचे संसार की रचना पंच महाभूतों से हुई है। ग्रहों के निर्माण में भी उन्हीं का योग है। उन महाभूतों के अंशों को तत्व कहते हैं, जिनका ग्रहों से इस प्रकार सम्बन्ध है—

१. अग्नि तत्व : सूर्य और मंगल ग्रह।

२. जल तत्व : चन्द्रमा और शुक्र ग्रह।

३. पृथिवी तत्व : बुध।

४ आकाश तत्व : गुरु (वृहस्पति)

५. वायु तत्व : शनि।

ग्रहों के लिंग

लिंग ३ माने जाते हैं—पुरुष, स्त्री और नपुंसक। यह लिंग व्यवस्था ग्रहों के साथ भी हैं, जो कि इस प्रकार है—

१. पुरुष लिंग : सूर्य, मंगल और गुरु।

२. स्त्री लिंग : चन्द्रमा और शुक्र।

२. नपुंसक : बुध और शनि। इनमें बुध पुरुष नपुंसक तथा शनि स्त्री-नपुंसक है।

भाव और उनके स्वामी आदि

केन्द्र : १, ४, ७, १० वें घर केन्द्र कहलाते हैं।

पणकर : २, ५, ८, ११ वें घर पणकर कहे जाते हैं।

आपोक्लिम : ३, ६, ९, १२ वें घर आपोक्लम कहे जाते हैं।

जो ग्रह केन्द्र में होते हैं वे शुभ तथा ६, ८, १२, वें स्थान में होते हैं वे अशुभ माने जाते हैं। जिस घर में जो राशि होती है, उसी राशि का स्वामी उस घर का स्वामी समझना चाहिए।

लग्नेश : प्रथम घर का स्वामी लग्नेश होता है।

धनेश : दूसरे घर का स्वामी धनेश या द्वितीयेश कहलाता है।

भ्रातेश : तीसरे घर का स्वामी।

वाहनेश : चौथे घर का स्वामी, इसे सुखेश भी कहते हैं।

सुतेश , पांचवें घर का स्वामी।

रोगेश : छठे घर का स्वामी, इसे षष्ठेप भी कहते हैं।

सप्तमेष : सातवें घर का स्वामी।

अष्टमेश : आठवें घर का स्वामी।

नवमेश : नवें घर का स्वामी, इसे भाग्येश भी कहते हैं।

दशमेश : दसवें घर का स्वामी, इसे कर्मेश भी कहते हैं।

लाभेश : ग्यारहवें घर का स्वामी, इसे व्यापारेश या एकादशेष भी कहते हैं।

व्ययेश : बारहवें घर का स्वामी, इसे द्वादशेश भी कहते हैं।

पचांग अध्ययन विधि

यद्यपि पंचांग अनेक प्रकार के होते हैं, किन्तु उनमें मास, तिथि, सम्वत्. नक्षत्र, योग, दिनमान आदि का वर्णन तो सभी में रहता है। इन सबको इस प्रकार समझिये—

यो (योग) के कोष्ठक में अमृत, सिद्धि, उत्पात, मानस, प्रभृति योगों का वर्णन रहता है। ति' का अर्थ तिथि है, जिसके नीचे प्रत्येक कोष्ठक में १ से १५ तक तिथियाँ रहती हैं। उनके आगे 'घ' (घडी) और 'प' (पल) का कोष्ठक है। उसमें प्रत्येक तिथि के आगे घड़ी-पल सूचक अंक लिखे हैं. जिनका अर्थ है कि जितने अंक लिखे हैं, उतने घड़ी-पल तक वह तिथि (उस दिन सूर्योदय के पश्चात्) रहेगी। 'वा' के नीचे वाले कोष्ठकों में रवि, चन्द्र, मंगल आदि वार लिखे रहते हैं। 'न' नक्षत्र का बोधक है, उसके नीचे के कोष्ठकों में अश्विनी आदि नक्षत्रों का उल्लेख रहता है। 'दिन. मा.' दिनमान का सूचक है तथा 'सू. उ.' (सूर्योदय) और 'सू. अ' का उल्लेख प्रायः घन्टा-मिनट से किया जाता है। (ध्यान रहे घटि २४ मिनट की और ६० पल की १ घटि या घड़ी होती है।)

हमारे हाथ में सं० २०३३ का पंचांग है। उसके भाद्रपद शुक्ल पक्ष

का पृष्ठ सामने खुला है। १ सितम्बर १६७६ की तिथि पर दृष्टि डालते हैं, जो कि इस प्रकार है—

यो. दि. मा. वा. ति. ध प. न. घ. प. सू. उ. सू. अ.
सौम्य ३१।२७ बु ८ ३३।२७ अनु. ११।४६ ५।४३ ६।१७

उक्त अंकन का अभिप्राय स्पष्ट है। सौम्य योग, दिनमान ३१।२७ घटि-पल, बुधवार भाद्रपद शुक्ल पक्ष की ८ वीं तिथि जो कि सूर्योदय होने पर ३३ घटि २७ पल रहेगी, अनुराधा नक्षत्र सूर्योदय से ११ घटि ४६ पल तक रहेगा। सूर्योदय ५ बजकर ४३ मिनट पर और सूर्यास्त ६ बजकर १७ मिनट पर होगा।

अंग्रेजी आदि तारीखों के अंकन के बाद पंचांग में चन्द्रमा का वर्णन किया गया है। उक्त तिथि में पूरे दिन-रात वृश्चिक राशि का चन्द्रमा रहने का सकेत है। उससे आगे के भाग में त्यौहारादि का गर्णन है। उक्त तिथि वाली पंक्ति में 'श्रीराधाष्टमी' लिखा है, जिसका अभिप्राय उस दिन राधाष्टमी होने से है।

अब, यों समझिये कि किसी बालक का जन्म भाद्रपद शुक्ल ८ में दिन के ११ बजकर ५० मिनट पर हुआ है तो वह ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ माना जायगा। क्योंकि उस दिन अनुराधा नक्षत्र सूर्योदय काल से केवल ११ घटि ४६ पल रहा जिसके ४ घन्टे ४३ मिनट ३६ सैकिन्ड होते हैं। इस काल में सूर्योदय काल जोड़ देना चाहिए—

समय	घन्टा	मिनट	सैकिन्ड
सूर्योदय	५	४३	००
अनुराधा नक्षण	४	४३	३६
	१०	२६	३६

इस प्रकार अनुराधा नक्षत्र १० बजकर २६ मिनट ३६ सैकिन्डपर समाप्त हो गया और उसने बाद ज्येष्ठा नक्षत्र आ गया। इस कारण जातक की वृश्चिक राशि बनी। यद्यपि अनुराधा नक्षत्र होता तो भी वृश्चिक राशि ही रहती, क्योंकि वृश्चिक राशि में विशाखा नक्षत्र का १ चरण तथा अनुराधा और ज्येष्ठा के ४-४ चरण होते हैं।

लग्न कुण्डली बनाने के लिए आपको विशेष कुछ नहीं करना है। पंचांग में बांयी और दाँयी ओर एक-एक कुण्डली रहती है। बाँयी ओर की कुण्डली अष्टमी तिथि की और दाँयी कुण्डली अमावास या पूर्णिमा की होती हैं।

जिस जातक का जन्म उक्त भाद्रपद शुक्ल ८ में हुआ, उनकी लग्न कुण्डली निम्न होगी—
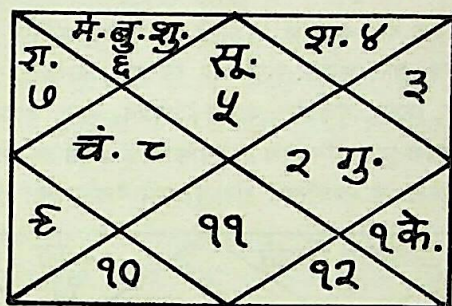
उक्त लग्न कुण्डली पचांग से ली गई है। जब-जब ग्रह अपने भाव या राशि को बदलते हैं, तब-तब ही उनका भाव परिवर्तन होता रहता है। पंचांग में हमने देखा कि श्रावण शुक्ल १५ की लग्न कुण्डली में सूर्य कर्क राशि (४) पर था, जबकि भाद्रपद कृष्ण ८ के लग्न भाव में सूर्य सिंह राशि पर आ गया। यहाँ यह समझ लेना चाहिए कि भाद्रपद कृष्ण ६ में सिंहऽर्क' लिख कर पंचांग ने सूर्य का कर्क राशि से कुम्भ राशि पर आना स्पष्ट किया है तभी से सूर्य पांचवें भाव में चल रहा है।

इसी प्रकार भाद्रपद कृष्ण ४ में 'कन्यायां भौम:" तथा भाद्रपद कृ. ६ में 'कन्यायां बुध:' और भाद्रपथ शु २ में 'कन्यायां शुक्र' लिखने से यह स्पष्ट हो गया कि कन्या राशि पर पहिले मंगल, फिर बुध और उसके बाद शुक्र भी आ बैठा।

लग्न से तीसरे भाव (तुला राशि)पर राहु तो इस पंचांग में आरम्भ से ही स्थित है। चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर भाद्र शु. ७ से ही आया है।

मेष पर केतु भी पचांग आरम्भ से दिखाई देता है। वृषभ राशि पर गुरु का बैठना भी आषाढ़ शु १२ से चला आ रहा है। कर्क राशि पर शनि का होना भी बहुत समय से है। इस प्रकार उक्त कुण्डली पूर्ण लग्न कुण्डली बन जाती है।

लग्न कुण्डली के १२ भावों का प्रभाव

यह अनेक बार कहा जा चुका है कि लग्न कुण्डली में १२ भाव होते हैं। यह भाव (घर) क्रमशः मनुष्य के स्वास्थ्य, आर्थिक, स्थिति, भ्रातृ सुख, वाहन, शिक्षा, मुकदमा, दाम्पत्य जीवन, आयु, भाग्य, आय, व्यय आदि का पृथक-पृथक, विवरण प्रस्तुत करते हैं। इस तथ्य को प्रकट करने के लिए यहाँ उससे सम्बन्धित एक कुन्डली देना उचित होगा—

आर्थिक स्थिति २
१ स्वास्थ्य व्यापार
व्यय १२
आय ११
भ्रातृ सुख ३ यात्रा
घर, वाहन ४ मातृ सुख
पितृ सुख १० राजयोग
शिक्षा ५ सन्तान
७ दाम्पत्य जीवन
धन ६ भाग्य
६ मुकदमा, रोग
८ आयु

अभिप्राय यह है कि प्रथम भाव या घर में (जहाँ नम्बर १ लिखा है) उस भाव का अध्ययल करते समय जातक के शारीरिक स्वास्थ्य एवं व्यापार के विषय में ज्ञान प्राप्त होना प्रमुख है। अर्थात् नम्बर १० वाले घर में जो राशि या ग्रह हैं, उनके स्वभावानुसार स्वास्थ्य सम्बन्धी निर्णय लेना चाहिए। उदाहरणार्थ यदि प्रथम भाव का कारण सूर्य बलवान हो

तो स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। साथ ही उसमें राशि भी शुरू होनी चाहिए। तथा उसे कोई अशुभ ग्रह न देखता हो।

लग्न भाव या प्रथम भाव में जो शुभ ग्रह स्थिति हो अथवा जो शुभ ग्रह लग्न भाव को देखता हो, उस ग्रह से सम्बन्धित व्यापार करने पर अधिक सफलता प्राप्त हो सकती है। प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित व्यापार निम्न वर्णनानुसार हो सकले हैं—

सूर्य : कृषि, अनाज, फल, तृण, वनौषधि, रुई, कागज, वस्त्र आदि।

चन्द्र : जल या जल से बने पदार्थ (शर्बत, अर्क प्रभृति पदार्थ) खगन्धित द्रव्य, त्रिफला से सम्बन्धित कार्य, फिल्म, नाटक, कांच की वस्तुएं, कलात्मक, वस्तुएं आदि।

मंगल : बिजली, फोन आदि के समान का व्यापार या इन विभागों से सम्बन्धित नौकरी, कोयला, सीमेंट, नमक, रंग, औषधि, किराना, तम्बाकू, औषधियाँ, खनिज तेल, चिकित्सा आदि तथा ओवरसियर, इंजिनियर, वकील आदि।

बुध : दूध, दही, खोआ, घी, मिठाई, कन्फेक्शनरी, गणित ज्योतिष लेन-देन, मुनीमी, एकाउन्टेंटी आदि।

गुरु : दूध, दही, घृत, खोआ, वसा, मांस तथा पशु-विक्रय आयात-निर्यात, कमीशन एजेंट तथा बुद्धिजीवी, यथा लेखक, सम्पादक, अध्यापक लिपिक आदि।

शुक्र : कलात्मक वस्तुएं, सिनेमा, संगीत सजावट, विलासिता, तेल, अभिनय, चित्रकारी, अध्यापन, क्लर्की आदि।

शनि : लोहा, स्टील; मशीनरी आदि का व्यापार या तत्सबन्धी (इंजीनियर आदि) तथा ठेका, बीमा या लाटरी से सम्बन्धित कार्य।

इस प्रकार ग्रह से सम्बन्धित व्यापार करने वाले जातक को उसमें पर्याप्त लाभ मिलने के अवसर रहते हैं।

दूसरे भाव या घर में जातक की आर्थिक स्थिति तथा उसके सम्बद्ध पारिवारिक सुख का अध्ययन प्रमुख रूप से किया जायगा। उदाहरणार्थ

किसी शुभ ग्रह या शुभ ग्रह की राशि हो अथवा कोई अशुभ ग्रह उस भाव को देखता न हो अथवा कुन्डली में द्वितीयेश की स्थिति बलवान हो अथवा दूसरे भाव का कारक गुरु कारक भाव में, केन्द्र त्रिकोण में तथा शुभ ग्रह या उच्च ग्रह उसे देखता हो तो इससे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने और पारिवारिक सुख की उपलब्ध रहने की स्थिति बनती है।

तीसरे भाव में भाई से सम्बन्धित सुख तथा देश-विदेश की यात्रा के विषय में ज्ञान होता है। यदि वहाँ गुरु की शुभ राशि, केन्द्र में तृतीयेश गुरु तथा उच्च का अथवा तीसरे भाव पर गुरु की नवीं दृष्टि हो तथा तीसरे भाव का कारक ग्रह मंगल छठे भाव (अपने कारक घर) में बैठा हो तो उसके भातृ-सुख की प्राप्ति होनी चाहिये।

यदि तीसरे भाव को मंगल देखता हो और उसका (मंगल) का सम्बन्ध लग्न भाव से भी हो, जो कि लग्नेश गुरु व मंगल की युति होने से होता है तथा नवां भाव और नवमेश भी बलवान हो तो उससे देश में सुदूरस्थ यात्रा अथवा विदेश यात्रा का योग बनेगा।

चौथे भाव में भवन, वाहन, मातृ सुख तथा मानसिक शान्ति आदि विषयों पर विचार किया जाता है। यदि उसमें शुक्र से सम्बन्धित राशि (वृषभ या तुला) तथा उच्च का चतुर्थेश त्रिकोण में स्थित हो, चौथे भाव का कारक चन्द्रमा प्रबल भाव में स्वगृही हो, इस कारण उस भाव में भी प्रबलता हो तथा उच्च का शुक्र (वाहन-कारण) त्रिकोण में हो तो जातक भवनों और वाहनों का स्वामी होना चाहिए।

यदि चौथे भाव में गुरु स्वग्रही हो तथा चन्द्रमा (मातृ-कारक) केन्द्र (लग्न भाव) में बैठा हो और चौथे भाव, चतुर्थेश एव चन्द्रमा को शनि न देखता हो तो जातक को माता का अत्यधिक सुख मिलना चाहिए। अर्थात् ऐसे जातक की माता लम्बे समय तक जीवित रहकर जातक के हित-साधन में लगी रहती है।

यदि चौथे भाव में गुरु स्वगृही हो और मन का कारक चन्द्रमा प्रबल लग्न भाव में बैठा हो तथा चौथे भाव. चतुर्थेश व चन्द्रमा से शनि

का सम्बन्ध न हो जातक को सब प्रकार से मानसिक शान्ति मिलनी चाहिए। यह योग मित्र-सुख तथा साझेदारी के विषय में भी उत्तर है।

पाँचवें भाव में शिक्षा,सन्तान, सहसा धन-प्राप्ति आदि के योगों पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। यदि उसमें कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा कोई शुभ ग्रह उसे (पाँचवें भाव को) देखता हो तथा पंचमेश केन्द्र, त्रिकोण या उच्च का हो एवं छठे, आठवें या बाहरवें भाव में न हो और शिक्षा का कारक प्रबल स्थिति में हो तथा लग्न भाव में भी प्रबलता हो तो ऐसा जातक उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

यदि पंचम भाव में गुरु राशि का हो तथा केन्द्र में पंचमेश एवं सन्तान कारक गुरु हो, साथ ही पांचवें भाव को मंगल (पुरुष ग्रह) देखता हो तो जातक को अति सन्तान योग प्राप्त होगा।

यदि गुरु पाँचवें भाव में हो, पंचमेश मंगल दूसरे भाव (धन-भाव) में हो, पंचमेश मंगल की चौथी दृष्टि हो, द्वितीयेश सूर्य केन्द्र में हो तथा गुरु ग्यारहवें भाव को देखता हो, भाग्य के घर में ग्यारहवें भाव का स्वामी शुक्र उच्च हो और गुरु या मंगल से देखा जाता हो तो उसे आकस्मिक रूप से अधिक धन की प्राप्ति होनी चाहिए।

छठे भाव में मुकदमा तथा रोग आदि पर विचार किया जाता है। यदि छठे भाव और प्रथम भाव में मंगल की राशियाँ (मेष, वृश्चिक) हों और प्रथम भाव (लग्न भाव) पर मंगल की सातवीं दृष्टि हो तो मुकदमे में जीत का योग बनता है।

यदि छठे भाव का अधिपति बुध शनि की राशि (मकर) में बैठा हो तथा छठे भाव पर शनि की दसवीं दृष्टि हो या लग्न भाव को शनि तीसरी दृष्टि से देखता हो तो वात-व्याधि की आशंका हो सकती है। इसी प्रकार अन्य रोगों के विषय में देखो।

सातवें भाव में दाम्पत्य जीवन का अध्ययन किया जाता है। यदि चन्द्रमा शुभ राशि के साथ सातवें भाव में हो तथा त्रिकोण में उच्च का

सप्तमेश चन्द्र हो एवं सातवें भाव का कारक शुक्र केन्द्र में स्थित हो और गुरु के द्वारा देखा जा रहा हो तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी होना चाहिए।

आठवें भाव में आयु विषयक अध्ययन प्रमुख रूप से करना चाहिए यदि आठवें भाव तथा आयु का कारक ग्रह शनि बलवान है तो जातक दीर्घजीवी होगा। यदि प्रथम भाव में चन्द्रमा की शुभ राशि और शुक्र स्थित हो तथा मंगल उसे देखता हो, लग्नेश चन्द्रमा केन्द्र में तथा अष्टमेश और आयु-कारक शनि बल के भाव में बैठा हो तो यह योग दीर्घजीवी होने का है।

नवें भाव में धन एवं भाग्योदय के विषय में प्रमुख अध्ययन किया जाता है। यदि उसमें गुरु की शुभ राशि और उच्च का सूर्य है; गुरु उसे शुभ दृष्टि से देखता है, त्रिकोण में नवमेश गुरु है तथा नवें भाव और नवमेश को मंगल देखता है या प्रथम भाव पर गुरु की दृष्टि है तो जातक को धन की प्राप्ति तथा भाग्योदय का अच्छा योग बनेगा।

दसवें भाव में पितृ-सुख तथा राजयोग का विशेष रूप से अध्ययन करते हैं। यदि उसमें गुरु की शुभ राशि हो और दशमेश गुरु केन्द्र में हो तथा पिता का कारक सूर्य बलवान एवं स्वगृही हो और शनि का दसवें भाव, दशमेश तथा सूर्य से सम्पर्क न हो तो पिता का अच्छा सुख मिलना चाहिए।

यदि दसवें भाव में शुभ ग्रह की राशि हो या कोई शुभ ग्रह उसमें बैठा हो उसमें दशमेश बुध उच्च का हो, दसवें भाव का कारक सूर्य दसवें भाव में हो, गुरु अपनी शुभ दृष्टि से प्रथम भाव को देखता हो तथा दसवें भाव में दशमेश बुध और नवमेश सूर्य की युति हो तो राजयोग की प्रबलता समझी जा सकती है।

ग्यारहवें भाव में आय का अध्ययन प्रमुख विषय है। यदि उसमें उच्च राशिस्थ बुध हो तथा कारक गुरु त्रिकोण में हो गुरु लग्न भाव

को पांचवी दृष्टि से देखता हो, केन्द्र में स्थित लग्नेश लग्न भाव को देखता हो तो इससे अच्छी खासी आय की अभिव्यक्ति होती है।

बारहवें भाव में व्यय को विशेष रूप से देखते हैं। यदि उसमें चन्द्रमा की शुभ राशि हो, त्रिकोण में द्वादशेष चन्द्र हो तथा मगल ग्याहरवें और पहले भावों को देखता हो तो जातक को निरर्थक हानि, अपव्यय या आय से अधिक व्यय का अवसर नहीं रहेगा तथा ऋण हुआ तो उससे भी छुटकारा मिल सकता है। ★

महादशाओं का वर्णन

कुण्डली आदि का अध्ययन करते समय महादशाओं पर भी ध्यान दिया जाता है। यद्यपि महादशायें अनेक हैं, किन्तु उनमें कुछ प्रमुख महादशाओं पर विचार करने से कार्य चल सकता है। कुछ का वर्णन यहाँ किया जा रहा है—

1. विंशोत्तरी दशा।
2. अष्टोत्तरी महादशा।
३. योगिनी महादशा।
४. नैसर्गिक महादशा।
५. लग्नान्तर्गत दशा।

इनका वर्णन इस प्रकार है—

विंशत्तरी महादशा

इस महादशा का आरम्भ जातक के जन्म-नक्षत्र के आधार पर समझा जाता है। इसका फल-निर्देश मनुष्य की १२० वर्ष की आयु मानकर जन्म नक्षत्र के आधार पर नवग्रहों का दशा-काल निश्चित करते हैं, जो कि इस प्रकार है—

१. सूर्य महादशा ६ वर्ष
२. चन्द्र महादशा १० वर्ष
३. मङ्गल महादशा ७ वर्ष
४. राहु महादशा १८ वर्ष
५. गुरु महादशा १६ वर्ष
६. शनि महादशा १९ वर्ष
७. बुध महादशा १७ वर्ष
८. केतु महादशा ७ वर्ष
९. शुक्र महादशा २० वर्ष

सम्बन्धित नक्षत्रों का वर्णन

१. सूर्य : कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़,
२. चन्द्र : रोहिणी, हस्त, श्रवण ।
३. मङ्गल : मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा ।
४. राहु : आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा ।
५. गुरु : पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वभाद्रपदा ।
६. शनि : पुष्य, अनुराधा, उत्तरा भाद्रपद ।
७. बुध : आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती ।
८. केतु : मघा, मूल, अश्विनी ।
९. शुक्र : पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी ।

विंशोत्तरी महादशा का ज्ञान

कृतिका नक्षत्र से जातक के जन्म नक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या उपलब्ध हो उसमें ९ का भाग दें, जो फल आये उसे इस प्रकार समझें यदि १ हो तो सूर्य, २ हो तो चन्द्र, ३ हो तो मङ्गल, ४ हो तो राहु, ५ हो तो गुरु, ६ हो तो शनि, ७ हो तो बुध, ८ हो तो केतु तथा ९ हो तो शुक्र की महादशा बनेगी ।

इसे स्पष्ट समझने के लिए यह मानिये की यदि जातक का जन्म

नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी है तथा कृत्तिका से पूर्वा फाल्गुनी तक ९ को गिनती हुई। यदि ९ में ९ का भाग दें तो लब्धांक १ आया इसका अभिप्राय हुआ कि प्रथम दशा केतु की हुई, उसके पश्चात् क्रमशः अन्य दशायें होंगी। इन दशाओं के फल विषयक सामान्य निर्देश इस आधार पर हो सकते हैं—

शुभ फल : स्वराशिस्थ, उच्चस्थ, स्वमूल त्रिकोणस्थ, केन्द्रस्थ तथा अपने षड्वर्गों में स्थित ग्रह, जो सूर्य के सान्निध्य से अस्त न हो तथा किसी पाप ग्रह से देखे न जा रहे हों, वे स्वदशा, एवं अन्तर्दशा में शुभ फलदायक होते हैं।

यदि लग्न कुण्डली में शुभ ग्रहों की स्थिति तीसरे, छठे या ग्यारहवें भाव में हो तो जातक को बाल्यावस्था में सुख देने वाले होते हैं।

यदि लग्न कुण्डली के तीसरे,छठे या ग्यारहवें भाव में पाप ग्रहों की स्थिति हो तो उनके कारण जातक को अधिक आयु में धन, सन्तान, पत्नी आदि की प्राप्ति होती है।

यदि गुरु लग्न में अथवा तीसरे, दसवें ग्याहरवें भाव बैठा हो अथवा उच्च राशि में हो तो वह दशा में जातक के लिए सौभाग्य एवं उत्कर्ष का कारण होता है।

आरोहिणी दशा में सब प्रकार के शुभ फल देने वाली है। अपनी नीच राशि से आगे की ६ राशियों तक के सभी ग्रहों की दशा अबरोहिणी कहलाती है।

अशुभ फल : अवरोहिणी दशा अशुभ फल देने वाली है। अपनी उच्च राशि से अगली ६ राशियों तक स्थित ग्रहों की दशा को अवरोहिणी कहते हैं।

मिश्रफल : यदि उच्चस्थ, स्वराशिस्थ या मित्रराशिस्थ रहकर नीच या नीच के नवांश में स्थित हों तो वे ग्रह शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के मिले-जुले फल देते हैं। यदि अपने मित्र के नवांश में हों अथवा शत्रु राशि में हों तो भी मिश्रफल देंगे।

अष्टोत्तरी महादशा

इसमें जातक की १०८ वर्ष की पूर्ण आयु मान कर जन्म नक्षत्र के आधार पर ही फल-निर्देश किया जाता है। इसमें नवग्रह में से केतु को छोड़ कर केवल ७ ग्रहों को ही अध्ययनार्थ लिया जाता है। इसका प्रचलन उत्तर भारत में बहुत कम है। गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु आदि प्रदेशों में इस दशा को अधिक मान्यता दी जाती है।

योगिनी महादशा

इसका योग काल ३५ वर्ष माना जाता है। जातक के जन्म से ३६ वर्ष की आयु तक इसका फल निर्देश करते हैं। कुछ विद्वानों के मत में यह दशायें प्रत्येक ३६ वर्ष में पुनरावृत्ति को प्राप्त होती रहती हैं। कुछ के मत में यह दशायें ३६ वर्ष की आयु के पश्चात् निरर्थक होती हैं। इसमें ८ योगनियों के नाम पर ८ दशाएँ उल्लिखित हैं।

लग्न-दशा

ज्योतिष शास्त्रों में अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। यदि उन सब पर विचार करने बैठें तो बहुत बड़ा ग्रन्थ बन जायेगा। इसलिए संक्षेप में लिखना होगा।

सूर्य, चन्द्र या लग्न में जो अधिक बलवान हो पहिले उस पर ध्यान दें। फिर केन्द्रस्थ ग्रह, पठाक्षरस्थ ग्रह, तथा दशा स्वामी से आपोक्लिम में हो किसी दशा पर ध्यान दिया जाय।

ध्यान रहे कि यदि एक स्थान में अनेक ग्रह है तो जिसका सर्वाधिक बल हो उस पर और फिर क्रमशः कम बल होते हुये ग्रहों पर विचार करना चाहिए।

यदि अनेक ग्रह समान बल वाले हों तो उस स्थिति में जो पहले उदय हुआ हो उस पर और फिर क्रमशः जो-जो वाद में उचित हुए हों, उन-उन पर विचार आवश्यक होता है।

केन्द्रस्थ ग्रह दशा के पूर्व भाव में, पणफर वाला मध्य भाग में तथा

आपोक्लिम अन्तिम भाग में फल देता है। यदि पणफर में कोई ग्रह न हो तो आपोक्लिम वाला और आपोक्लिम में भी न हो तो केन्द्रस्थ ग्रह पहिले फल देगा। यदि सभी ग्रह केन्द्र में होंगे तो सभी अवस्थाओं में फल देने वाले होंगे।

नैसर्गिक दशा

जातक के जन्मकाल से ही नैसर्गिक दशाओं का आरम्भ हो जाता है। इस दशा में सूर्यादि ७ ग्रहों को ही स्थान दिया गया है। राहु-केतु को नहीं। यह दशाएँ १२० वर्ष की आयु तक क्रमशः निम्न प्रकार चलती हैं—

१. चन्द्र दशा—जन्म दिन से १ वर्ष की आयु तक।

२. मंगल दशा—१ से ३ वर्ष की आयु तक।

३. बुध दशा—३ से १२ वर्ष की आयु तक।

४. शुक्र दशा—१२ से ३२ वर्ष की आयु टक।

५ गुरु दशा—३२ से ५० वर्ष की आयु तक।

६. सूर्य दशा—५० ले ७० वर्ष की आयु तक।

७. शनि दशा—७० से १२० वर्ष की आयु तक।

शुभाशुभ फल—उक्त दशाओं में जो ग्रह प्रबल होगा, वह शुभ फल देगा। जो ग्रह हीन बल होगा उसकी दशा का फल अशुभ होगा। सामान्य बल वाले ग्रह का फल भी सामान्य रहेगा।

अन्तर्दशाएँ

महादशाओं में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशाओं का भोग-काल निम्न प्रकार माना जाता है—

सूय महादशा—इसमें सूर्य की अन्तर्दशा ३ मास १८ दिन, चन्द्रमा की ६ मास, मंगल की ४ मास ६ दिन, राहु की १० मास २४ दिन, गुरु की ९ मास १८ दिन, शनि की ११ मास १२ दिन की १० मास ६ दिन, केतु की ४ मास ६ दिन और शुक्र की एक वर्ष की होती

है। इस प्रकार सूर्य की महादशा अपना ६ वर्ष का समय पूरा करता है।

चन्द्र महादशा : इसमें चन्द्रमा की अन्तर्दशा १० मास, मंगल की ७ मास, राहु की डेढ़ वर्ष, गुरु की १ वर्ष ४ मास, शनि की १ वर्ष ७ मास, बुध की १ वर्ष ५ मास, केतु की ७ मास, शुक्र की १ वर्ष ८ मास तथा सूर्य की ६ मास की होती है। इस प्रकार चन्द्रमा की महा- दशा अपना १० वर्ष का भोग काल पूर्ण करती है।

मंगल महादशा : मंगल की अन्तर्दशा ४ मास २७ दिन, राहु की १८ दिन, गुरु की ११ मास ६ दिन, शनि की १ वर्ष १ मास ६ दिन, बुध की ११ मास २७ दिन, केतु की ४ मास २७ दिन, शुक्र की १ मास २ दिन, सूर्य की ४ मास ६ दिन और चन्द्र की ७ मास होती है। इस प्रकार मंगल महादशा का ७ वर्ष का भोग काल पूर्ण होता है।

राहु महादशा : राहु की अन्तर्दशा २ वर्ष ८ मास १२ दिन, गुरु की २ वर्ष ४ मास २४ दिन, शनि की २ वर्ष १० मास ६ दिन, बुध की २ वर्ष ६ मास १८ दिन, केतु की एक वर्ष १८ दिन शुक्र की ३ वर्ष सूर्य की १० मास २४ दिन, चन्द्रमा की डेढ़ वर्ष तथा मंगल की १ वर्ष १८ दिन रहती है। इस प्रकार राहु महादशा का १८ वर्ष का भोग काल पूर्ण होता है।

गुरु महादशा : गुरु अन्तर्दशा २ वर्ष १ मास १८ दिन, शनि २ वर्ष ६ मास १२ दिन, बुध २ वर्ष ३ मास ६ दिन, केतु ११ मास ६ दिन, शुक्र २ वर्ष ८ मास, सूर्य ९ मास १८ दिन, चन्द्र १ वर्ष ४ मास, मंगल ११ मास ६ दिन तथा राहु २ वर्ष ४ मास २४ दिन की होती है। इस प्रकार गुरु महादशा अपना १६ वर्ष का भोगकाल पूरा करती है।

शनि महादशा : इसमें शनि की अन्तर्दशा ३ वर्ष ३ दिन, बुध की २ वर्ष ८ मास ९ दिन, केतु की १ वर्ष १ मास ९ दिन, शुक्र की ३ वर्ष २ मास, सूर्य की ११ मास १२ दिन, चन्द्रमा की १ वर्ष ७ मास, मंगल की १ वर्ष १ मास ९ दिन, राहु की २ वर्ष १० मास ६ दिन तथा गुरु

की २ वर्ष ६ मास १२ दिन की होती हैं। इस प्रकार शनि महादशा अपने १६ वर्ष का समय पूर्ण करती है।

बुध महादशा : इसमें बुध की अन्यदंशा २ वर्ष ४ मास २७ दिन की होती है। केतु को ११ मास २७ दिन, शुक्र की २ वष १० मास, सूर्य की १० मास ६ दिन, चन्द्रमा की १ वर्ष ५ मास, मंगल की ११ मास २७ दिन, राहु की २ वर्ष ६ मास १८ दिन, गुरु की २ वर्ष ३ मास ६ दिन तथा शनि की २ वर्ष ८ मास ६ दिन की होती है। इस प्रकार बुध की महादशा अपना १७ वर्ष का भोग-काल पूरा करती है।

केतु महादशा : इसमें केतु की अन्तर्दशा ४ मास २७ दिक तक रहती है. फिर शुक्र की अन्तर्दशा १ वर्ष २ मास तक होती है। तदनन्तर सूर्य की अन्तर्दशा ४ मास ६ दिन, चन्द्रमा की ७ मास, मंगल की ४ मास २७ दिन, राहु की १ वर्ष १८ दिन, गुरु की ११ मास ६ दिन, शनि की १ वर्ष १ मास ९ दिन तथा बुध की ११ मास २७ दिन की होती है। इस प्रकार केतु महादशा अपना ७ वर्ष का भोग-काल पूरा करती है।

शुक्र महादशा : इसमें शुक्र की अन्तर्दशा ३ वर्ष ४ मास, सूर्य की एक वर्ष, चन्द्रमा की १ वर्ष, मंगल की १ वर्ष २ मास, राहु की ३ वर्ष, गुरु की २ वर्ष ८ मास, शनि की ३ वर्ष २ मास, बुध की २ वर्ष १० मास तथा केतु की १ वर्ष २ मास की होती है। इस प्रकार शुक महादशा अपना २० वर्ष का भोगकाल पूर्ण करती है।

केन्द्रादि भाव-विचार

केन्द्र : पहला, चौथा, सातवां और दसवां भाव केन्द्र कहलाता है।

त्रिकोण : पांचवा भाव (सन्तति भाव) और नवाँ भाव (भाग्य-भाव) त्रिकोण कहा जाता है।

पणफर : दूसरे, पांचवें, आठवें और ग्यारहवें भावों को पणफर कहते हैं।

आपोक्लिम—तीसरे, छठे, नवें और ग्यारहवें भाव को आपोक्लिम कहा गया है।

त्रिक—छठें, आठवें और बारहवें भाव त्रिक (दुःस्थान) कहे जाते हैं।

मारक—दूसरे और सातवें भाव मारक स्थान कहे जाते हैं।

उपचय—तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें भाव उपचय कहलाते हैं।

अनुपचय—उपचय वाले भावों से अन्य भाव अनुपचय कहे जाते हैं।

ग्रहों के दशान्तर्गत स्वभाव

शुभ फल—

(१) बुध की दशा में सूर्य हो तो सात्विक फल देता है।

(२) चन्द्रमा भी बुध की दशा में या सूर्य की दशा में हो तो सात्विक फल देने वाला होता है।

(३) जब बुध अपनी, चन्द्रमा की अथवा गुरु की दशा में होता है तब सात्विक फल देता है।

(४) चन्द्रमा या गुरु की दशा में सूर्य हो तो राजसिक फल प्रदान करता है।

(५) यदि चन्द्रमा स्वदशा या गुरु की दशा में हो वह भी शुभ फल देगा। गुरु की दशा में सामान्य फल भी दे सकता हैं।

(६) जब मगल, सूर्य, बुध अथवा राहु की दशा में होता है तब राजसिक स्वभाव का होकर शुभ फल प्रदान करता है।

(७) शुक्र की दशा में बुध हो तो वह राजसी स्वभाव के फल देता है।

(८) सूर्य यदि मगल, शनि, राहु या केतु की दशा में हो तो तामसिक स्वभाव होकर अशुभ फल देगा।

(९) चन्द्रमा भी मंगल, राहु, केतु की दशा में पहुँच कर तामसी स्वभाव का अशुभ फल देता है।

(१०) बुध और गुरु भी मंगल, शनि, राहु, केतु की दशा में होकर तामसी स्वभाव के हो जाते तथा अशुभ फल देते हैं।

राज-पद या राज-सम्मान देने वाली दशायें

यदि निम्न दशायें या अन्तर्दशायें हों तो राजपद या राजसम्मान आदि की प्राप्ति होती है। राजपद में मन्त्री, मुख्य मंत्री, उपमंत्री, प्रधान-मन्त्री, राज्यपाल या राष्ट्राध्यक्ष आदि आते हैं। राज सम्मान में राज्य द्वारा पुरस्कार, उपाधि आदि आती है।

—यदि चतुर्थेश से युक्त दशमेश की दशा हो।

—यदि पंचमेश से युक्त नवमेश या दशमेश की दशा हो।

—पंचमेश से युक्त लग्नेश की दशा।

—नवमेश से युक्त लग्नेश की दशा।

—नवमेश से युक्त चतुर्थेश की दशा या अन्तर्दशा।

—नवमेश से युक्त पंचमेश की दशा।

—नवम भाव स्थित दशमेश की दशा।

—पंचमेश से युक्त किसी ग्रह की दशा।

—दशमेश से युक्त किसी ग्रह की दशा।

राजयोग में बाधा कारक योग

राजयोग पर विचार करते समय इन योगों पर भी विचार करें। यह योग राजयोग में बाधा स्वरूप होते हैं।

—यदि नीच राशि में दो से अधिक ग्रह हों तो राजयोग में बाधा उपस्थित होती है।

—यदि लग्न तथा चन्द्रमा पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो राज-योग विफल रहता है।

—यदि जन्म के समय केतु का उदय हो।

—यदि जन्म के समय उल्कापात हो।

—यदि गुरु मकर लग्न में ५ अंश पर हो।

—यदि सूर्य तुला में १० अंश पर हो।

—यदि जन्म के समय शुक्र, कन्या के २७ वें अंश (अत्यन्त नीच) में हो तो राजयोग नष्ट हो जाता है।

—यदि सभी शुभ ग्रह नीच राशि में हों, बारहवें भाव में या शत्रु के स्थान में हों तो राजयोग में बाधक हैं।

—यदि लग्नस्थ राहु को चन्द्रमा देखता हो तथा सूर्य, मंगल, शनि तीसरे भाव में हों और केन्द्र में शुभ ग्रह का अभाव हो था शुभग्रह अस्त हो तो राजयोग नहीं रहता।

—यदि जन्मकाल में कोई ग्रह नीच हो और दसवें घर में पापग्रह हो तो राजयोग नहीं रहता।

यदि जन्म काल में कुम्भ लग्न हो, नीच में ३ ग्रह हों तथा गुरु अस्त हो तो भी राजयोग नष्ट हो जाता है।

सुखदायक योग

—लग्नेश स्वक्षेत्री या उच्चस्थ हो तो सुखदायक है।

—लग्नेश शुभ ग्रहों से युक्त हो तो भी सुख देता है।

—लग्न में शुभ ग्रह और लग्न के शुभ ग्रह देखते हों तो सुखदायक योग है। यदि शुभ ग्रह चौथे भाव को देखते हों तो अधिक सुख देने वाला होगा।

—चौथे भाव में शुभ ग्रह अथवा शुभ ग्रह की राशि हो तो भी सुख प्राप्त होता है।

—यदि चतुर्थेश को गुरु देखे तो भी सुख की प्राप्ति होगी।

—यदि चतुर्थेश प्रबल गुरु से युक्त हो तो भी जातक को सुख प्राप्त होता है।

—यदि शुभ ग्रह से चक्र चतुर्थेश लग्न भाव या चौथे भाव में हो तो सुख प्रदायक होगा।

—यदि चतुर्थेश शुभ ग्रह से युक्त होकर पाँचवें, सातवें, नवें या दसवें भाव में हो तो सुख प्राप्त होता है।

—यदि चतुर्थेश शुभ ग्रहों के बीच हो तो जातक सुख प्राप्त करता है

—यदि चतुर्थेश किसी शुभ ग्रह की राशि के नवें अंश में हो और उसकी स्थिति दूसरे, तीसरे, छठे, दसवें या ग्यारहवें भाव में हो तो सुख देने वाला होता है।

—यदि स्वराशि के पाँच ग्रह हों तो यह योग अत्यन्त सुख देने वाला होगा।

—यदि चारों केन्द्र ग्रहों से युक्त हों तो स्थायी सुख की प्राप्ति होनी चाहिये।

—यदि केन्द्र में जन्म राशि का गुरु हो तो यह योग भी स्थिर सुख प्राप्ति कराता है।

—यदि गुरु जन्म राशि का हो तो यह भी अत्यन्त शुभ है तथा इससे स्थिर सुख प्राप्त होता है।

—यदि लग्न भाव में गुरु और दशम भाव में चन्द्रमा हो तो यह योग अत्यन्त सुखदायक है।

—यदि लग्न से चौथे भाव तक सभी ग्रह स्थित हों तो यह केन्द्र बाहु योग, सुख सौभाग्य, धन, सन्तान की वृद्धि करता है।

—यदि चन्द्रमा और शुक्र मीन राशि पर, गुरु कर्क राशि पर तथा तीसरे और ग्यारहवें भाव में पापग्रह हों तो यह जातक को सुखी, सौभाग्य-शाली, गुणी बनाने वाला 'श्रीनन्द' योग कहलाता है।

—यदि चौथे, पांचवें, नवें, ग्यारहवें और बारहवें भावों में ही सब ग्रह स्थित हों तो यह योग जातक को धनवान, विद्वान और यशस्वी बनता है।

—यदि लग्न में चन्द्रमा और केन्द्र में शेष शुभ ग्रह हों तो इसके

कारण जातक अत्यन्त पराक्रमी, शत्रु विजेता होता है। यह योग मुक- दमे में विजय प्राप्त कराने वाला है।

—यदि लग्नेश और चतुर्थेश प्रबल होकर चौथे भाव में या केन्द्र में स्थित हों तो यह योग जातक को धनवान, यशवान तथा सर्व सुख सम्पन्न बनाता है।

—रात्रि में जन्म हुआ हो और शुक्र चन्द्रमा को ईखता हो तो जातक को धनवान और सुखी बनाता है।

—यदि दिन में उत्पन्न हुए जातक की लग्न कुण्डली में चन्द्रमा अपने अथवा अपने अधिमात्र के नवांश में हो तथा उस पर गुरु की दृष्टि हो तो यह भी धनवान और सुखी बनाने वाला योग है।

—यदि लग्न राशि से पाँचवीं राशि मिथुन या कन्या हो औ ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा और मंगल हों तो यह 'श्री' योग जातक को अत्यन्त धनी बनाता है।

—लग्न से पाँचवीं राशि मकर या कुम्भ हो तथा मंगल से शुक्र ग्यारहवें भाव में हो तो यह योग भी जातक को सदैव धनादि सुखाद बनाये रहता है।

—यदि दूसरे भाव से प्रारम्भ होकर एक-एक घर को बीच-बी में छोड़कर ६ घरों में सब ग्रह बैठ गये हों तो यह योग अत्यन्त सौभ सूचक है। ऐसा जातक धनवान ऐश्वर्यवान्,यशवान,पुत्रवान्,राज्यमा दयावान तथा दानी और परोपकारी होता है।

राशि योग या सामान्य योग

—यदि सूर्य से बारहवें स्थान में मंगल हो तो जातक को पर कारी बनाता है किन्तु ऐसा जातक अपनी माता का द्वेषी होगा।

—यदि सूर्य से बारहवें स्थान में बुध हो तो विनम्र और क स्वभाव का होता है। किन्तु यह योग धनाभाग और निन्दाप्रद भी

—यदि सूर्य से बारहवें स्थान में गुरु है तो यह धन-संचय प्रवृत्ति उत्पन्न करेगा।

—यदि सूर्य से बारहवें स्थान में शुक्र हो तो जातक को आलसी, कायर, पराधीन बनायेगा।

—यदि सूर्य से बारहवें स्थान में शनि हो तो जातक को दुर्बल-चरित्र का तथा आलसी बनाता है।

लाटरी आदि से धन प्राप्ति के योग

आकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति के अनेक प्रकार हैं, जैसे लाटरी, सट्टा घुड़दौड़ भूमि से या किसी सम्बन्धी आदि से। ज्योतिष शास्त्र इस विषय में भी निष्कर्ष निकलता है—

(१) यदि अष्टम भाव में धनेश हो तो गढ़ा हुआ धन प्राप्त होने का योग है।

(२) यदि लग्नेश शुभ हो और वह दूसरे भाव में बैठा हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलना चाहिए।

(३) यदि लग्नेश दूसरे भाव में, द्वितीयेश ग्यारहवें भाव में तथा एकादशेश लग्न में हो तो यह योग भी गढ़े हुए धन की प्राप्ति का है। लाटरी भी फल सकती है।

(४) द्वितीयेश चतुर्थ भाव में हो तथा चतुर्थेश किसी शुभ ग्रह की राशि में हो और शुभ ग्रह द्वारा देखा जाता हो तो लाटरी या अन्य किसी भी प्रकार से आकस्मिक धन मिलना चाहिये।

(५) यदि एकादशेश चतुर्थ भाव में हो और उक्त भाव भी हो तो यह भी आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति का योग है।

(६) यदि चन्द्रमा पांचवें भाव में बैठकर शुक्र के द्वारा देखा जाता हो तो यह योग लाटरी आदि के द्वारा आकस्मिक रूप से धन की प्राप्ति कराने वाला है।

(७) यदि धनेश शनि हो और वह चौथे भाव में स्थित हो तथा पांचवें भाव में बुध स्वक्षेत्री रूप से स्थित हो तो ऐसे जातक को धन सहसा प्राप्ति होनी चाहिए।

(८) यदि आठवें या बारहवें भाव में शनि धनेश रूप से बैठा हो

साथ ही बुध स्वगृही रूप से सातवें भाव में हो तो यह योग भी आक-
स्मिक रूप से धन प्राप्त कराता है।

९. यदि द्वितीयेश और चतुर्थेश शुभ ग्रहों की राशि में बैठे हों
और शुभ ग्रहों से युक्त हों तो यह योग गढ़े धन आदि की प्राप्ति
सहायक होता है।

१०. यदि शुभ ग्रहों की राशि में बैठे हुए द्वितीयेश और चतुर्थे
को शुभ ग्रह देखते हों तो यह योग भी आकस्मिक रूप से गढ़ा धन
लाटरी का धन प्राप्त कराने वाला है।

भाग्योदय के योग

१. यदि ग्यारहवें भाव में शनि, राहु एवं अन्य क्रूर तथा
ग्रह बैठे हों तो इसके फलस्वरूप जातक को धन-सम्पन्न और सुखी हो
चाहिए।

२. यदि लाभ स्थान में नवमेश हो तो नवें भाव में लाभेश
तो पर्याप्त धन प्राप्त होता है।

३. यदि लाभेश शुभ ग्रह के रूप में दसवें भाव में और दश
नवें भाव में हो तो पर्याप्त धन प्राप्त होता है।

४. यदि शुभ हुआ धनेश केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो
जातक धनी एवं विद्वान होता है।

५. यदि धनेश केन्द्र में और लाभेश त्रिकोण में बैठकर गुरु
शुक्र द्वारा देखा जाता हो तो अधिक धन की प्राप्ति होती है।

६. यदि दूसरे भाव का स्वामी गुरु है और वह मंगल ग्रह से
है तो धनदाता योग है।

७ यदि गुरु दूसरे भाव में है और उसे शनि देखता है तो य
भाव बनाने वाला है।

८. दूसरे भाव में उच्च राशिस्थ अंश का गुरु, शुक्र हो तथ
शनि देखता हो तो धन देने वाला योग है।

९. यदि दूसरे भाव में शनि बैठा हो और गुरु उसे पूर्ण
देखता हो तो धनवान होता है।

१०. दसरे भाव में बैठा शनि यदि बुध से दृष्ट हो तो भी धन की प्राप्ति होती है।

११. लग्न में उच्च राशि और अंश का बुध, गुरु अथवा शुक्र का होना बलवान्, बुद्धिमान् बनाने वाला हैं।

१२. बारहवें भाव में मंगल, शनि या राहु हो, किन्तु उन्हें गुरु न देखता हो तो छल प्रपंच से धन लाभ सम्भव है।

१३. यदि केन्द्र में उच्च के शुभ ग्रह स्थित हों जातक को धन की प्राप्ति हो सकती है।

१४. यदि केन्द्र में कोई एक भी ग्रह उच्च होकर बैठा हो तो भी धन की सम्पन्नता होती है।

१५. भाग्येश अपने भाव में स्थित हो तथा उसे शुभ ग्रह देखता हो तो धन की सम्पन्नता व्यक्त होती है।

१६. यदि भाग्येश गुरु हो और वह लग्न भाव में बैठा हो तो भाग्यवान बनता है।

१७. यदि भाग्येश गुरु हुआ तीसरे या पांचवें भाव में स्थिति हो तो भी धन-प्राप्ति होती हैं।

१८. नवेश, लग्नेश या धनेश केन्द्र में रहकर लग्नेश से देखे जाते हों तो उससे जातक बहुत धनी होता है।

१९. नवें भाव में पाँच शुभ ग्रह एक-साथ बैठें हों तो अत्यन्त सम्पत्तिशाली और सुप्रतिष्ठित बनाने वाला योग है।

२०. दूसरे भाव मे सूर्य हो और वह शनि के द्वारा न देखा जाता हों तो धन-सम्पन्न कराता है।

२१. दूसरे भाव में चन्द्रमा या बुध बैठा हो और शनि उसे देखता हो तो धन-सम्पन्नता वाला व्यक्त होती है।

२२. नवें भाव में उच्च राशिस्थ चन्द्र, शनि या चन्द्र, मंगल बैठे हों तो अधिक धनवान होने का चिन्ह है।

२३. यदि दूसरे भाव में चन्द्रमा अथवा बुध हो और शनि उसे देखता हो तो धन प्राप्त होता है।

२४ यदि लग्न में उच्च का गुरु हो तथा अन्य सब ग्रह अशुभ हों तो भी जातक धनवान, वीर,प्रतापी तथा राज से सम्मानित सुखी और दीर्घजीवी होता है।

२५. यदि दूसरे भाव का स्वामी लग्न, चौथे, पाँचवें, सातवें, नवें, दसवें, भाव में स्थित हो तथा गुरु द्वारा देखा जाता हो तो जातक धन से सम्पन्न होता है।

२६. नवें भाव में मकर राशि का मगल स्थित हो तो उससे जातक धनवान होता है।

२७ नवमेश केन्द्रस्थ होकर शुभ द्वारा ग्रह देखा जाता हो तो जातक को धनवान बनाता है।

२८ लाभेश मंगल हो धन की प्राप्ति होती है।

२९. यदि लाभ भाव में मंगल और गुरु की दृष्टि हो तो भी धन लाभ का योग है।

३०. यदि लाभेश सूर्य हो या वह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता हो राज्य से धन प्राप्त कराता है।

३१. लाभेश शुक्र और वह केन्द्र, त्रिकोण या ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो जातक को किसी स्वजन से धन प्राप्त कराने वाला योग बनता है।

३२. लाभेश बुध हो अथवा लाभचर में बुध हो ऐसा जातक बुद्धि-जीवी होता हुआ धन-लाभ करता है।

३३. लाभेश और लग्नेश परस्पर एक दूसरे के भाव में स्थित हो तो जातक का भाग्योदय ३३ वर्ष की आयु से प्रारम्भ होता और धन की पर्याप्त आय होती है।

३४. सूर्य दशमेश हो अथवा दसवें भाव में सूर्य की स्थिति हो तो इससे जातक धनलाभ, सन्तानज्ञान, बुद्धिमान, गुणवान तथा बुद्धिजीवी होता है।

३५. यदि पांचवें भाव में बुध से युक्त मिथुन राशि अथवा कन्या राशि हो तथा ग्यारहवें भाव में चन्द्र, मंगल हो तो यह योग जातक को अधिक धनी बनाने वाला है।

३६. यदि मिथुन या कन्या लग्न में बैठा हुआ गुरु चन्द्रमा के द्वारा देखा जाता हो तो अत्यन्त धनिक और यशस्वी बनाता है।

३७. यदि लग्न में सिंह का सूर्य शुक्र या गुरु के द्वारा देखा जाता हो तो जातक को अधिक धनी बनाता है।

३८. पांचवें भाव में कर्क राशि का चन्द्र और ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक को बहुत धनवान होता है।

३९. लग्न से पांचवीं राशि तुला हो और शुक्र तथा शनि पांचवें एवं ग्यारहवें भाव में हो तो यह योग जातक को अधिक धन, सम्पत्ति, से सम्पन्न बनाता है।

४०. लग्न से पाँचवीं राशि धन अथवा मीन हो और चन्द्रमा मंगल ग्यारहवें भाव में हों तो इस 'अखण्ड धन' नामक योग के प्रभाव से जातक अत्यन्त धनवान होता है।

४१. यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र इन चार में से किसी भी एक बार में जन्म हो तथा चन्द्र, बुध: गुरु या शुक्र की स्थिति सूर्य के साथ हो तो यह योग अनेक प्रकार के धन प्राप्त कराता है।

कष्टकारी योग

निर्बल ग्रह सुखकारी कम और कष्टकारी अधिक होते हैं तथा धन पर अशुभ स्थान या अशुभ राशि का भी प्रभाव पड़ता है उस स्थिति म जातक के लिए कष्ट उठाना पड़ता है। ऐसे ही योगों का वर्णन यहाँ किया जाया है—

१. सूर्य, मंगल नीच राशि में या पाप ग्रह की राशि में पहुँचते हुए चौथे भाव में बैठ जांय तो जातक को दुःख देने वाले हो जाते हैं।

१. यदि ग्यारहवें भाव में अष्टमेश का निवास हो तो यह भी दुखदायक योग है।

३, लग्न में पापग्रह का होना भी अशुभ समझिये। यह योग जातक को दु:ख पहुँचाने वाला होगा।

४. यदि चौथे भाव में पापग्रह हो तथा गुरु बलहीन हो तो यह भी दु:ख का कारण हो सकता है।

५ यदि लग्न भाव में शनि, छठे भाव में मंगल और आठवें भाव में राहु हो तो यह भी दु:खदायी है।

६. यदि चतुर्थेश पाप ग्रह वाला हो तो उसके कारण धनवान भी धनहीन बन जाते हैं।

७. यदि पांचवें भाव में बुध, राहु और सूर्य, चौथे में मंगल तथा आठवें भाव में शनि हो तो ग्रह योग भी जातक के लिए धन का कारण बन जाता है।

८. यदि पाप ग्रहों के बीच में चन्द्रमा को स्थिति हो तो इससे भी जातक को दु:ख प्राप्त होता है।

९. यदि पापग्रह के नवांश में सूर्य मंगल से युक्त हो तो यह लक्षण भी दु ख देने वाला है।

१०. यदि छठे, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी हीनबल होकर स्थित हों तो सुख की न्यूनता हो जाती है।

११. यदि दुर्बल हुआ लग्नेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो यह भी सुख घटाने वाला योग है।

१२. यदि लग्नेश और चतुर्थेश, लग्न तथा चौथा भाव यह पापग्रह से युक्त अथवा पापग्रह से देखे जाते हों तो जातक के लिए दु,खदायी हो सकते हैं।

१३. यदि षष्ठेष तथा द्वादेश स्वराशियों में स्थित हों तो हानि-कारक हो सकते हैं।

१४ यदि चौथे भाव में राहु और पांचवें भाव का स्वामी शनि के साथ हो सन्तान का न होना या होकर मर जाना सम्भाव होता है। यह सम्भव है कि कन्यायें उत्पन्न हो जांय।

१५. पंचमेश और मंगल छठे आठवें या बारहवें स्थान पर हो तथा पापग्रह द्वारा देखे जाते हों और शनि की राशि में गुरु का निवास हो तो यह योग बहुत हानिकारक होगा।

१६ यदि सूर्य और चन्द्रमा दोनों ही सातवें भाव में हों और उन्हें शनि देख रहा हो तो यह जातक को धन-सन्तान से हीन बना देता है।

१७ यदि तीसरे भाव का स्वामी पापग्रहों के साथ या तीसरे भाव में स्थिति हो अथवा पापग्रहों से देखे जाते हों तथा शनि आदि निर्बल हुआ बैठा हो।

१८ यदि सूर्य केन्द्र में तथा चन्द्रमा और शनि भी स्थित हों, लग्नेश लग्न भाव में हो तथा वह चन्द्रमा से अदृष्ट हो तो यह योग भी हानिकारक है।

१९ यदि सूर्य या चन्द्रमा दोनों ही सातवें भाव पर हों, और शनि के द्वारा देखा जा रहा है तो इस योग के फलस्वरूप अच्छे कार्यों में दिलचस्पी नहीं रखना तथा नीच कर्मों का करने वाला होता है।

२०. यदि लग्न में शनि, चौथे भाव में सूर्य, और मगल तथा आठवें भाव में शनि हो तो अधिक दुःखदायी योग है।

२१. यदि गुरु के अभाव में सूर्य और सूर्य के भाव में गुरु बैठा हो तथा इन पर शुक्र की दृष्टि भी हो तो उसके प्रभाव से दुख उठाना पड़ सकता है।

२२. लग्न भाव में शनि, छठे भाव में या आठवें भाव में शनि, राहु अथवा मंगल हो तो इस योग के प्रभाव से जातक का अन्न-धन नष्ट हो जाता है। ऐसे जातक को ३६ वर्ष की आयु में आर्थिक संकट झेलता होता है।

२३. यदि पापग्रहों का निवास तीन केन्द्रों में हो ऐसा जातक आचरण की दृष्टि से ठीक नहीं समझा जायगा।

२४. जिस नवांश में चन्द्रमा की स्थिति हो तथा उसका स्वामी

चन्द्र, मँगल और गुरु अपनी नीचे राशि के नवांश में हो तो ऐसा जातक दासवृत्ति (नौकरी) करने वाला होना चाहिये।

२५. गुरु के स्थान में बुध की स्थिति हो तो यह योग युवावस्था में बाघ का भय व्यक्त करता है।

२६. यदि शनि के स्थान में मंगल बैठा हो तो भी पूर्णायु के प्रथम चरण (लगभग २५ वर्ष की आयु) में बाघ का भय हो सकता है।

२७. लग्न के ग्यारहवें भाव में चन्द्र तथा कर्क राशि पर सूर्य की स्थिति हो तो यह योग जातक को किसी हठ के कारण मृत्यु होना व्यक्त करता है।

२८ यदि लग्न से सातवें भाव में शनि, सूर्य एवं राहु तीनों साथ स्थित हों तो यह योग सर्प भय की आशंका व्यक्त करता है।

२९. यदि शुक्र के स्थान में चन्द्रमा और चन्द्रमा के स्थान में शनि की स्थिति हो तो इस योग के कारण जातक की तेज धार वाले हथियार से मृत्यु हो सकती है।

३०. यदि लग्न मंगल और छठे भाव में शुक्र हो तो इससे जातक की नाक पर हथियार की चोट लग सकती है।

३१. यदि लग्न में सूर्य और शुक्र दोनों ही एक साथ स्थित हों तथा चन्द्रमा को शनि को देखता हो तो इस योग के प्रभाव से कान में चोट लग सकती है।

३२. यदि शनि और गुरु के साथ शुक्र की स्थिति हो तथा उसे कोई शुभ ग्रह न देखता हो तो उसके पांव में चोट लग सकती है अथवा वह जातक जन्म से ही पांव के किसी दोष से प्रभावित हो सकता है।

३३. नवें कोष्ठक में मंगल तथा सूर्य, शनि और राहु की एक साथ किसी एक घर में स्थिति तथा उनका किसी शुभ ग्रह द्वारा न देखा जाना इस बात को व्यक्त करता है कि जातक की मृत्यु किसी बाण या बाण जैसी गति वाले अस्त्र (बन्दूक, पिस्तौल आदि) से होनी चाहिए।

३४. यदि लग्न स्थान को राहु देखता हो तो इस योग के कारण जातक की मृत्यु वृक्ष के गिरने से होने की आशंका होती है।

३५ यदि लग्नस्थ मंगल को राहु, शनि और सूर्य तीनों ही देखते हों तो इससे जातक का पदच्युत होना संभावित होता है।

भावानुसार ग्रहों का शुभाशुभ फल

भाव का अभिप्राय कोष्ठक अथवा घर से है, कुछ विद्वान् इसे स्थान भी कहते हैं। इसकी गणना लग्न के कोष्ठक से होती है जो कि निम्न कुंडली से ठीक समझा जा सकता है।
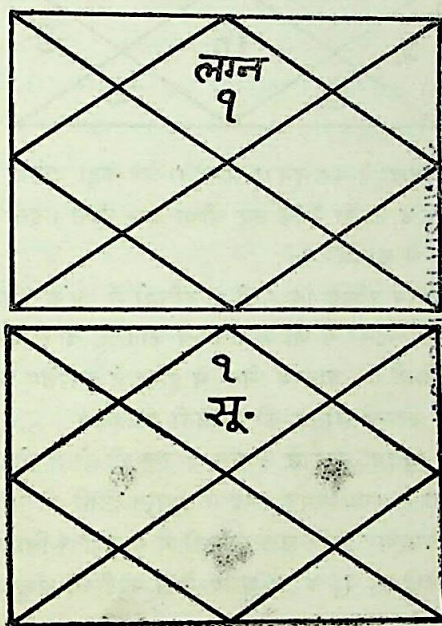
भाव की गणना का आरम्भ लग्न वाले कोष्ठक से ही होता है, इसीलिए प्रथम कुण्डली में इसके साथ १ का अंक लिखा है। किन्तु

दूसरी कुंडली में १ के साथ 'सू' का होना इस तथ्य का सूचक है कि उक्त कुंडलों में लग्न के कोष्ठक में सूर्य बैठा है।

इसी प्रकार सूर्य की स्थिति किसी भी कोष्ठक में हो सकती है। उन कोष्ठकों की गणना निम्न प्रकार होगी—
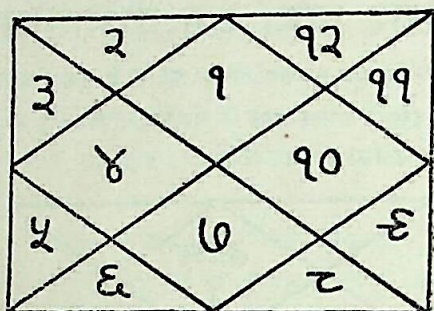
जहां २ लिखा है वह दूसरा भाव या घर कहा जायेगा। ३ लिखा है वह तीसरा, ४ लिखा है कि वह चौथा भाव होगा। इसी प्रकार सभी घरों के विषय में समझिये।

परन्तु ध्यान रखिये कि सभी कुंडलियों में अंक उक्त प्रकार से नहीं मिलेंगे। कोष्ठकों में जो अंक लिखे जाते हैं, वे राशियों के सूचक होते हैं। राशियों का आरम्भ 'मेष' से होता है इसलिए उक्त कुंडली 'मेष' लग्न में उत्पन्न जातक की समझनी चाहिये।

यदि यह 'वृषभ' लग्न में उत्पन्न जातक की होती तो १ स्थान पर २ लिखा होता है तथा मिथुन लग्न में उत्पन्न होती तो १ स्थान पर ३ रहता। अभिप्राय यह है कि उक्त कुन्डली में से जहाँ १ लिखा है वही लग्न कोष्ठक है। चाहे २, ३, ४, ५ आदि में से कोई भी अङ्क हो (जो १२ तक हो सकता है) प्रथम भाव या घर माना जायेगा।

सूर्य ही नहीं, चन्द्र, मंगल आदि जो भी ग्रह जिस कोष्ठक में बैठा होगा, उसके भाव की गणना उपर्युक्त लग्न-कोष्ठक से ही आरम्भ होगी।

ठीक प्रकार से समझने के लिए यहाँ एक कुण्डली उदाहरणार्थ प्रस्तुत की जाती है —
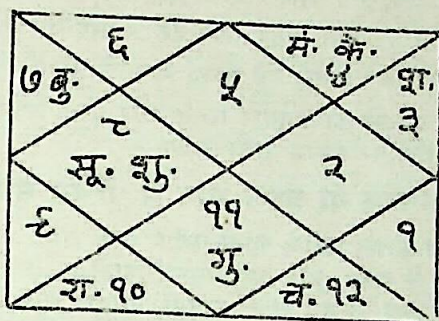
उक्त कुण्डली में लग्न स्थान में ५ अंक लिखा है, जो कि (१ मेष २ वृषभ ३ मिथुन, ४ कर्क और ५ सिंह के हिसाब से) सिंह राशि वाले जातक की है। इसमें तीसरे स्थान में बुध, चौथे स्थान में सूर्य और शुक्र छठे स्थान में राहु सातवें स्थान में गुरु, आठवें स्थान में चन्द्रमा ग्यारहवें स्थान में शनि और बारहवें स्थान में मंगल और केतु (दोनों) बैठे हैं।

इस प्रकार कुण्डली में विद्यमान भाव (स्थान, कोष्ठक या घर) का निश्चय स्पष्ट रूप से हो जाता है। अब सूर्य आदि ग्रहों का स्थानानुसार फल निर्देशात्मक विवेचन करेंगे।

सूर्य ग्रह का भावानुसार फलादेश

सूर्य ग्रह अत्यन्त प्रभावशाली और तेजोमय है। महर्षियों ने इसे लोक का प्राण कहा है। यदि यह शुभ स्थान में विराजमान हो तो मनुष्य को अत्यन्त दीप्तिमय और विद्यावान बना देता है। ऐसा जातक अत्यन्त साहसी, तेजस्वी, शूर-वीर, स्थिर विचार का तथा अत्यन्त भाग्यवान होता है। जबकि अशुभ स्थान में बैठा हुआ सूर्य जातक में भीरुता, निर्लज्जता, बुराग्रह, निरर्थक क्रोध, खिन्न तथा चंचल चित्त का बना देता है।

सूर्य ग्रह का शुभ स्थान में निवास मनुष्य को धार्मिक रुचि का, अध्ययनशील, दान, पुण्य आदि में लगा रहने वाला, स्वाभिमानी, राष्ट्र प्रेमी भी बनाता है। ऐसा जातक अपने देश के लिए सब कुछ करने को तैयार हो सकता है। उसका एक अच्छा व्यापारी होना भी सम्भव है।

अब सूर्य ग्रह की कोष्ठानुसार स्थिति और उससे उत्पन्न होने वाले शुभाशुभ फलादेश पर प्रकाश डाला जायगा—

लग्नस्थ या प्रथम भाव में स्थित सूर्य

—दुबला पतला, शरीर, लम्बा कद।

—चित्त से चंचल, क्रोध तथा मिथ्याभिमानी।

—यदि उच्च का सूर्य हो तो साहसी, बलवान और मेधावी।

—धन की निश्चिन्तता, गृहस्थ जीवन सुखी तथा सब प्रकार से भाग्यशाली।

—यदि स्वराशि पर हो तो वस्त्र व्यवसाय में लाभ।

—प्राकृतिक दृश्यों में दिलचस्पी, विदेश यात्रा की तीव्र इच्छा या विदेश व्यापार में लाभ।

—नीच राशि का हो तो द्रव्य-हीन एवं नेत्र रोगी।

—यदि लग्न में मेष या वृश्चिक राशि का सूर्य हो तो विद्वान् और भाग्यवान।

—यदि वृष या तुला राशि में हो तो स्त्री का अभाव।

—मिथुन या कन्या राशि में हो तो पुत्रियों का अभाव।

—कर्क राशि में हो तो नेत्र पीड़ा।

—मकर या कुम्भ राशि में हो तो रक्तचाप या हृद्रोग।

—धन या मीन राशि का हो तो स्त्री का अनुयायी।

द्वितीय भाव या धन-भाव में स्थित सूर्य

—उच्च का या स्वगृही सूर्य से अत्यन्त धन की प्राप्ति।

—राज सम्मान और धन की प्राप्ति का अनायास योग।

—धन-सन्तान आदि की सम्पन्नता।

—स्वास्थ्य और बुद्धि की दृष्टि से सबल।

—यदि मेष या वृश्चिक राशि का हो तो स्वावलम्बन से धन और विद्या की प्राप्ति ।

—यदि वृषभ या तुला का हो तो धन का क्षय और परिजनों से द्वेष

—यदि मिथुन या कन्या का हो तो विद्वता और मेधा की सम्पन्नता किन्तु धन के कारण कुटुम्बियों में वैर ।

—यदि कर्क राशि का हो तो परिवार जनों में प्रेम ।

—यदि स्वराशि पर हो तो कृषि, कागज, कपड़े के व्यापार में लाभ ।

—यदि मकर, कुम्भ राशि का हो तो धन का अभाव ।

—यदि धनु या मीन राशि का हो तो अत्यन्त विद्वान् तथा धन, सन्तान, स्त्री, मित्र आदि से सम्पन्न ।

तृतीय भाव में स्थित सूर्य

—शूर-वीर, साहसी, यशस्वी और प्रतापी तथा भाई भी समान गुण वाले ।

—व्यक्तित्व की प्रखरता और अर्थ के मामले में आत्म-निर्भरता !

—धार्मिक विचारधारा, दान, धन, परोपकारादि में रुचि ।

—स्वगृही या उच्च का सूर्य अधिक सौभाग्यप्रद अर्थात् भाइयों का अधिक सुख प्राप्त कराने वाला ।

—मेष या वृश्चिक राशि में भाई बहन का अल्प-सुख ।

—वृषभ या तुला राशि में हो तो परिवार जनों से द्वेष ।

— मिथुन या कन्या राशि का हो तो स्वप्रयत्न से धन की प्राप्ति ।

—कर्क राशि का हो तो भाइयों और परिवारीजनों को सुख ।

—धन या मीन राशि का हो तो भाई से सुख की प्राप्ति ।

—मकर या कुम्भ का सूर्य हो तो धर्म से विमुखता तथा भाइयों का अभाव ।

चतुर्थ भाव में स्थित सूर्य

—धन, वाहनादि की कमी तथा मातृ सुख का अभाव ।

—स्वास्थ्य तथा मान-प्रतिष्ठा में गिरावट।

—शत्रुओं की प्रबलता, राज-दण्ड की आशंका वाहन की जप्ती के आदेश।

—विदेश यात्रा का अवसर या विदेश में निवास।

—स्वगृही अर्थात् सिंह राशि का सूर्य हो तो वाहनादि की प्राप्ति तथा धन, वाहन-लाभ में मित्रों और कुटुम्बियों का सहयोग।

—कर्क राशि में हो तो वाहन, धन, भूमि खेत आदि की प्राप्ति।

—मेष या वृश्चिक का हो तो मित्रों का सहयोग एवं प्रेम।

—वृषभ या तुला का हो तो माता-पिता के वाहन एवं धन से वंचित

—मिथुन या कन्या का हो तो माता-पिता से धनादि की प्राप्ति।

—धनू या मीन का हो तो मित्रों का विश्वासघात।

—मकर या कुम्भ का हो तो अग्नि आदि का भय, दाम्पत्य जीवन में अनबन, मातृ-सुख सामान्य।

पंचम भाव में स्थित सूर्य

—विद्या, बल तथा उच्च शिक्षा।

—क्रोध, खिन्नता एवं परेशानी के होते हुए भी विद्या-प्राप्ति।

—अग्निमांद्य, आध्मान, एवं उदर रोग की पीड़ा।

—स्वगृही अथवा, सिंह राशि का सूर्य हो तो धन-संतान एवं विद्या आदि की प्राप्ति।

—कर्क राशि का हो तो विद्या की कमी तथा कन्याओं की अधिकता

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो बुद्धिमान पुत्रों की प्राप्ति।

—वृषभ या तुला राशि का हो तो सन्तान का अभाव एवं बुद्धि और शिक्षा की कमी।

—मिथुन या कन्या का हो तो बुद्धिहीनता।

—धनु या मीन का हो तो शिक्षित सन्तान का अभाव।

—मकर या कुम्भ का हो तो शिक्षा की कमी, पत्नी से अनबन तथा पुत्रादि से मतभेद।

षष्ठ भाव में स्थित सूर्य

—आकर्षक व्यक्तित्व, सुन्दर गठन, निरोग शरीर।

—साहसी. निर्भय, परिश्रमी और मुकदमे आदि में प्रवृत्त।

—न्यायवान, धार्मिक तथा अध्ययन शील।

—मातृकुल के लिए हानिकारक, नाना, मामा आदि में से किसी की मृत्यु।

— दुर्घटना में साधारण चोट की आशङ्का।

—यदि स्वराशि पर हो तो मातृकुल सुखी और शत्रु में विवाद में जीत।

—यदि कर्क राशि पर हो तो मुकदमे में जीत।

—यदि मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो शत्रु वलवान हो सकते हैं या कोई रोग उत्पन्न हो सकता है। मातृकुल सुख भी सम्भावित है।

—यदि वृषभ या तुला राशि पर हो तो स्वास्थ्य ठीक नहीं रह पाता।

—मिथुन या कन्या राशि पर हो तो शत्रु परास्त हो जाते हैं।

—धनु या मीन पर हो तो शत्रु तथा रोग का नाश शीघ्र हो जाता है।

—मकर या कन्या पर हो तो शत्रु एवं रोग प्रबल हो जाते हैं।

सप्तम भाव में स्थित सूर्य

—दुबला-पतला शरीर, आकर्षक चेहरा, पत्नी सुन्दर।

—स्वास्थ्य, कमजोर, स्वभाव में क्रोध और चंचलता।

—एक से अधिक विवाह सम्भावित।

—व्यापार में हानि, नौकरी में अवनति तथा राजदण्ड आदि की सम्भावना

—यदि सूर्य स्वगृही अथवा जाया-भाव का है तो स्त्री का सुख मिलता है। जातक महिला है तो वह पति का सुख प्राप्त करती है।

—यदि कर्क राशि में है तो स्वास्थ्य का क्षय किसी रोग की उत्पत्ति।

—यदि मेष या वृश्चिक राशि का है तो दो पत्नियों से विवाह तथा यात्रा आदि।

—यदि वृषभ या तुला में है तो पत्नी की प्राप्ति अधिक आयु में होती है।

—मिथुन या कन्या राशि को सूर्य दाम्पत्य सुख देता है।

—धनु या मीन का हो तो व्यापार में लाभ के कारण पत्नी भी प्रसन्न।

—मकर या कुम्भ का हो तो स्त्री-सुख का अभाव।

अष्टम भाव में स्थित सूर्य

—क्रोधी, लापरवाह, धैर्य-रहित और चिन्तातुर।

—मादक द्रव्यों की आदत सम्भावित।

—सेक्स विषयक उच्छृंखल प्रवृत्ति, शुक्र-सम्बन्धी रोग, दुर्बलता तथा आयु की कमी।

—स्वगृही या उच्च का सूर्य जातक को सुखी तथा दीर्घायुष्म बनाता है।

—कर्क राशि का सूर्य हृद्रोग की आशङ्का व्यक्त करेगा।

—मेष या वृश्चिक राशि का सूर्य नेत्र-रोग उत्पन्न करता अथवा पशुओं को नष्ट करता है।

—वृषभ या तुला राशि का सूर्य स्वास्थ्यहीन, निर्धन और संतान-हीन बनाता तथा आयु को घटाता है।

— मिथुन या कन्या का सूर्य हो तो सामान्य।

—धनु या मीन राशि का सूर्य कुछ रोग उत्पन्न करता तथा धन की कमी प्रकट करता है।

—मकर या कुम्भ का सूर्य मनुष्य को धन-रहित तथा अल्पायुष्य बनाता है।

नवम भाव में स्थित सूर्य

—स्वयं स्वस्थ, माता-पिता भी स्वस्थ किन्तु भाई का स्वास्थ्य खराब रहने से धन का क्षय।

—स्वभाव में क्रोध, वासना तथा स्वार्थमय चिन्तन एवं अपव्यय की प्रवृत्ति।

—उच्च का सूर्य या स्वगृही सूर्य भाग्यशाली बनता है तथा धन, सन्तान आदि देता है।

—कर्क का सूर्य भो भाग्यशाली बनता है तथा देशाटन से धन प्राप्त कराता है।

—मेष या वृश्चिक का सूर्य जातक में पाप बुद्धि उत्पन्न करता और धन नष्ट कराता है।

—मिथुन या कन्या का सूर्य सुशील नारी और श्रेष्ठ सन्तान प्राप्त कराता है जो कि जातक की भाग्यवृद्धि मे कारण है।

—धनु या मीन का सूर्य माता-पिता का धन प्राप्त कराता है।

—वृषभ, तुला, मकर या कुम्भ का सूर्य अल्पभाग्य व्यक्त करता है।

दशम भाव में स्थित सूर्य

—अनन्त सौभाग्य की प्राप्ति, ऐसा जातक कोई राजा, राष्ट्राध्यक्ष या मन्त्री आदि हो सकता है।

—धन, भूमि, वाहन आदि की प्रचुरता।

—राज सम्मान से सम्मानित, समाज में प्रतिष्ठित।

—यदि स्वगृही हो तो राज-सम्मान, सुयश, पिता की सम्पत्ति आदि का सौभाग्य।

—यदि मेष या वृश्चिक राशि का हो तो पिता अथवा राज्य से लाभ और सुयश प्राप्ति ।

—वृषभ या तुला राशि का सूर्य पिता के सुख से वंचित करता है।

—मिथुन या कन्या का सूर्य पितृ सुख और धन आदि की प्राप्ति करता है।

—कर्क राशि का सूर्य धनवान और यशस्वी बनाता है।

—धनु या मीन का सूर्य राजयोग दिलाता है।

—मकर या कुम्भ का सूर्य राजदण्ड का भागी बनाता तथा माता-पिता के सुख से वंचित करता है।

एकादश भाव में सूर्य

—अधिक आय, धन की सम्पन्नता, स्वास्थ्य सामान्य, भाई दुबले-पतले या अस्वस्थ हो सकते हैं। माता का सुख उपलब्ध, ज्येष्ठ पुत्र किसी गम्भीर रोग से पीड़ित।

—यदि सूर्य स्वगृही या उच्च का हो तो धन-धान्य की सम्पन्नता तथा व्यापार में अधिक आय।

—मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो अल्प धन।

—वृषभ या तुला राशि पर हो तो धन-प्राप्ति में बाधायें। आयु वृद्धि के साधन कम।

—मिथुन या कन्या राशि में सूर्य हो तो धन का लाभ और यश में वृद्धि।

—कर्क राशि का सूर्य संतान सुख तथा विविध प्रकार के वस्त्राभूषणों की प्राप्ति।

—धनु या मीन हो तो मेधावी होगा और धन कमायेगा।

—मकर या कुम्भ पर सूर्य हो तो धन तथा पुत्र का अभाव।

द्वादश भाव में स्थित सूर्य

—शरीर और मस्तिष्क में दुर्बलता, व्यय की अधिकता।

—साहसी और शूर-वीर

—मित्रों, परिचितों और सम्बन्धियों से विरोध।

—यदि सूर्य स्वगृही या उच्च हो तो धार्मिक विचारधारा, दान-पुण्य आदि में रुचि पर किन्तु अपव्यय अधिक।

—यदि मेष का वृश्चिक राशि पर हो तो भक्ष्याभक्ष्य के विचार से रहित तथा अपव्ययी।

—वृषभ या तुलाराशि पर स्थिति सूर्य पापकर्म में अपव्यय कराता तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से भी दुर्बल बनाता है।

—कर्क राशि पर हो तो उदार एवं परोपकारी बनाता है।

—धनु या मीन पर स्थित सूर्य जातक को सुखी बनाता तथा श्रेष्ठ कार्यों में धन के व्यय की प्रेरणा देता है।

—मकर या कुम्भ पर सूर्य हो तो वह अधिक व्यय कराने वाला होता है।

चन्द्र ग्रह का भावानुसार फलादेश

चन्द्रमा की बहुत प्रभावशाली ग्रह है। इसकी स्वराशि कर्क मानी जाती है। धन, सन्तान, स्वास्थ्य आदि पर इसका भी पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। शुभ स्थान में बैठा हुआ चन्द्रमा जातक को सौभाग्यशाली बनाता और अशुभ स्थान में विपरीत फल दिखाता है।

प्रथम भाव या लग्न में स्थित चन्द्रमा

—सुन्दर और आकर्षक व्यक्तित्व, स्वस्थ शरीर।

—मेधावी, ज्ञानवान् तथा अध्ययनशील।

—संगीत, साहित्य के प्रति अभिरुचि तथा अन्य कलाओं के प्रति लगाव।

—स्वराशि या उच्च का चन्द्र अच्छे स्वास्थ्य तथा व्यापार में अधिक कुशलता का सूचक है।

—मेष या वृश्चिक पर हो तो स्वास्थ्य खराब और धनहीन है।

—वृषभ या तुला पर हो तो अस्थि-रोग।

—मिथुन या कन्या पर हो तो ऐश्वर्य, राज सम्मान एवं राज्य व्यापार से धन की प्राप्ति, किन्तु स्वास्थ्य दुर्बल।

—सिंह पर हो तो नेत्र-रोग।

—धनु या मीन पर हो तो व्यापार-कुशल।

—मकर या कुम्भ पर हो तो रोग, असौन्दर्य।

द्वितीय भाव में स्थित चन्द्रमा

—सुन्दर और आकर्षक व्यक्तित्व, बड़े नेत्र सम्पन्न।

—व्यापार और लाटरी आदि से सहसा लाभ।

—स्वराशि या उच्च का चन्द्रमा हो तो धन की अधिक सम्पन्नता परिवार की पूर्णता।

—मेष या वृश्चिक का हो तो परिवारीजनों से अनबन तथा धन की कमी।

—वृषभ या तुला का हो तो धनवान।

—यदि मिथुन या कन्या का हो तो धन-प्राप्ति।

—यदि सिंह का हो तो परिवारीजनों से अनबन; क्षय रोग तथा तोतलापन आदि एवं धन की कमी।

—यदि धनु या मीन का हो तो सौभाग्यशाली और प्रतापी।

—यदि मकर या कुम्भ का हो तो लोभी, लालची और असंतोषी।

तृतीय भाव में स्थित चन्द्रमा

—स्वावलम्बी, सम्पन्न एवं मातृ सुख से युक्त।

—मधुर भाषी, उदार, विद्वान् तथा परिश्रमी।

—स्वगृही या उच्च का हो तो अत्यन्त पराक्रमी, भाइयों का स्नेही तथा देशाटन व्यापार में लाभ।

—मेष या वृश्चिक पर हो तो भाइयों के सुख से वंचित, अस्वस्थ एवं आलसी।

—वृषभ या तुला पर हो तो न्यून पराक्रमी, यात्रा में अरुचि।

—मिथुन या कन्या पर हो तो वात-व्याधि।

—सिंह राशि पर हो तो राजदण्ड।

—धनु या मीन पर हो तो यात्रा से धन प्राप्ति।

—मकर या कुम्भ पर हो तो भ्रातृ-सुख से सुखी।

चतुर्थ भाव में स्थित चन्द्रमा

—धन से सम्पन्न, भूमि-भवन, वाहन आदि से सुखी।

—व्यापार या नौकरी में सफलता, राजसम्मान की प्राप्ति।

—स्वगृही या उच्च का चन्द्रमा हो तो खेत, मकान, वाहन, मातृ-सुख आदि की उपलब्धि।

—मेष या वृश्चिक पर हो तो मातृ-सुख की कमी और स्वयं भी किसी रोग से पीड़ित।

—वृषभ या तुला पर हो तो भी मातृ-सुख की न्यूनता।

—मिथुन, सिंह या कन्या पर हो तो अस्वस्थता।

—धनु या मीन पर हो तो माता आदि का सुख।

—मकर या कुम्भ पर हो तो माता-पिता का सुख, धन, सन्तान, वाहन आदि की प्राप्ति, अच्छा स्वास्थ्य तथा विलासप्रियता आदि।

पंचम भाव में स्थित चन्द्रमा

—उच्च शिक्षा, अच्छा स्वास्थ्य, गृहस्थ जीवन सामान्य।

—सन्तान पक्ष में अति कन्या योग।

—धन की सम्पन्नता, समाज में प्रतिष्ठा और सुयश।

—स्वगृही या उच्च का चन्द्रमा धनवान, विद्वान् तथा सुशील पत्नी से सम्पन्न बनाता है। अति कन्या योग व्यक्त करता है।

—मेष या वृश्चिक का हो तो शिक्षा और सन्तान की कमी।

—वृषभ या तुला का हो तो परिश्रमी, किन्तु अल्प शिक्षित।

—मिथुन या कन्या का हो तो पुत्र सुख की प्राप्ति।

—सिंह का हो तो राजकाज में चतुर सन्तानवान।

—धनु या मीन का हो तो धन-सन्तान सौख्य।

—मकर या कुम्भ का हो तो बुद्धिहीन, निम्नस्तर की बात सोचने वाला, अशिक्षित।

षष्ठ भाव में स्थित चन्द्रमा

—शूरवीर, पराक्रमी तथा मुकदमे आदि में विजयी तथा निरोग।

—राज सम्मान, समाज में प्रतिष्ठा।

—स्वगृही या उच्च का हो तो शत्रुओं का नाश, रोग से निवृत्ति मातृ-पक्ष (नाना आदि) से सुख।

—मेष, वृश्चिक पर शत्रु भय, स्वास्थ्य-क्षय।

—वृषभ, तुला पर नीच बुद्धि, कामुकता आदि।

—मिथुन, कन्या पर साहसी, झगड़े में दिलचस्पी, पारीवारीजनों तक से विवाद।

—धनु या मीन राशि पर मातृ पक्ष से दुःख तथा स्वयं अस्वस्थ।

—मकर या कुम्भ पर शत्रु-नाश रोग से निवृत्ति।

सप्तम भाव में स्थित चन्द्रमा

—प्रभावशाली व्यक्तित्व, वाणी में ओज, दाम्पत्य जीवन सुखी।

—नेतृत्व क्षमता, अनुयायियों की संख्या वृद्धि।

—विद्वता और अध्ययनशीलता, बुद्धिजीवी।

—स्वगृही या उच्च का हो तो देशाटन में लाभ, स्त्री-सुख से सम्पन्न, मधुर भाषी तथा व्यापार-कुशल।

—मेष, वृश्चिक, मकर, कुम्भ का हो तो पत्नी के चरित्र में शंका।

—वृषभ, तुला पर स्त्री से अनबन।

—मिथुन, कन्या पर स्त्री के कारण आत्महत्या या हत्या।

—सिंह राशि पर पत्नी से मतभेद।

—धनु, मीन पर राज्य से धन प्राप्ति, स्त्री से प्रेम।

अष्टम भाव स्थित चन्द्रमा

—स्वास्थ्य-नाश दौर्बल्य, श्वास, कास, प्रमेह, उदर रोग, हृद्रोग आदि के कारण आयु का ह्रास।

—स्वाभिमान की अधिकता, दूसरों से ईर्ष्या।

—स्वगृही या उच्च के चन्द्रमा से दीर्घायुष्य।

—मेष, वृषभ, तुला, वृश्चिक से अल्पायु।

—मिथुन, कन्या से क्षय-रोग।

—धनु, मीन से अस्वस्थता, अल्पायुष्य।

—मकर, कुम्भ पर रोग और धनहीनता।

नवम भाव में स्थित चन्द्रमा

—सौभाग्यशाली, उदार, परोपकारी।

—धन, वैभव से सम्पन्न, प्रतिष्ठित।

—स्वगृही या उच्च का हो तो अत्यन्त भाग्यवान, तीर्थाटन में लाभ, कृषि या उद्योग में लाभ।

—मेष, वृश्चिक में हो तो छल-प्रपंच से धनोपार्जन में रत।

—वृषभ तुला में सौभाग्यशाली।

—मिथुन, कन्या में पिता दीर्घायुष्य होने से अर्थ विषयक चिन्ता की कमी।

—सिंह राशि में हो तो माता-पिता के अल्पायुष्य होने से धनोपार्जन की चिन्ता।

—धनु, मीन में हो तो देशाटन से लाभ, सम्पन्नता।

—मकर, कुम्भ में हों तो स्वभाव में क्रोध, ईर्ष्या, रूखापन तथा धन का अभाव।

दशम भाव में स्थित चन्द्रमा

—सुन्दर, प्रतिभाशाली व्यक्तित्व।

—धन आदि की दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न ।

—स्वगृही या उच्च का हो तो राज्य से लाभ, यश में वृद्धि, पितृ धन की प्राप्ति अथवा राजपद की प्राप्ति ।

—मेष या वृश्चिक का हो तो पिता के धन से वंचित, राजदण्ड की आशंका ।

—वृषभ या तुला पर कामुकता के कारण राजपद से वंचित ।

—मिथुन, कन्या पर श्रेष्ठ कर्मों में रुचि और राज सम्पन्न ।

—सिंह राशि पर यश तथा राजयोग ।

—धनु, मीन पर दयावान शासक ।

—मकर, कुम्भ पर पिता से अनबन ।

एकादश भाव में स्थित चन्द्रमा

—धनवान, सुख-सौभाग्य से सम्पन्न, अच्छी आय ।

—श्वेत वस्तुओं के व्यापार से लाभ ।

—स्वगृही या उच्च का हो तो विद्या, धन, वस्त्राभूषण तथा पुत्रादि का सुख ।

—मेष, वृश्चिक राशि में हो तो मूर्ख तथा धन, सन्तान से हीन ।

—मिथुन, कन्या में हो तो व्यापार में लाभ ।

—सिंह राशि पर हो तो पुत्र द्वारा धन का अपव्यय ।

—धनु या मीन पर हो तो व्यापार द्वारा अत्यन्त धन की अनायास प्राप्ति ।

—मकर या कुम्भ पर हो तो धनोपार्जन में अपयश ।

द्वादश भाव में स्थित चन्द्रमा

—धार्मिक, संयमी, उदार तथा दान, धर्म में व्यय करने वाला ।

—स्वास्थ्य, सामान्य, नेत्र-रोग, मातृ-सुख की कमी ।

—स्वगृही या उच्च का हो तो दीर्घायुष्य, श्रेष्ठ कार्यों में धन का व्यय ।

—मेष या वृश्चिक का हो तो लोभी प्रवृत्ति।

—वृषभ या तुला का हो तो स्वभाव में उग्रता, अपयश; कामुकता से चरित्र-दोष के कारण धन का अपव्यय।

—मिथुन, कन्या का हो तो अस्वस्थ किन्तु ऐश्वर्य से सम्पन्न।

—सिंह राशि का हो तो अभक्ष्य सेवन में रुचि, धन का अपव्यय

—धनु, मीन का हो तो माता को रोग के कारण व्यय।

—मकर या कुम्भ का हो तो रोग एवं निर्धनता। आय कम; व्यय अधिक।

मंगल ग्रह का भावानुसार फलादेश

मंगल को क्रूर ग्रह में गिनते हैं। इस कारण जातक में स्वभाव की उग्रता, क्रोध, रूखापन आदि की उत्पत्ति हो जाती है। उसमें साहस और पराक्रम भी वहुत होता है तथा यदि वह किसी से भिड़ जाय तो पीछे हटने का नाम नहीं लेता।

लग्न या प्रथम भाव में स्थित मंगल

—चेहरे पर सौम्यता किन्तु रोबीला व्यक्तित्व।

—अच्छा स्वास्थ्य, शरीर में अधिक शक्ति।

—स्वगृही या उच्च का मंगल हो तो अच्छा स्वास्थ्य, राज्य-सम्मान, दीर्घायुष्य तथा व्यापार में कुशल।

—वृषभ, तुला का हो तो अस्वस्थ, झगड़ालू स्वभाव।

—मिथुन, कन्या का हो तो मूर्ख और क्रोधी।

—कर्क राशि का हो तो रोगी।

—सिंह राशि का हो तो स्वभाव में चपलता।

—धनु, मीन का हो तो ज्ञान, धन और स्वास्थ्य की सम्पन्नता तथा राजपद प्राप्ति।

—मकर या कुम्भ राशि का हो तो रोगी, अल्प सन्तति तथा अल्पायु।

द्वितीय भाव में स्थित मंगल

—कठोर स्वभाव, क्रोधी और कटु भाषी।

—मुकदमेबाजी में व्यय, खर्चीला स्वभाव तथा धन की आय कम।

—मंगल उच्च का या स्वगृही हो तो धन की सम्पन्नता, पारिवारिक बृद्धि, मधुर भाषी।

—वृषभ या तुला राशि का हो तो धनवान किन्तु अस्वस्थ।

—मिथुन या कन्या राशि का हो तो अंगहीन, लँगड़ा या अन्य कोई कमी, आर्थिक स्थिति दुर्बल।

—कर्क राशि का हो तो नेत्र-व्याधि, धन की कमी।

—सिंह राशि का हो तो वीर्य सम्बन्धी रोग।

—धनु, मीन का हो तो देशाटन, राज्य-सम्मान से धन प्राप्ति।

—मकर या कुम्भ का हो तो धनहीन, कुटुम्ब में कष्ट।

तृतीय भाव में स्थित मंगल

—अनाकर्षक व्यक्तित्व, कटुभाषी एवं क्रोधी, भाइयों का द्वेषी।

—आर्थिक सकट से ग्रस्त, आय के साधनों का अभाव।

—स्वगृही या उच्च का हो तो पराक्रमी, व्यापार में चतुर तथा भाई आदि से भरा-पूरा परिवार।

—मिथुन या कन्या का हो तो बन्धु-बान्धवों से अनबन।

—वृषभ या तुला का हो तो धन की सम्पन्नता, भाई आदि का न्यून सुख।

—कर्क राशि का हो तो परिवारीजनों से क्लेष।

—सिंह राशि का हो तो भाइयों से अनबन।

—धनु या मीन राशि का हो तो अध्ययनशील, धर्म में रुचि।

—मकर या कुम्भ का हो तो धनहीन, दुष्कर्मी और आलसी।

चतुर्थ भाव में स्थित मंगल

—मंगली जातक, मातृ-सुख की कमी।

—सामान्य स्वास्थ्य, धन के स्रोत दुर्बल, घर, भूमि का अभाव।

—स्वगृही या उच्च का हो तो कृषि और पशु पालनादि से लाभ, माता-पिता का सुख उपलब्ध, वाहन उपलब्ध।

—मिथुन या कन्या पर हो तो धन मकान आदि का अभाव।

—वृषभ या तुला पर हो तो माता को रोग, पिता के सुख से वंचित, स्वय को वाहनादि से चोट।

—कर्क राशि पर हो तो धन की कमी, मित्रों से अनबन तथा अल्प मातृ-सुख।

—सिंह राशि पर हो तो मित्रों और परिवारीजनों से मतभेद, भूमि वाहन आदि का अभाव, धन की कमी।

—मकर या कुम्भ पर हो तो पिता, माता, भाई पत्नी आदि से विरोध, घर में अग्निकाण्ड का भय।

पंचम भाव में स्थित मंगल

—अत्यन्त उग्र स्वभाव, रोबीला व्यक्ति, उच्च शिक्षा।

—क्रूर, साहसी, परिश्रमी; सन्तानवान किन्तु धन की स्थिति सामान्य।

—परिवारी जनों और मित्रों से विरोध।

—स्वगृही या उच्च का हो तो विद्वान्, सन्तानादि की ओर से सुखी। कला, साहित्य में रुचि, किन्तु क्रोधी।

—मिथुन या कन्या का हो तो राज-दण्ड की आशंका, दुष्ट विचारधारा।

—कर्क राशि का हो तो शिक्षा की कमी. धन, सन्तान का अभाव।

—सिंह राशि का हो तो सामान्य शिक्षा, राज-सम्मान, एक पुत्र का सुख।

—धनु या मीन का हो तो गुणज्ञ, कला-प्रेमी, पुत्र को वंचित तथा क्रोधी स्वभाव।

—मकर या कुम्भ का हो तो सन्तानाभाव।

षष्ठ भाव स्थित मंगल

—आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़, मुकदमेबाजी की प्रवृत्ति।

—स्वगृही या उच्च का मंगल हो तो मातृ पक्ष के सुख से वंचित।

—मिथुन या कन्या का हो तो अधिक आयु में चर्मरोग या रक्त सम्बन्धी रोग।

—कर्क राशि का हो तो मातृपक्ष के सुख की प्राप्ति, स्वास्थ्य खराब तथा मुकदमा आदि पराजय।

—सिंह राशि का हो तो संतान की कमी या अभाव, किंतु परोपकार में चित्त।

—धनु या मीन राशि का हो तो धन का लाभ तथा शत्रुओं पर विजय।

—मकर या कुम्भ राशि का हो तो अस्वस्थता, किन्तु शत्रुओं का पराजय मातृ-पक्ष के सुख का अभाव।

सप्तम भाव में स्थित मंगल

—बुद्धि की कमी, स्वास्थ्य की दृष्टि से भी दुर्बल।

—अर्थ का अभाव, जीविका के सीमित साधन, पत्नी से अनबन।

—वातरोग या चर्मरोग से पीड़ित, पत्नी भी कष्ट में परेशान।

—स्वगृही या उच्च का हो तो स्त्री सुख की प्राप्ति तथा विदेश व्यापार में लाभ।

—मिथुन या कन्या राशि का मंगल है तो दो विवाह किन्तु दोनों के अन्त की आशंका।

—कर्क राशि का हो तो सामान्य दाम्पत्य जीवन।

—सिंह राशि में हो तो स्त्री चरित्र के प्रति आशंका।

—धनु या मीन राशि में हो तो चारित्रिक दोष।

—मकर या कुम्भ राशि में हो तो दुराचार में प्रवृत्ति।

अष्टम भाव में स्थित मंगल

—क्रोधी, रूखा स्वभाव, अल्पायुष्य।

—परिवारियों, मित्रों आदि से अनबन।

—धन की कमी, स्वास्थ्य सामान्य, किन्तु नेत्र रोग अथवा चर्मरोग की सम्भावना।

—स्वगृही या उच्च का हो तो स्वास्थ्य और दीर्घायुष्यप्रद। किन्तु नीच का हो तो स्वास्थ्य की हानि।

—वृषभ और तुला का हो तो स्त्री की ओर से दुःख तथा व्यापार में धन की हानि।

—मिथुन या कन्या का हो तो पिता की ओर से कष्ट रोगी पुत्र की ओर से चिन्ता।

—कर्क राशि का हो तो धन की कमी, किन्तु मन में सन्तुष्टि।

—सिंह राशि का हो तो धन–हानि स्वास्थ्य की हानि और अल्पायुष्य।

—धनु या मीन का हो तो धन-लाभ।

—मकर या कुम्भ का हो तो अल्पायुष्य, पत्नी कर्कशा।

नवम भाव में स्थित मंगल

—नेतृत्व का गुण, व्यापार में लाभ, नौकरी हो तो उच्च पद।

—क्रोध की अधिकता, भाइयों से अनबन।

—यदि स्वगृही या उच्च का हो तो भाग्यवान, धर्म में निष्ठा, देशाटन से लाभ, पुत्र सुख की प्राप्ति।

—वृषभ या तुला का हो तो पितृ-सुख का अभाव, धन नाश, पर नारी से प्रेम ।

—मिथुन या कन्या का हो तो धर्म में अविश्वास ।

—कर्क राशि का हो तो धर्म-बुद्धि ।

—सिंह या मीन राशि का हो तो तीर्थाटन में रुचि तथा उसमें व्यय ।

—मकर या कुम्भ हो तो धर्म में अरुचि ।

दशम भाव में स्थित मंगल

—राज्य द्वारा प्रतिष्ठित, धन-सम्पन्न, भाग्यवान, पितृ सुख से उपकृत ।

—विद्वान्, साहित्य में रुचि, राज-सम्मान की प्राप्ति ।

—स्वगृही या उच्च का हो तो यशस्वी, राज्य व्यापार में लाभ, पितृ सुख की उपलब्धि ।

—मिथुन या कन्या राशि पर हो तो पिता के लिए दुःखदायी तथा सन्तान सुख से वंचित ।

—वृषभ या तुला पर हो तो पराक्रमी ।

—कर्क राशि पर हो तो पिता की ओर से अल्प सुखी ।

—सिंह राशि पर हो तो सदाचारी और भाग्यवान ।

—धनु या मीन राशि पर हो तो पिता आदि गुरुजनों में श्रद्धा और परमात्मा पर विश्वास ।

—मकर या कुम्भ राशि पर हो तो छल-प्रपंच में रुचि के कारण राज्य असम्मान ।

एकादश भाव में स्थित मंगल

—साहसी, पराक्रमी और निर्भय ।

—न्यायवान, साधु-सन्तों का भक्त ।

—उदार, परोपकारी, किन्तु धनोपार्जन में चतुर।

—यदि स्वगृही या उच्च का हो तो धन, सन्तान, विद्या आदि से सम्पन्न। यदि नीच का हो तो विपरीत फल।

—वृषभ या तुला का हो तो धन की सम्पन्नता, आय के अच्छे साधन।

—मिथुन या कन्या का हो तो शिक्षा की कमी से आय के स्रोत कमजोर।

—कर्क राशि का हो तो आय सामान्य।

—सिंह राशि का हो तो यशस्वी, राज-धन से उपकृत।

—धनु या मीन का हो तो अल्प धन प्राप्ति।

—मकर या कुम्भ का हो तो आय व्यय बराबर।

द्वादश भाव में स्थित मंगल

—मंगली, दाम्पत्य जीवन में असन्तुष्टि, आय के स्रोत संकुचित।

—धनाभाव, विद्या की कमी।

—स्वभाव में रूखापन, नेत्र रोग से पीड़ित।

—स्वगृही या उच्च का हो तो लोभी।

—नीच का हो तो दुराचार में धन का नाश।

—वृषभ, तुला का हो तो धन की हानि।

—मिथुन या कन्या का हो तो अहंकारी।

—कर्क राशि का हो तो सामान्य।

—सिंह राशि का हो तो राज-दण्ड।

—धनु या मीन का हो तो बहुतों से विरोध तथा धन का अप-व्यय।

—मकर या कुम्भ का हो तो धन का अभाव।

बुध ग्रह का भावानुसार फलादेश

बुध ग्रह मिथुन और कन्या राशियों का स्वामी है। इसके प्रभाव से विवेक बुद्धि की प्राप्ति होती है। वह वेदादि ग्रन्थों का विद्वान तथा विज्ञानादि विषयों में भी रुचि लेने वाला होता है। इस ग्रह का प्रभाव जातक के कन्धों और ग्रीवा पर भी अधिक पड़ता है।

लग्न में या प्रथम भाव में स्थित बुध

—विद्वता, उदारता, परोपकार तथा ईमानदारी का व्यापार,

—संयमित जीवन, स्वस्थ और दीर्घायुष्य।

—यदि स्वगृही या उच्च का दुध हो तो श्रेष्ठ स्वास्थ्य, दीर्घायुष्य शिक्षित तथा धार्मिक विचार।

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो विद्वान वेद, पुराण, ज्योतिष का ज्ञाता, मन्त्र विद्या में सिद्ध बुद्धिजीवी।

—कर्क राशि का हो तो स्वास्थ्य खराब, तीर्थाटन से प्रेम।

—सिंह राशि का हो तो अंगहीन या रुधिर।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो अशिक्षित, अस्वस्थ तथा ईश्वर में अविश्वासी।

—मकर या कुम्भ राशि का हो तो ज्ञानवान, किन्तु प्रपंची।

धन-भाव या द्वितीय भावस्थ बुध

—नेतृत्व शक्ति, वाणी में ओज।

—कला में रुचि व्यापारादि में लाभ।

—यदि स्वगृही या उच्च का हो तो धन, कुटुम्व, पुत्रादि से सम्पन्न।

—मेष या वृश्चिक का हो तो धनवान, विद्वान।

—वृषभ या तुला का हो तो गणित, साहित्य में योग्य।

—कर्क राशिस्थ हो तो वात-विकार से पीड़ित।

—सिंह राशिस्थ हो तो क्रोधी, चंचलचित्त, उद्योगी, व्यापारी दीर्घायुष्य तथा आर्थिक स्थिति अच्छी।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो धन की कमी और इसी कारण परिवारीजनों से क्लेश।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो अल्पायुष्य, अल्प धनी।

तृतीय भाव में स्थित बुध

—नम्र, उदार, परोपकाररत।

—चंचल, भोग विलास में रुचि, साहित्य से प्रेम।

—स्वगृही या उच्च का हो तो भाग्यवान; धर्मात्मा, भाई आदि के सुख से युक्त। नीच का हो तो विपरीत फल।

—मेष या वृश्चिक का हो तो भाई-बहिनों का सुख।

—वृषभ या तुला का हो तो धनवान, यात्रा में रुचि।

—कर्क राशिस्थ हो तो धीरजवान, स्थिर चित्त।

—सिंह राशिस्थ हो तो भाई आदि से अनबन।

—धनु या मीन राशि का हो तो धन की कमी, किन्तु, पुत्रवान एवं भाइयों से स्नेह युक्त।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो अल्पायुष्य।

चतुर्थ भाव में स्थित बुध

—स्वावलम्बी, परिश्रमी, सौभाग्यशाली, घर, वाहन आदि से सम्पन्न।

—उदार और मिलनसार स्वभाव।

—स्वगृही या उच्च का बुध हो तो मातृ-सुख, मित्र-सुख, पिता की सम्पत्ति की प्राप्ति।

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो कला में रुचि।

—वृषभ या तुला का हो तो पिता की सहायता।

—कर्क राशिस्थ हो तो बुद्धि की कमी, मातृ-सुख का अभाव।

—सिंह राशिस्थ हो तो व्यापार में लाभ, वाहनादि की प्राप्ति।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो माता के लिये कष्टप्रद, मित्रों के लिए धन का दुरुपयोग।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो मित्रों से अनबन, वाहन से चोट।

पञ्चम भाव में स्थित बुध

—शिक्षित, बुद्धिजीवी, कुशल व्यापारी या राजनायक।

—स्वगृही या उच्च का बुध हो तो मेधावी तथा सन्तानवान।

—मेष या वृश्चिक राशिस्थ हो तो अहंकारी, सन्तान की ओर से कुछ परेशानी।

—वृषभ या तुला राशिस्थ हो तो विद्वान।

—कर्क राशिस्थ हो तो पुत्र से अनबन।

—सिंह राशिस्थ हो तो अनाचार में प्रवृत्ति।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो मूर्ख तथा सन्तानहीन।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो सामान्य सुखी, भ्रमण में रुचि और अल्प सन्तति।

षष्ठ भाव में स्थित बुध

—अशिक्षित, तर्क बुद्धि या विवेक बुद्धि कमी।

—क्रोधी, रूखा, खिन्न, चित्त, मुकदमों में रुचि।

—स्वगृही या उच्च का बुध हो तो रोग-निवृत्ति, शत्रु का दमन।

—मेष या वृश्चिक राशिस्थ हो तो शूर-वीर, पराक्रमी तथा किसी राज्यपद पर आसीन।

—वृषभ या तुला राशिस्थ हो तो राज्याधिकारियों से मित्रता।

—कर्क राशिस्थ हो तो यक्ष्मा की आशंका।

—सिंह राशिस्थ हो तो मातृ-पक्ष के लाभ से वंचित।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो निर्धन, निर्बल, शत्रुओं द्वारा व्यथित।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो स्वजनों तथा मित्रों से भी अधिक विरोध।

सप्तम भाव में स्थित बुध

—बुद्धि की प्रखरता, अध्ययनशील, बुद्धिजीवी।

—पत्नी योग्य, विदुषी तथा पति को सहयोग देने वाली।

—स्वगृही या उच्च का बुध हो तो व्यापार में लाभ, विदेश यात्रा से धन की प्राप्ति. दाम्पत्य जीवन सुखी, सुन्दर पत्नी।

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो धार्मिक विचारधारा तथा मातृ सुख, पत्नी का सुख।

—वृष या तुला का हो तो स्वभाव में उदारता से यश की प्राप्ति।

—कर्क राशिस्थ हो तो व्यापार में हानि, पत्नी से अनबन।

—सिंह राशिस्थ हो तो राज-सम्मान, पत्नी के चरित्र में शंका।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो पत्नी आदि से अनबन।

अष्टम भाव स्थित बुध

—शिक्षित, विवेक बुद्धि की प्रवलता, दीर्घ आयु।

—भोग विलास में रुचि, अच्छा स्वास्थ्य।

—स्वगृही या उच्च का बुध हो तो स्वस्थ एवं दीर्घायुष्य।

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो कृषि-कर्म में लाभ, स्वस्थ तथा दीर्घायुष्य।

—वृष या तुला का हो तो धन-सम्पन्न।

कर्क राशिस्थ हो तो अस्वस्थ एवं अल्पायुष्य ।
सिंह राशिस्थ हो तो धन का अभाव ।
धनु या मीन राशि पर हो तो अस्वस्थ तथा दुर्बल ।
मकर या कुम्भ राशि पर हो तो विदेश यात्रा में रुचि तथा अल्पायुष्य ।

नवम भाव में स्थित बुध

धन की सम्पन्नता, सुखी जीवन ।
धर्म, न्याय, दर्शन आदि में विद्वान ।
स्वगृही हो तो भाग्यवान, धन-सन्तानादि से सुखी, गुरुजनों के प्रति श्रद्धावान ।
मेष या वृश्चिक राशि का हो तो विद्वान, वक्ता तथा अति धन, सन्तान योग ।

वृष या तुला का हो तो तीर्थ यात्रा एवं धनोपार्जन में रुचि ।
कर्क राशिस्थ हो तो धनवान ।
सिंह राशिस्थ हो तो पिता के प्रति विनम्र तथा आस्तिक ।
धनु या मीन राशि पर हो तो निर्धन और दुर्बल ।
मकर या कुम्भ पर हो तो धर्म में अश्रद्धा तथा पिता से अनबन ।

दशम भाव में स्थित बुध

शिक्षित, विद्वान तथा न्याय प्रिय, राज-सम्मान से सम्मानित ।
बुद्धिजीवी, लेखक पत्राकार आदि ।
स्वगृही या उच्च का हो तो पिता से धन प्राप्ति, राज सम्मान तथा व्यापार में लाभ ।
मेष या वृश्चिक राशि का हो तो धन-लाभ, धार्मिक कार्यों में रुचि, राजपद की प्राप्ति ।
वृष या तुला राशि का हो तो मित्रों का सहयोग ।
कर्क राशिस्थ हो तो पिता से अनबन ।

सिंह राशिस्थ हो तो धनवान, राजपदस्थ।

धनु या मीन राशिस्थ हो तो सामान्य।

मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो धन-लाभ, सम्मान।

एकादश भाव में स्थित बुध

विवेकी, विद्वान, मृदु भाषी।

धन से सम्पन्न, न्यायप्रिय तथा उपार्जन में आत्म-निर्भर।

यदि स्वगृही या उच्च का हो तो धन तथा वस्त्राभूषणादि का लाभ।

मेष या वृश्चिक राशि का हो तो स्वभाव से क्रोधी, राज से धन, सम्मान का लाभ।

वृष या तुला राशि का हो तो अति कन्या का योग या सन्तान से विरक्त।

कर्क राशिस्थ हो तो व्यापार में लाभ जवाहरात के संचय में प्रयत्नशील।

सिंह राशिस्थ हो तो धनवान।

धनु या मीन राशिस्थ हो तो धन-हानि।

मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो धन-हानि।

द्वादश भाव में स्थित बुध

सुशिक्षित, बुद्धिजीवी, ऐश्वर्यशाली।

यदि स्वगृही या उच्च का हो तो स्वस्थ तथा धार्मिक कार्यों में सञ्चित धन का उपयोग।

मेष या वृश्चिक राशि का हो तो कृपण, राज-काज में कुशल।

वृष या तुला राशिस्थ हो तो श्रेष्ठ प्रकार से धनोपार्जन और शुभ कार्यों में व्यय।

कर्क राशिस्थ हो तो शत्रुओं की वृद्धि के कारण अति व्यय।

सिंह राशिस्थ हो तो राज सेवा में नियुक्त।

धनु या मीन राशिस्थ हो तो स्वास्थ्य खराब तथा धन की क्षति।

मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो आचरणहीन तथा नीचों की सेवा में रत।

गुरु ग्रह का भावानुसार फलादेश

गुरु (बृहस्पति) एक अत्यन्त प्रभावशाली ग्रह है, जो कि बुद्धि पर भी प्रभाव डालता है। उच्च के गुरु से प्रभावित जातक अत्यन्त मेधावी शिक्षित तथा विचारशील होता है। किन्तु नीच के गुरु का इसके विपरीत होता है। इस ग्रह का प्रभाव मूत्राशय पर भी पड़ता है। सन्तान, धन राज सम्मान आदि के विषय में भी गुरु का प्रभाव कम नहीं है।

लग्नस्थ या प्रथम भावस्थ

शिक्षित, विवेकी, दानशील व्यापार कुशल।

अच्छा स्वास्थ्य, दीर्घायुष्य।

समाज में प्रतिष्ठित, राज सम्मान से सम्मानित।

स्वगृही या उच्च का गुरु धनवान, विद्वान, पुत्रवान तथा राज सम्मान से सम्मानित बनाता और व्यापार की वृद्धि करता है।

मेष या वृश्चिक राशिस्थ हो तो चंचल चित्त, स्वास्थ्य सामान्य।

वृषभ या तुला राशिस्थ हो तो यशस्वी।

मिथुन या कन्या राशिस्थ हो तो पत्नी सुख एवं पत्नी का अच्छा स्वास्थ्य।

कर्क राशिस्थ हो तो सामान्य स्वास्थ्य।

सिंह राशिस्थ हो तो अल्पायुष्य।

मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो परिवारीजनों से अनबन, सन्तान-सुख का अभाव, विदेश यात्रा में रुचि, स्वास्थ्य में कमी।

धन भावस्थ द्वितीय भावस्थ गुरु

भाग्यवान, धार्मिक रुचि, संयमशील, आर्थिक रूप से सम्पन्न।

—स्वगृही या उच्च का हो तो धनवान, बुद्धिमान।
—मेष या वृश्चिक का हो तो लोभी, किंतु वीर और धन से संपन्न
—वृषभ या तुला का हो तो परिवारीजनों से अनबन, अस्वस्थ।
—मिथुन या कन्या का हो तो मिथ्यावादी, चौर्यकर्मी, किन्तु धन सम्पन्न।

—कर्क राशिस्थ हो तो पीली वस्तुओं के व्यापार से लाभ।
—सिंह राशिस्थ हो तो राज्य से धन-लाभ।
—मकर या कुम्भ राशि पर हो तो परिवारीजनों से मन-मुटाव देशाटन से लाभ।

तृतीय भाव में स्थित गुरु

—निम्न स्तर के विचार, विवेक की कमी।
—स्वास्थ्य दुर्बल, भ्रातृ सुख एवं गृहस्थ जीवन सामान्य।
—स्वगृही या उच्च का हो तो सुखी, धार्मिक रुचि, उद्यमशील, भाइयों का सुख।
—मेष या वृश्चिक का हो तो यात्रा से व्यापार में लाभ।
—वृषभ या तुला पर हो तो भाइयों आदि से अनबन।
—मिथुन या कन्या पर हो तो तीर्थाटन और आर्थिक सम्पन्नता।
—कर्क राशि पर हो तो सामान्य।
—सिंह राशि पर हो तो आचरणहीन भाइयों से अनबन।
—मकर या कुम्भ राशि पर हो तो परिवारीजनों से क्लेश, चित्त में अशान्ति, व्यापार में हानि।

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु

—बलवान, परिश्रमी, उद्यमी।
—धनोपार्जन में चतुर, घर, वाहन आदि की इच्छा।
—स्वगृही या उच्च का हो तो कृषि-कर्म में लाभ, मातृ सुख।
—मेष या वृश्चिक का हो तो भूमि की प्राप्ति, रोग-नाश।

—वृषभ या तुला का हो तो माता, पत्नी और मित्रों से अनबन।
—मिथुन या कन्या का हो तो सवारी से गिरने की आशंका।
—कर्क राशिस्थ हो तो सामान्य।
—सिंह राशिस्थ हो तो वाहन की उपलब्धि।
—मकर या कुम्भ राशि पर हो तो पशु के द्वारा आघात, मातृ-सुख का अभाव।

पंचम भाव में स्थित गुरु

—शिक्षित, मेधावी, विवेकी, सन्तानवान।
—धार्मिक विचारधारा के साथ ईश्वर में श्रद्धा एवं विश्वास।
—स्वगृही या उच्च का हो तो विद्वान् तथा पुत्रों से सम्पन्न।
—मेष या वृश्चिक का हो तो दानशील, विवेकी।
—वृषभ या तुला का हो तो पुत्रों से विरोध।
—मिथुन या कन्या का हो तो पुत्र-सुख।
—कर्क राशि का होतो सामान्य सुखी।
—सिंह राशिस्थ हो तो पुत्रादि स्वजनों से प्रेम।
—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो सन्तान-सुख, किंतु धन की कमी

षष्ठ भाव में स्थित गुरु

—बुद्धिमान, विवेकी और बुद्धिजीवी, स्वस्थ।
—धन की सम्पन्नता, मुकदमे आदि की जीत।
—स्वगृही हो तो स्वस्थ शरीर, मातृपक्ष से सुखी।
—मेष या वृश्चिक का हो तो स्वस्थ,दीर्घायुष्य,समाज में प्रतिष्ठित
—वृषभ या तुला का हो तो रोग एवं शत्रु का भय।
—मिथुन या कन्या का हो तो शरीर में चर्मरोग तथा छाजन या कुष्ठ।
—कर्क राशि का हो तो सामान्य।
—सिंह राशि का हो तो मातृपक्ष (ननसाल) से लाभ, मुकदमे सफलता।

—मकर या कुम्भ राशि का हो तो किसी रोग की प्रबलता।

सप्तम भाव में स्थित गुरु

—शिक्षित, मेधावी, बुद्धिजीवी, गृहस्थी।

—कला में दिलचस्पी, सेक्स में भी अति रुचि।

—स्वगृही या उच्च का हो तो व्यापार में लाभ, पत्नी से सुख।

—मेष या वृश्चिक का हो तो धनिक, विद्वान्, व्यापार में कुशल।

—वृषभ या तुला का हो तो आर्थिक कष्ट, पत्नी से अनबन।

—मिथुन या कन्या का हो तो विदुषी पत्नी की प्राप्ति।

—कर्क राशिस्थ हो तो दाम्पत्य जीवन सामान्य।

—सिंह राशिस्थ हो तो व्यापार में लाभ, दाम्पत्य जीवन सुखी।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो धन-हानि, विदेश में बदनामी किन्तु स्त्री सुख की प्राप्ति।

अष्टम भाव में स्थित गुरु

—उच्च शिक्षा-प्राप्त, मेधावी, उदारचेत्ता, दीर्घायुष्य।

—विवेकी, शान्त स्वभाव, धर्मनिष्ठ, स्वस्थ।

—स्वगृही या उच्च का हो तो धनवान, स्वस्थ तथा दीर्घायुष्य, राजनीति आदि में सफल।

—मेष या वृश्चिक का हो तो मस्तिष्क रोग।

—वृषभ या तुला हो तो विद्वान्।

—मिथुन या कन्या का हो तो रोगी, आचरणहीन होने के कारण अल्पायु।

—कर्क राशि का हो तो सामान्य।

— सिंह राशिस्थ हो तो आयु की कमी।

—मकर या कुम्भ का हो तो रोगी एवं अल्पायुष्य।

नवम भाव में स्थित गुरु

—उच्च शिक्षित, वेद-पुराण-दर्शन आदि में पारंगत।

—आर्थिक स्थित ठीक, भूमि, भवन, खेत आदि की सम्पन्नता।

—स्वगृही या उच्चस्थ हो तो भाग्यवान, देशाटन से लाभ, धार्मिक अभिरुचि।

—मेष या वृश्चिक का हो तो पितृधन की प्राप्ति।

—वृष या तुला का हो तो देशाटन, पिता से विरोध।

—मिथुन या कन्या का हो तो यशस्वी!

—कर्क राशिस्थ हो तो सामान्य।

— सिंह राशिस्थ हो तो धन-सम्पन्न और उदार।

—मकर या कुम्भराशि का हो तो धन की कमी, गुरुजनों से विरोध ईश्वर में अविश्वास।

दशम भाव में स्थित गुरु

—अधिक विद्वान वेदादि धर्म ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि।

—व्याख्यानदाता, उपदेशक धर्म गुरु. राजनायक आदि।

—स्वगृही या उच्चस्थ हो तो पिता का सुख, अधिक धन-प्राप्ति, देश-परदेश में सुयश, राज सम्मान आदि।

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो धार्मिक अभिरुचि, कलाप्रेमी यशस्वी।

—वृषभ या तुला का हो तो राज से सम्मानित।

—मिथुन या कन्या का हो तो विद्वान, काव्य आदि का प्रणेता।

—कर्क राशिस्थ हो तो पितृ-सुख सामान्य।

—सिंह राशिस्थ हो तो राज-सम्मान, अच्छी पहुँच।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो राज-दण्ड, व्यापार में हानि तथा पिता की ओर से कष्ट।

एकादश भाव में स्थित गुरु

—उदारचेता, परोपकारी तथा भाग्यवान, सुदृढ़ आय।

—अच्छा स्वास्थ्य, परिवार में सुख-शान्ति।

—स्वगृही या उच्चस्थ हो तो व्यापार में लाभ, यश-वृद्धि, वस्त्रालंकार की उपलब्धि।

—मेष या वृश्चिक राशिस्थ हो तो विद्वान्, धन-सम्पन्न किंतु पुत्रों की ओर से दुःखित। वृषभ का हो तो सब क्षेत्रों में सफल।

—तुला या कर्क का हो तो सामान्य आय।

—मिथुन या कन्या का हो तो निन्दित साधनों से आय।

—सिंह राशि का हो तो धन वाहन की प्राप्ति।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो धन का अभाव।

द्वादश भाव में स्थित गुरु

—शिक्षित, स्थिर चित्त तथा विवेकी।

—धन की दृष्टि से कृपण, स्वास्थ्य सामान्य।

—स्वगृही या उच्चस्थ हो तो व्यापार में लाभ; शरीर से स्वस्थ, शत्रुओं पर विजयी, धार्मिक अभिरुचि।

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो अस्वस्थ, अनाचारी तथा शत्रुओं से आशंकित।

—वृषभ या तुला का हो तो धन और विवेक वृद्धि।

—मिथुन या कन्या का हो तो कामुक, अस्वस्थ तथा बुद्धिहीन, अविवेकी।

—कर्क राशिस्थ हो तो आय-व्यय सामान्य।

—सिंह राशिस्थ हो तो धनके दुरुपयोग तथा आचरणहीनता में रत

—मकर या कुम्भ राशि का हो तो अस्वस्थ, अपव्ययी तथा शत्रु-भय से आतंकित।

शुक्र ग्रह का भावानुसार फलादेश

शुक्र ग्रह का भी एक विशिष्ट महत्व है। इसके शुभ स्थान के फलस्वरूप जातक सन्तानवान, बली, पराक्रमी, तथा हृष्ट-पुष्ट होता है।

विवाह प्रेम दाम्पत्य जीवन, पुत्र या पुत्री आदि में भी शुक्र का भारी प्रभाव रहता है। अन्नादि की परिपाक क्रियाओं (रासायनिक परिवर्तनों) के अन्त में शुक्र (वीर्य) का अधिक या अपेक्षित मात्रा में निर्माण शुक्रग्रह के ही अधीन समझा जाता है।

प्रथम भाव में स्थित शुक्र

—सुशिक्षित मधुरभाषी, व्यवसाय-कुशल।

—स्वस्थ, प्रजनन में समर्थ, सन्तानवान।

—स्वगृही या उच्च का शुक्र प्रथम भाव (लग्न भाव) में हो तो धनवान, स्वस्थ, दीर्घायुष्य, स्त्री की ओर से सुखी तथा देशाटन से लाभ।

—मेष या वृश्चिक राशिस्थ हो तो पराक्रमी, स्वस्थ दीर्घायुष्य।

—मिथुन या कन्या राशिस्थ हो तो अस्वस्थ, छली, प्रपंची तथा निन्दित।

—कर्क राशिस्थ हो तो स्वास्थ्य और व्यापार सामान्य।

—सिंह राशिस्थ हो तो क्रोधी, रूखे स्वभाव, का, व्यापार में असफल।

—धनु या मीन राशि का हो तो वात रोगी तथा प्रपंची।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो धनवान, यशस्वी, विनम्र तथा स्वस्थ होता है।

द्वितीय भाव में स्थित शुक्र

—बुद्धिमान्, कार्य-कुशल, धन की दृष्टि से भाग्यवान।

—धन, सन्तान, स्त्री, वस्त्रालंकार आदि से सम्पन्न।

—स्वगृही या उच्च का हो तो परिवारीजनों से सुख तथा धन का सम्पन्नता।

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो कृपण।

—मिथुन या कन्या राशि का हो तो आर्थिक स्थिति सामान्य।

—कर्क राशिस्थ हो तो स्वार्थी तथा प्रपंची।

—सिंह राशिस्थ हो तो धन-लाभ, राज सम्मान की प्राप्ति।

—धनु या मीन का हो तो उदार, परोपकारी, विदुषी और स्नेहमयी पत्नी, आर्थिक स्थिति।

—मकर या कुम्भ का हो तो भाइयों के भरण-पोषण में समर्थ।

तृतीय भाव में स्थित शुक्र

—विद्वान, मेधावी, व्यापार-कुशल, भ्रातृ प्रेमी।

—साहसी, वीर, दाम्पत्य जीवन में सफल तथा पुत्रवान।

—स्वगृही या उच्च का शुक्र हो तो धन-सम्पन्न, उद्यमी तथा भाइयों की ओर से सुखी।

मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो बुद्धिमान, किन्तु कृपण।

—मिथुन या कन्या राशि का हो तो धन की कमी, भाइयों की ओर से कष्ट।

—कर्क राशि का हो तो भाइयों का सुख उपलब्ध।

—सिंह राशिस्थहो तो परिश्रमी, भाग्यवान तथा यात्रा में रुचि वाला।

—धनु या मीन राशि का हो तो भाइयों से विरोध।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो निम्नवर्ग से धन-लाभ।

चतुर्थ भाव में स्थित शुक्र

—धनवान, भूमि-भवन आदि से, वाहनादि से सम्पन्न मिष्टभाषी।

—बली, पराक्रमी, कार्यादि में सक्षम तथा माताकी ओरसे सुखी।

—स्वगृही या उच्च का शुक्र हो तो कृषि-कर्म से लाभ, मातृ सुख और मित्र-सुख की प्राप्ति।

—मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो धनवान और विद्वान्।

—मिथुन या कन्याराशि पर हो तो माता से अनबन तथा देशाटन

—कर्क राशि का हो तो यशस्वी, मातृ-भक्त।

—सिंह राशि का हो तो पशु-पालन से लाभान्वित, बुद्धिमान, यात्रा में रुचि।

—धनु या मीन राशि का हो तो सामान्य।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो निम्नवर्ग की सेवासे धनलाभ।

—शिक्षित, विद्वान्, विवेकी, शास्त्रादि के अध्ययन की रुचि।

पंचम भाव में स्थित शुक्र

—शिक्षित, विद्वान, विवेकी, शास्त्रादि के अध्ययन की रुचि।

—लेखक, सम्पादक, चिकित्सक, ज्योतिषी आदि।

—स्वगृही या उच्चस्थ हो तो मेधावी तथा पुत्र सुख से सम्पन्न।

—मेष या वृश्चिक राशि हो तो विद्वान तथा राजकाज में चतुर।

—मिथुन या कन्या राशि पर हो तो मूर्ख, सन्तान-सुख से वंचित।

—कर्क राशि का हो तो अधिक पुत्रियाँ।

—सिंह राशि का हो तो अधिक पुत्र, राज सम्मान से सम्मानित एवं सुखी।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो मेधावी, विवेकी, किन्तु सन्तान के अभाव में दु:खित।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो मूर्ख, छली-प्रपंची तथा धन, सन्तान से दु खित।

षष्ठ भाव में स्थित शुक्र

—सामान्य शिक्षा, विवेक की कमी, पत्नी आदि से विरोध, शत्रुओं से विवाद।

—पिता का अल्प सुख वीर्य दोषों से पीड़ित, दाम्पत्य-जीवन में असफलता। यदि जातक स्त्री हो तो माता का अल्प सुख।

—स्वगृही या उच्च का हो तो रोग और शत्रु की आशंका, मातृ पक्ष से सुख की प्राप्ति।

—मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो सामान्य।

—मिथुन या कन्या राशि पर हो तो धन और स्वास्थ्य की हानि

—कर्क राशिस्थ हो तो शत्रु भय।

—सिंह राशिस्थ हो तो राजदण्ड, धन का व्यर्थ व्यय।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो धन की सम्पन्नता अथवा पुत्रादि के द्वारा धन लाभ। शत्रुओं पर विजय।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो विष दुर्घटना आदि से प्राणांत की आशंका।

सप्तम भाव में स्थित शुक्र

—आकर्षक व्यक्तित्व, साहसी बलवान, सुखी दाम्पत्य जीवन।

—कम आयु में विवाह, पत्नी के ग्रहों की प्रबलता में भाग्योदय।

—स्वगृही या उच्च का हो तो व्यापार में लाभ, यश वृद्धि, स्त्री का सुख तथा देशाटन।

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो धन की कमी, शास्त्रादि के व्यापार से लाभ, पत्नी से प्रेम।

—मिथुन या कन्या राशि का हो तो धन की कमी, परदेश गमन स्त्री के चरित्र में शंका।

—कर्क राशि का हो तो विदुषी पत्नी।

—सिंह राशि का हो तो स्त्री से अनबन।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो धनवान किन्तु चारित्रिक दुर्बलता

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो स्त्री चरित्र में आशंका।

अष्टम भाव स्थित शुक्र

—बुद्धिमान, किन्तु क्रोधी एवं दीर्घायुष्य।

—स्वास्थ्य की दृष्टि से दुर्बल, प्रमेह, स्वप्नदोष आदि से पीड़ित।

— स्वगृही या उच्च का हो तो स्वस्थ, दीर्घायुष्य, धन से सम्पन्न।

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो रोगी तथा अस्वस्थ रहेगा।

—मिथुन या कन्या राशि का हो तो निर्धन, रोगी व अल्पायुष्य।

—कर्क राशिस्थ हो तो स्त्री रोग।

—सिंह राशि का हो तो अस्वस्थ, अल्पायुष्य ।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो दुर्बल चरित्र, धन-सम्पन्न ।

—मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो अल्पायु ।

नवम भाव में स्थित शुक्र

—धार्मिक विचार, उदार, नम्र, चतुर, शिक्षित तथा साहसी ।

—गृहस्थ जीवन में सुख, धन की सम्पन्नता ।

—स्वगृही या जीवन का हो तो भाग्ययान, देशाटन से धन और यश की प्राप्ति ।

—मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो पुत्र तथा स्त्री की ओर से सुखी, स्वस्थ दीर्घायुष्य तथा संघर्षों पर विजयशील ।

—मिथुन या कन्या राशि पर हो तो भाग्यहीन, देशाटन में कष्ट एवं अपव्यय ।

—कर्क राशिस्थ हो तो परदेश से धनोपाजन ।

—सिंह राशिस्थ हो तो भाग्यवान ।

—धनु या मीन राशि का हो तो अल्प सुख, अर्थ-कष्ट ।

—मकर या कुम्भ राशि का हो तो निम्न वर्ग से धन की प्राप्ति, आचरण की दुर्बलता ।

दशम भाव में स्थित शुक्र

—स्वावलम्बी, परिश्रमी, विवेकी, पितृ-सुख से उपकृत ।

—धनोपार्जन में चतुर, कृपण, किन्तु भोग-विलास में अपव्ययी ।

—स्वगृही या उच्च का शुक्र हो तो यशस्वी, राज्य एवं पिता के धन लाभान्वित ।

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो राज-सम्मान ।

—मिथुन या कन्या राशि का हो तो पितृ सुख में वञ्चित ।

—कर्क राशिस्थ हो तो धार्मिक विचार, सब प्रकार से सुखी ।

—सिंह राशि का हो तो राज्य से सम्बन्ध खराब ।

—धनु या मीन राशि का हो तो यशस्वी।

—मकर या कुम्भ राशि का हो तो धन सम्पन्न, राज्य द्वारा पुरस्कृत।

एकादश भाव में स्थित शुक्र

—सुन्दर, सफल, हृष्ट-पुष्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

—सभी क्षेत्रों में लाभान्वित, दाम्पत्य जीवन सुखी, आय सुदृढ़।

—स्वगृही या उच्च का हो तो बुद्धिलाभ, पुत्रादि से सम्पन्न।

—मेष या वृश्चिक राशि का हो तो धनवान, राजकाज में चतुर।

—मिथुन या कन्या का हो तो धनहीन

—कर्क राशि का हो तो दयावान, आय सामान्य।

—सिंह राशिका हो तो कार, स्कूटर, घोड़ा आदि वाहन की प्राप्ति

—धनु या मीन राशि का हो तो धनवान, पुत्रवान।

—मकर या कुम्भ राशि का हो तो विधर्मियों से धन-लाभ।

द्वादश भाव में स्थित शुक्र

—शिक्षित, बुद्धिमान, शुक्र के सभी गुणों से समन्वित।

—सशक्त, हृष्ट, आकर्षक तथा धनादि से सम्पन्न।

स्वगृही या उच्च का हो तो धनवान, नाना-मामा की ओर से धन की प्राप्ति।

—मेष या वृश्चिक का राशिस्थ हो तो व्यसनी एवं धनहीन।

—मिथुन या कन्या राशि पर हो तो धन का अपव्यय।

—कर्क राशिस्थ हो तो अनाचार में धन का नाश।

—सिंह राशिस्थ हो तो धनहीन।

—धनु या मीन राशि का हो तो धार्मिक कार्यों में व्यय तथा परमानन्द की प्राप्ति।

—मकर या कुम्भ राशि का हो तो अग्नि अथवा चोर आदि के द्वारा सम्पत्ति का नष्ट होना।

शनि ग्रह का भावानुसार फलादेश

यह ग्रह अधिक क्रूर माना जाता है। किन्तु क्रूर होते हुए भी अनेक स्थितियों में मित्र एव शुभ भी बन जाता है। प्रथम स्थिति में यह अधिक कष्टकारी होता है, जबकि शुभ योग के साथ रहने पर पूर्ण रूप से अनुकूल और सहायता करने वाला सिद्ध होता है। इसका भिन्न-भिन्न भाव में भिन्न-भिन्न फल सामने आता है।

लग्न या प्रथम भाव में स्थित शनि

——सामान्य स्वास्थ्य, आकर्षक व्यक्तित्व, सुखी जीवन, उच्च पद।

——साहसी, क्रोधी, चचल, विवेकशील, उदार तथा नीतिज्ञ।

——उच्च या स्वगृही हो तो रूपवान, धनवान सवसे उच्च पद वाला परोपकारी।

——वृषभ या तुला राशि का हो तो शुभ कर्म करने वाला, सामान्य व्यापारी, स्वस्थ शरीर।

——मिथुन या कन्या राशि का हो तो पुत्र से विरोध, स्वास्थ्य अच्छा

——कर्क राशिस्थ हो माता का अल्प सुख।

——सिंह राशिस्थ हो तो पिता से रुष्ट, व्यापार में आत्म-निर्भर।

——धनु या मीन राशि का हो तो मित्रों से विरोध, सामान्य स्वास्थ्य

द्वितीय भावस्थ या धन भावस्थ शनि

——विवेक, बुद्धि की कमी, धनाभाव से कष्टमय जीवन, स्वास्थ्य की कमी।

——मातृ-सुख अल्प, पिता के धन का नष्ट होना, व्यापार सामान्य।

——स्वगृही या उच्च का हो तो धनवान।

——मेष या वृश्चिक राशि का हो तो परिवारीजनों से बैर।

——वृषभ या तुला का हो तो धनहीन, अस्वस्थ।

——मिथुन या कन्या का हो तो अल्प धन।

——कर्क राशिस्थ हो तो परिवारी जनों से अनबन।

——सिंह राशिस्थ हो तो धनाभाव तथा रोग।

——धनु या मीन राशि का हो तो कृपण, स्वस्थ, दीर्घायुष्य।

तृतीय भाव में स्थित शनि

——सबल, स्वस्थ, पराक्रमी, परिश्रमी, यात्रा में प्रवृत्त।

——आय की दृष्टि से परेशान, व्यय अधिक, भाइयों की ओर से दुःखी।

——स्वगृही या उच्च का हो तो देशाटन से धन-लाभ।

——मेष या वृश्चिक राशि का हो तो धनहीन तथा अल्प परिवार का, भाइयों की कमी।

——वृषभ या तुला राशि का हो तो बलवान, भाइयों से समादृत, विदेश यात्रा से लाभान्वित।

——मिथुन या कन्या का हो तो बहिनों की ओर से अर्थ लाभ।

— कर्क राशिस्थ हो तो सन्तोषी, भ्रातृ-प्रेमी।

——सिंह राशिस्थ हो तो भाइयों या परिवारीजनों से अनबन, परिश्रम से धन लाभ।

——धनु या मीन राशि का हो हो भाइयों से विरोध।

चतुर्थ भाव में स्थित शनि

——अल्प बुद्धि, चचल चित्त, क्रोधी, प्रपंची।

——बलहीन, निम्न स्वास्थ्य, दाम्पत्य जीवन सामान्य।

——स्वगृही या उच्च का हो ती कृषि-कर्म से लाभ, मातृ-सुख का सौभाग्य, घर, वाहन आदि की सम्पन्नता।

——मेष या वृश्चिक राशि का हो तो माता तथा मित्रों से विरोध

——भृषभ या तुला राशि का हो तो माता से कष्ट प्राप्ति।

— मिथुन या कन्या राशिस्थ हो तो धन हीन।

—कर्क राशिस्थ हो तो मित्रों, परिवारीजनों तथा पिता आदि से सुख की प्राप्ति। माता से अल्प सुख।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो कृषि-कर्म से लाभ तथा माता से विशेष सुख।

पंचम भाव में स्थित शनि

—शिक्षा सामान्य, उदर रोग से पीड़ित, अस्वस्थ।

—ईश्वर में अश्रद्धा, सन्तान की कमी, सन्तान दाम्पत्य जीवन।

—स्वगृही हो तो बुद्धिमान, पत्र आदि से भाग्यशाली।

—मेष या वृश्चिक राशिस्थ हो तो पुत्र का अभाव, विद्या की कमी।

—वृषभ या तुला राशि का हो तो धनहीन पुत्र का अभाव दत्तक पुत्र की प्राप्ति।

—मिथुन या कन्या राशि का हो तो पुत्र कम, पुत्रियाँ अधिक।

—कर्क राशिस्थ हो तो छल-प्रपच से युक्त।

—सिंह राशिस्थ हो तो राज-काज में चतुर।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो धन की कमी और पुत्री के विवाह आदि की चिन्ता।

षष्ठ भाव में स्थित शनि

—रौबीला व्यक्तित्व, साहसी, पराक्रमी, भय-रहित।

—दीर्घायुष्य, धन से सम्पन्न, भाग्यशाली, किन्तु वादविवादप्रिय।

—स्वगृही या उच्च का शनि हो तो रोग-रहित, दीर्घ जीवी।

—मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो रोग और शत्रुओं की प्रबलता

—वृषभ या तुला राशि पर हो तो विजयी, धनवान।

—मिथुन या कन्या राशि पर हो तो स्त्री अयोग्य, भाग्यहीन, मुकदमे में असफलता।

—कर्क राशिस्थ हो तो अस्वस्थ।

—सिंह राशिस्थ हो तो मातृ पक्ष से वैर।

—धनु या मीन राशि का हो तो अल्प धन, किन्तु राज्य में कोई उच्च पद।

सप्तम भाव में स्थित शनि

—साहसी, परिश्रमी, निरालस्य, कार्यक्षम।

—शिक्षा से प्रेम, ईश्वर में विश्वास, क्षुद्र सिद्धि में रुचि।

—स्वगृही या उच्च का हो तो व्यापार मे लाभ, सुखी दाम्पत्य जीवन।

—मेष या वृश्चिक का हो तो स्त्री का चरित्र सन्देहास्पद।

—वृषभ या तुला का हो तो अस्वस्थ, स्त्री से असन्तुष्टि।

—मिथुन या कन्या राशिस्थ हो तो स्त्री के आचरण से असन्तोष।

—कर्क राशिस्थ हो तो चारित्रिक दौर्बल्य, पत्नी भी सन्दिग्ध चरित्र वाली।

—सिंह राशि का हो तो धन की कमी अथवा व्यापार में धन की हानि।

—धनु या मीन राशि का हो तो दुर्बल चरित्र, कामुक तथा भोग विलास मे अपव्यय करने वाली।

अष्टम भाव में स्थित शनि

—स्थूल शरीर, आलसी, परिश्रम से बचने वाला।

—उदार, परोपकारी, पितृ-सुख की कमी, राज भय से भयभीत अल्पायु।

—स्वगृही या उच्च का शनि हो तो स्वस्थ एवं दीर्घजीवी।

—मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो रोगी, अल्पायुष्य।

—वृषभ या तुला राशि का हो तो धन हीन, अस्वस्थ।

—मिथुन या कन्या राशि पर हो तो चरित्र हीन।

—कर्क राशि पर हो तो अधिक परिश्रमशील, स्वस्थ, दीर्घजीवी।

—सिंह राशिस्थ हो तो वीर्य-दोष आदि से पीड़ित।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो याचना से आजीविका, आयु सामान्य।

नवम भाव में स्थित शनि

—आर्थिक स्थित सामान्य, विवेकी, परिश्रमी, किन्तु आय से अधिक व्यय।

—भरा-पूरा परिवार, पत्नी सुशील, गृहस्थ जीवन सफल।

—स्वगृही या उच्च का शनि हो तो धन, धान्य, परिवार आदि की दृष्टि से सुखी।

—मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो धन की दृष्टि से भाग्यहीन।

—वृषभ या तुला राशि पर हो तो धर्म में अश्रद्धा उच्छृंखल विचारधारा, अनाचार में अपव्यय।

—मिथुन या कन्या राशिस्थ हो तो पितृ धन से वंचित।

—कर्क राशिस्थ हो तो अल्प सौभाग्य।

—सिंहस्थ हो तो चारित्रिक दौर्बल्य।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो सामान्य।

दशम भाव में स्थित शनि

—स्वास्थ्य सामान्य, पिता अस्वस्थ, चिन्ता, खिन्नता।

—धन की दृष्टि से आत्म-निर्भर, कार्यक्षम योग्य और उदार।

—स्वगृही या उच्च का हो तो माता-पिता के सुख से उपकृत, सौभाग्यशाली।

—मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो राज-दण्ड का भय।

—वृषभ या तुला राशिस्थ हो तो कृपण, किन्तु तीर्थ यात्रा जैसे शुभ कार्यों मे व्यय करने वाला।

—मिथुन या कन्या राशिस्थ हो तो किसी पित्त-प्रधान व्याधि से पीड़ित ।

—कर्क राशि पर हो तो माता से द्वेष ।

—सिंह राशि पर हो तो पिता की ओर से कष्ट ।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो राज-सम्मान तथा धन लाभ ।

एकादश भाव में स्थित शनि

—बुद्धिमान, माता-पिता से प्राप्त धन का सदुपयोग करने वाला।

—व्यापार में चतुर, विज्ञान में कुशल तथा कार्यक्षम ।

—स्वगृही या उच्च का हो तो सन्तान की कमी, किन्तु व्यापार में अधिक लाभ ।

—मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो धन की कमी ।

—वृषभ या तुला पर हो तो धन से सम्पन्न ।

—मिथुन या कन्या पर हो तो कृषि-कर्म से लाभ ।

—कर्क राशि पर हो तो व्यापार में अधिक सफलता।

—सिंह राशि पर हो तो सामान्य ।

—धनु या मीन राशि पर हो तो धनवान, मेधावी ।

द्वादश भाव में स्थित शनि

—स्वास्थ्य सामान्य, क्रोधी, कटुभाषी, उदारता और परोपकार में अरुचि ।

—आय कम, व्यय अधिक, पूर्वजों का प्राप्त धन भी नष्ट ।

—स्वगृही हो तो धनवान, कृपण, स्वस्थ ।

—मेष या वृश्चिक राशिस्थ हो तो रोगी, धनाभाव से खिन्न ।

—वृषभ या तुला राशि पर हो तो अस्वस्थ, अधिक व्यय ।

—मिथुन या कन्या राशि पर हो तो चर्म रोग या उदर विकार ।

—कर्क राशि पर हो तो नेत्र-व्याधि।

—सिंह राशिस्थ हो तो मद्य आदि व्यसनों में धन का दुरुपयोग।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो शरीर अस्वस्थ, शुभ कर्मों में धन सदुपयोग।

राहु का भावानुसार फलादेश

यह ग्रह शनि के समान प्रभावशील माना जाता है, किन्तु शनि एक वास्तविक ग्रह है, जब कि इसे छाया ग्रह मानते हैं।

राहु का स्वराशि कन्या है, बुध की भी एक स्वराशि वही है किन्तु राहु मकर राशि का अधिपति है और उससे प्रभावित जातक में मकर राशि जैसे गुण प्रविष्ट रहते हैं,

प्रथम भाव में स्थित राहु

सामान्य स्वास्थ्य, क्रोधी स्वभाव, पराक्रमी, बाल्य काल में निर्धन।

परिश्रम से बचने वाला, परावलम्बी, मस्तिष्क-दौर्बल्य पीड़ित।

स्वगृही य उच्च का राहु हो तो स्वस्थ, उदार चेता और परोपकारी होगा।

मेष, वृषभ या कर्क राशियों का हो तो धार्मिक विचार, उदार चेता, व्यापार में लाभ तथा अच्छा स्वास्थ्य।

मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक आदि राशियों का अस्वस्थताप्रद।

सिंह राशिस्थ हो तो मुख सम्बन्धी रोग।

धनु या मीन में स्थान का हो तो रोग कारक।

द्वितीय भाव में स्थित राहु

धन के विषम में सामान्य, शुभ योग में धन-सञ्चय का अवसर।

क्रोधी, रूखे स्वभाव का, पराक्रमी, शत्रु भय शंकित।

स्वगृही या उच्च का हो तो धन की ओर से सुखी।

मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ का हो तो पारिवारिक सुख का अभाव, आर्थिक हानि।

कर्क, वृष या तुला का हो तो परिश्रमी और धन-सम्पन्न।

तृतीय भाव में स्थित राहु

अत्यन्त साहसी, बलवान, रौबीला व्यक्तित्व।

भाइयों से भरा पूरा परिवार, धन-धान्य, भूमि आदि की सम्पन्नता।

यदि स्वगृही या उच्चकोटि का हो तो धनवान, भाइयों से समादृत।

मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर या कुम्भ राशि का हो तो अस्वस्थता तथा भाइयों से अनबन।

कर्क, वृष, तुला राशि का हो तो परिश्रमी धन से सम्पन्न।

धनु या मीन का हो तो भाइयों को कष्ट।

चतुर्थ भाव में स्थित राहु

मातृ-सुख से वंचित, मन में अस्थिरता।

गृहस्थ जीवन सामान्य, आय कम, व्यय अधिक।

यदि स्वगृही या उच्च का हो तो घर, वाहन तथा वस्त्राभूषण की प्राप्ति।

मेष, वृश्चिक, कर्क, सिंह, मकर, कुम्भ का हो तो राज्य से धन की प्राप्ति, माता तथा स्त्री का सुख।

मिथुन या कन्या का हो तो धन की कमी।

—वृषभ या तुला का हो तो खराब लक्षण।

—कर्क राशि में हो तो स्वजनों से लाभ।

पंचम भाव में स्थित राहु

—चित्त में अस्थिरता, अल्प शिक्षा, गृहस्थ जीवन सामान्य।

—मेष, सिंह, वृश्चिक. मकर या कुम्भ पर हो तो देशाटन आदि में प्रवृत्त, सन्तान से सम्पन्न।

—वृषभ तुला, सिंह, राशि पर हो तो अल्प-सन्तान, विदेश-यात्रा यदि स्वगृही या उच्च का हो तो पुत्र-प्राप्ति।

—वृष, तुला, मकर या कुम्भ का हो तो राज्य में पदाधिकारी।

—धनु या कन्या राशि का हो तो ईमानदार।

षष्ठ भाव में स्थित राहु

—स्वास्थ्य खराब, वातरोग या उदररोग।

—साहसी, परिश्रमी. योजनाबद्ध रूप से कार्य करने वाला।

—यदि राहु उच्च का स्वगृही हो तो देशाटन में लाभ, मुकदमा और रोग से निवृत्ति, सत्य की प्रवृत्ति।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो शत्रुओं पर विजय।

—वृष, तुला या कर्क राशिस्थ हो तो सुखी, संयमी।

—धनु या मीन राशि का हो तो शत्रु का नाश।

सप्तम भाव में स्थित राहु

—स्वास्थ्य सामान्य या दुर्बल, दाम्पत्य जीवन भी सामान्य।

—कामुक, किन्तु स्त्री की तृप्ति में असमर्थ, दाम्पत्य जीवन में खिन्नता।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर या कुम्भ राशि का हो तो दो पत्नी होने के कारण दाम्पत्य सुख का अभाव, चित्त में खिन्नता।

—वृषभ, तुला या कर्क राशिस्थ हो तो पत्नी अस्वस्थ।

—धनु या मीन राशि का हो तो स्त्री-सुख का अभाव, देशाटन में रुचि।

अष्टम भाव में स्थित राहु

—स्वास्थ्य सामान्य, उदर रोग या अजीर्ण की शिकायत, अल्पायु।

—पितृधन से वंचित, परिवारीजनों से अनबन।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो धनहीन तथा रोगग्रस्त।

—वृषभ, तुला या कर्क राशिस्थ हो तो आय कम, व्यय अधिक, स्वास्थ्य खराब।

—धनु या मीन राशि का हो तो अस्वस्थ तथा अल्पायु।

नवम भाव में स्थित राहु

—धार्मिक, विचार, दान, धर्म, तीर्थयात्रा आदि में रुचि।

—आर्थिक, सम्पन्नता, स्वास्थ्य सामान्य।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो आचरण की कमी से धन का अपव्यय।

—वृषभ, तुला या कर्क राशिस्थ हो तो आचरणहीनता धन का ह्रास।

—धनु या मीन राशिस्थ हो तो अल्प भाग्य। आय कम, व्यय अधिक।

दशम भाव में स्थित राहु

—विवेक, विचारशील, उदार एवं परोपकारी।

—स्वगृही या उच्च का हो यशस्वी तथा राज्य से सम्मानित।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ, राशिस्थ हो तो राज्य से सुख की प्राप्ति, पितृ-सुख से उपकृत।

—वृषभ-तुला, कर्क राशिस्थ हो तो माता-पिता के धन की प्राप्ति राज-सम्मान की उपलब्धि।

—धनु या मीन राशि पर हो तो पिता से अनबन, शत्रुओं से भय की निवृत्ति।

एकादश भाव में स्थित राहु

—समझदार, परिश्रमी, कार्यक्षम, सामान्य आय।

—दाम्पत्य जीवन सुखी, सुशील पत्नी, योग्य सन्तान, आय के उचित स्रोत।

—यदि स्वगृही या उच्च का हो तो पुत्रवान, विवेकी।

—यदि मेष, वृश्चिक, सिंह मकर या कुम्भ राशि का हो तो विवेकहीन, धनहीन, प्रपंची।

—यदि वृषभ, तुला या कर्क राशि का हो तो धनवान, पुत्रवान।

—यदि धनु या मीन राशिस्थ हो तो मूर्ख, सन्तानहीन तथा धनहीन।

द्वादश भाव में स्थित राहु

—शिक्षित, विवेकी, दान, धर्म परोपकार में रुचि, धर्म में व्ययशील।

—स्वास्थ्य सामान्य अथवा वात रोग, आंतरोग. अर्श, कब्ज, आदि से परेशानी तथा औषधादि में अधिक व्यय।

—यदि स्वगृही या उच्च का हो तो धनवान, कृपण एवं स्वस्थ।

—यदि मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर या कुम्भ राशि हो तो स्वस्थ, कम पुत्र, कन्या अधिक व्यय अधिक।

—यदि वृषभ, तुला या कर्क राशिस्थ हो तो नेत्ररोग या अन्य कोई रोग, कम आयु, आचरणहीन तथा प्रपंची।

—यदि धनु या मीन राशिस्थ हो तो अस्वस्थ, धनहीन तथा कर्जदार

★

केतु का भावानुसार फलादेश

यह ग्रह मंगल ग्रह के समान प्रभावशाली माना जाता है। इसकी गणना भी क्रूर ग्रहों में की जाती है। यह भी राहु के समान छायाग्रह है। यदि यह शुभ हो तो जातक को सौभाग्यशाली बना देता है, किन्तु अशुभ हुआ तो विपरीत फल प्रदर्शित करेगा। सामान्य इसका फल राहु के समान भी हो सकता है।

प्रथम भाव में स्थित केतु

—उच्च शिक्षित, किन्तु विवेक की कमी, चंचल।

—साहस की कमी; उत्साहहीन, आलसी, परिश्रम न करने वाला।

—स्वगृही या उच्च राशि का हो तो अच्छे व्यापार और धन के सम्बन्ध में आत्म-निर्भरता।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर अथवा कुम्भराशि पर तो दुश्चिन्ता।

—वृषभ, तुला' कर्क का हो तो चोट रक्तस्राव।

—कर्क राशिस्थ हो तो रोग तथा धन सन्तानादि की कमी।

द्वितीय भाव में स्थित केतु

विचारशील, मध्यम शिक्षित, धन की दृष्टि से दुर्बल।

—मित्रादि द्वारा प्रशसित, परिश्रमी, किन्तु आर्थिक कठिनाइयों से व्याप्त।

—स्वगृही या उच्च का हो तो धन-लाभ, आर्थिक स्थिति सुदृढ़।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ आदि पर हो तो द्विभार्या योग, मानसिक कष्ट।

—वृषभ, तुला कर्क का हो तो शरीर में आघात।

—मिथुन, कन्या राशियों पर आर्थिक स्थित सामान्य।

तृतीय भाव में स्थित केतु

—परिश्रमी, उत्साही, शत्रु-जेता, भ्रातृ सुख से सुखी।

—व्यापार, नौकरी आदि में उन्नति के अवसर, यात्रा से लाभ।

—स्वगृही या उच्च का हो तो धनी; भाई का स्नेही।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ का हो तो रोग, भ्रातृ-सुख का अभाव।

चतुर्थ भाव में स्थित केतु

—सामान्य शिक्षा, विवेक की कमी, धनोपार्जन में परेशानी।

—पत्नी से अनबन, मित्र से द्वेष अप्रतिष्ठा।

—स्वगृही या उच्च का हो तो घर, धन, वस्त्राभूषण की प्राप्ति।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ का हो तो गृह-लाभ।

—वृषभ, तुला, कर्क का हो तो मित्रों की ओर से कष्ट।

—मिथुन, कन्या का हो तो धन, वाहन की कमी।

पंचम भाव में स्थित केतु

—अविवेकी, अल्प शिक्षित, जीवन में अशान्ति।

—दाम्पत्य जीवन सामान्य, सन्तान की ओर मे तिरस्कृत।

—स्वगृही या उच्च का हो तो धन, सन्तान का सुख।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ का हो तो देशाटन में रुचि, सन्तानवान।

—वृषभ, तुला, कर्क का हो तो सन्तानहीन मिथ्याचारी।

—मिथुन या कन्या राशिस्थ हो तो सन्तान की कमी।

षष्ठ भाव में स्थित केतु

—विवेक की कमी, अल्प, शिक्षा, स्वभाव मे चिड़चिड़ापन।

—स्वगृही या उच्च का हो तो रोग से निवृत्ति, मुकदमे में सफलता।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर कुम्भ का हो तो रोग से मातृ-पक्ष से सुख।

—वृषभ, तुला, कर्क का हो तो सौभाग्यशाली, मुकदमे में जीत।

—मिथुन या कन्या का हो तो शत्रु का निग्रह।

सप्तम भाव में स्थित केतु

—स्वास्थ्य सामान्य, चिन्ता ग्रस्त, पति-पत्नी में अनवन, धन की कमी।

—स्वगृही या उच्च का हो तो देशाटन से लाभ तथा स्त्री सुख की उपलब्धि।

—मेष, वृश्चिक. सिंह, मकर कुम्भ का हो तो द्विभार्या योग या दुःख की प्राप्ति।

—वृषभ, तुला, कर्क का हो तो पत्नी अस्वस्थ।

—मिथुन या कन्या का हो तो स्त्री-सुख का वचना।

अष्ठम भाव में स्थित केतु

—धार्मिक भावना, दान, परोपकार में रुचि, दीर्घायु।

—धन की सम्पन्नता, आय अधिक, व्यय कम।

—स्वगृही या उच्च का हो तो स्वस्थ तथा अल्पायु।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर. कुम्भ का हो तो धन राशि तथा दुर्बल स्वास्थ्य।

—वृषभ, तुला, कर्क का हो तो जीवन कष्टमय।

— मिथुन या कन्या का हो तो अस्वस्थ, अल्पायु।

नवम भाव में स्थित केतु

—विवेकी, आत्म-निर्भर धर्मज्ञ, धर्म कार्यों में धन का व्यय।

—दाम्पत्य जीवन सुखी, पत्नी सुशील और विनम्र. व्यय के अनुसार आय।

—स्वगृही या उच्च का हो तो भाग्यवान।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ का हो तो आचरण दोष।

—वृषभ, तुला, कर्क का हो तो भाग्यहीन।

दशम भाव में स्थित केतु

—विवेक, आत्म-निर्भर, धन से सम्पन्न।

—पत्नी विनम्र सुशील, दाम्पत्य जीवन सफल।

—स्वगृही या उच्च का हो तो यशस्वी, राज्य से सम्मानित, पितृ-सुख से उपकृत।

- मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ का हो तो राज-सम्मान।

—वृषभ, तुल; कर्क का हो तो माता-पिता के धन की प्राप्ति।

—मिथुन या कन्या का हो तो पिता से अनबन।

एकादश भाव में स्थित केतु

—स्वस्थ शरीर, पत्नी दुर्बल किन्तु सुशील, आय के स्रोत अच्छे।

—पारिवारिक जीवन सुखी,सुयोग्य पुत्र-पुत्रियाँ आय में दृढ़ता।

—स्वगृही या उच्च का हो तो मेधावी धन, पुत्रादि से सम्पन्न।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ का हो तो मूख प्रपची और धनहीन, आय के साधन अल्प, व्यय अधिक।

—वृषभ, तुला, कर्क का हो तो धन से सम्पन्न सन्तान की कमी।

—मिथुन या कन्या का हो तो धन-सन्तान से परेशान, शिक्षा और बुद्धि की भी कमी।

द्वादश भाव में स्थित केतु

—वात रोग या नेत्र से पीड़ित, सन्तानवान, व्यय अधिक।

—शिक्षित, विवेकी, बुद्धिजीवी, समाज में प्रतिष्ठित।

—स्वगृही या उच्च का हो तो स्वस्थ एवं धन, बुद्धि से सम्पन्न, व्यय कम आय अधिक।

—मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ का हो तो धन में सामान्य, अल्प सन्तान, किन्तु शरीर से स्वस्थ।

—वृषभ, तुला, कर्क का हो तो धन के मामले में आत्म-निर्भर, छल-बल से काम लेने वाला।

—मिथुन या कन्या राशि का हो तो धन सन्तान तथा विवेक बुद्धि की कमी।

☆

जन्म कुण्डली का विशेष अध्ययन

विभिन्न लग्नों के फल

जन्म कुण्डली का अध्ययन करने से पूर्व यह देखना आवश्यक होगा कि उसमें कौन कौन से ग्रह शुभ और अशुभ अथवा सामान्य या तटस्थ है। शुभ को ज्योतिषियों की भाषा में कारक और अशुभ को अकारक भी कहते हैं। इन्हें इस प्रकार समझिये—

१. मेष लग्न—मंगल; गुरु और सूर्य शुभ, इनमें भी गुरु अत्यधिक शुभ है। बुध, शुक्र, शनि, अशुभ इनमें बुध तीसरे और छटे भाव का

अधिपति होने के कारण अधिक अशुभ है। चन्द्रमा को तटस्थ समझना चाहिए।

२ वृषभ लग्न--मंगल बुध शनि और सूर्य शुभ, इनमें शनि नवें और दसवें भाव का स्वामी होने के कारण अत्यधिक शुभ होता है। चन्द्रमा और गुरु अशुभ तथा शुक्र तटस्थ होगा।

३. मिथुन लग्न--शुक्र और शनि अशुभ ग्रह हैं, इनमें भी शुक्र अत्यधिक शुभ है। मंगल गुरु और सूर्य अशुभ (मंगल अधिक अशुभ) तथा चन्द्रमा और बुध तटस्थ हैं।

४. कर्क लग्न—मंगल अत्यधिक शुभ, गुरु शुभ और बुध शुक्र अशुभ तथा सूर्य चन्द्रमा और शनि तटस्थ।

५. सिंह लग्न—सूर्य और मंगल शुभ, बुध और शुक्र अशुभ तथा शनि, चन्द्रमा और गुरु तटस्थ है।

६. कन्या लग्न—शुक्र शुभ, चन्द्र, मंगल और गुरु अशुभ तथा सूर्य, बुध और शनि तटस्थ है।

७. तुला लग्न--बुध और शुक्र शुभ तथा शनि अत्यधिक शुभ; सूर्य, चन्द्र और गुरु अशुभ तथा मंगल तटस्थ।

८. वृश्चिक लग्न--सूर्य और गुरु शुभ, चन्द्रमा सर्वाधिक शुभ बुध और शुक्र अशुभ तथा मंगल और शनि तटस्थ होगा।

९. धनु लग्न—सूर्य और मंगल शुभ, बुध शुक्र और शनि अशुभ तथा चन्द्रमा और गुरु तटस्थ।

१०. मकर लग्न—बुध और शनि शुभ, शुक्र अधिक शुभ, चन्द्र, मंगल और गुरु अशुभ तथा सूर्य।

११. कुम्भ लग्न--सूर्य, मंगल और शनि शुभ, शुक्र अत्यधिक शुभ, चन्द्र और गुरु अशुभ तथा बुध तटस्थ।

(१२) मीन लग्न—चन्द्र और मंगल प्रबल शुभ, सूर्य, बुध, शुक्र और शनि अशुभ ग्रह तथा गुरु तटस्थ ग्रह।

मिश्रित ग्रह

इन्हें योग कारण ग्रह भी कहते हैं। एक ही भाव (घर) में एक से अधिक ग्रह बैठकर मिश्रित फल उपस्थित करते हैं। यदि शुभ ग्रहों का योग होता है, जब जातक और अत्यन्त विद्वान्, सबल, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी बनाता है। जबकि अशुभ ग्रहों का योग हानिकारक परिणाम उपस्थित करता है। इसमें निम्न तथ्य ध्यान देने योग्य हैं—

(१) मंगल, गुरु और शनि में से जब एक ही ग्रह त्रिकोण बनाता और केन्द्र के सम्पर्क में रहता है तो योगकारक हो जाता है।

(२) त्रिकोण के स्वामी और केन्द्र के स्वामी एक साथ बैठें तो वे योगकारक होते हैं। ऐसे योगों का निर्माण चौथे-पांचवें भाव से, पाँचवें सातवें भाव से, पाँचवें-दसवें भाव से तथा नवें-दसवें भाव से होता है।

(३) नवें भाव का अधिपति चाहे किसी भी भाव में बैठा हो, यदि वह दसवें भाव के अधिपति को देखता है तो भी योग बनाता है।

(४) यदि नवे भाव का अधिपति दसवें भाग में और दसवें भाव का अधिपति नवें भाव में बैठा हो तो भी प्रबल योगकारक होता है।

सामान्य निर्देश

जन्म कुण्डली के अध्ययन से पूर्व निम्न तथ्यों पर भी ध्यान दें—

—शुभ, अशुभ और तटस्थ ग्रह, उसका भाव और प्रभाव।

—लग्न, लग्नेश, लग्न राशि, तथा उनकी प्रकृति-प्रभाव आदि।

—ग्रहों की परस्पर दृष्टि, परस्पर दृष्टि ग्रह, स्थानांतरण वाले ग्रह, त्रिकोण-केन्द्र सम्बन्ध एवं विविध ग्रह।

—प्रत्येक भाव (घर) तथा उसके स्वामी की स्थिति ।

—राशियां, उनकी दृष्टि तथा बाधक राशियाँ ।

—सौम्य ग्रह, क्रूर ग्रह और पापग्रह आदि तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों का प्रभाव ।

—महादशा अन्तदशा आदि ।

—मित्र क्षेत्रीय एवं शत्रु क्षेत्रीय ग्रह और उनके प्रभाव ।

इस प्रकार उक्त तथ्यों पर विचार करते हुए कुण्डली का अध्ययन करने से फलादेश में बहुत कुछ सफलता प्राप्त हो सकती है ।

अब अगले पृष्ठ पर कुछ विशिष्ट कुण्डलियों का विवेचन करके फलादेश-निर्णय के विषय में विधि-ज्ञान कराने का प्रयत्न करेंगे ।

——

विशिष्ट व्यक्तियों के ग्रहयोग

सूर्य का प्रभावशाली योग

यदि दसवें भाव में सूर्य हो तो वह जातक को सच्चरित्र, तेजस्वी, और विद्वान बनाता है । ऐसा जातक अपनी बात पर दृढ़ उदार, परोपकारी, राज-सम्मान प्राप्त, राजपद प्राप्त, शूरवीर किन्तु हठी हो सकते हैं । कर्त्तव्य के आगे यह कुछ भी नहीं समझते ।

अन्य ग्रहों के साथ सूर्य का योग राज-भंगयोग भी उपस्थित करता है। इसके विभिन्न फलों में एक फल संसार से विरक्ति भी हो सकती है। यदि सूर्य के साथ अन्य अनेक ग्रह दशम भाव में एकत्र हों तो यह योग लोकोपकार की भावना प्रकट करता है। ऐसे जातक किसी मत के प्रवर्तक भी हो सकते हैं।
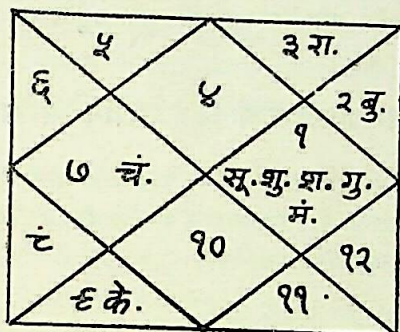
(बौद्धधर्म के प्रवर्तक भगवान गौतम बुद्ध)

उक्त योगों के साथ चतुर्थ भाव में चन्द्रमा का रहना जातक में दया, अहिंसा, भावुकता, असार के प्रति विरक्ति, मोह की समाप्ति, आत्म-विश्वास आदि को जाग्रत करता है।

षष्ठ भावस्थ राहु देशाटन का योग प्रकट करता है। घर छोड़कर बाहर जाने की प्रवृत्ति में यह योग उपलब्धि कारक भी हो सकता है।

दशम भाव में सूर्य, शुक्र, शनि, गुरु और मंगल पांचों का योग जातक को महान बना देता है। ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार यह 'प्रव्रज्या' योग है। जिसके प्रभाव से जातक राजवंश में जन्म लेकर भी वनवासी होना चाहिए।

एकादश भाव में बुध की उपस्थिति जातक की विवेक बुद्धि और विद्वता को सूचित करती है। इसके कारण सन्तान के प्रति मोह-भाव का न रहना भी सम्भव है।

द्वादश भाव में स्थित राहु भी जातक के विवेक को तीव्र कर देता है। उसमें दान, धर्म तथा परोपकार की भावना उत्पन्न होकर संसार के प्रति वैराग्य और लोक-कल्याण की ओर प्रवृत्ति का उदय होना बहुत कुछ सम्भव है।

चन्द्रमा का प्रभाव और उद्योग-व्यापार

श्री गौतमबुद्ध की उक्त कुण्डली से चन्द्रमा के चौथे भाव का प्रभाव स्पष्ट है। चन्द्रमा के कारण राजयोग संन्यास योग ही नहीं, व्यापार-उद्योग का भी अच्छा योग बनता है।

यहाँ एक ऐसी ही कुण्डली प्रस्तुत है—
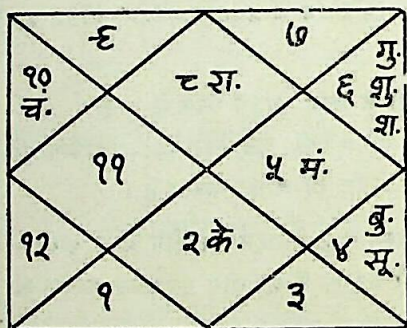
श्री हेनरी फोर्ड

(विश्व के प्रमुख कार आदि के निर्माता)

तीसरे भाव में विद्यमान चन्द्रमा मनुष्य को स्वावलम्बी, परिश्रमी और सम्पन्न बनाता है। वह अपनी योजनाओं में स्थिर स्वभाव का तथा व्यापार में पूर्ण रूपेण सफल होना चाहिए।

सातवें भाव में केतु की उपस्थिति उसके दाम्पत्य जीवन को प्रभावित कर सकती है। किन्तु नवम भावस्थ बुध उसमें सहारा लगाता है। साथ ही धस, सन्तान आदि की सम्पन्नता प्रदान करता है। बुध का कर्क राशि पर होना भी उसे धन से सम्पन्न बनाने में सहायक है।

नवम भाव में ही सूर्य का रहना जातक को गरीबी से उबार कर अमीरी दिलाने में सहायक होता है। यद्यपि सूर्य और शुक्र की परस्पर शत्रुता है, किन्तु सूर्य एक बलवान ग्रह तथा चन्द्रमा की भी उस भाव पर दृष्टि है, इसलिए शुभ फल की प्राप्ति होनी चाहिए।

दशम भाव में मंगल जातक को सफल व्यापारी बनाता है। ऐसे जातक यदि व्यापारी न हों, नौकरी करें तो भी अत्युच्च स्थिति पर रहकर योग्यता से प्रशासन चलाते हैं। उन्हें अपने उस कार्य में भी धन सम्मान की कमी नहीं रहती।

एकादश भाव में गुरु, शुक्र और शनि का त्रियोग भी जातक की सम्पन्नता और सफलता में सहायक होना चाहिये। यह तीनों ही ग्रह उक्त में एक साथ रहकर अहितकर और कम हितकर अधिक होंगे। यद्यपि गुरु और शुक्र में शत्रु भाव है, किन्तु शनि का सम रहना गुरु के पक्ष में ही अधिक जाता है।

लग्न भाव में राहु गरीब घर में उत्पन्न होना व्यक्त करता है, जबकि अन्य ग्रह उसके उत्कर्ष में सहायक सिद्ध होते हैं।

मंगल का प्रभाव और राजपद

श्री हेनरी फोर्ड की कुण्डली में दशम भाव में मंगल के प्रभाव से उद्योग-व्यापार में उन्नति का निश्चय होता है। मंगल ग्रह राजपद प्राप्ति में भी अत्यन्त सहायक होता है, विशेषकर उस स्थिति में जब कि लग्न भाव में मंगल पड़ा हो। यहाँ ऐसी ही एक कुन्डली दी जाती है—
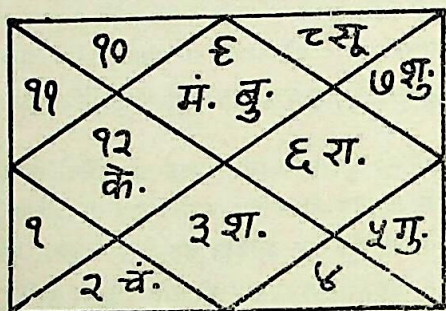
(भू० पू० राष्ट्रपति स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद)

ऐसा जातक कुशल व्यापारी, राज-सम्मान प्राप्त या राजपत प्राप्त तथा शिक्षित और विद्वान् होना चाहिए। उक्त कुण्डली में धनु राशि लग्न की है, उसमें मंगल और बुध दोनों स्थित हैं। धनु राशिस्थ मंगल जातक को राजपद की ओर उन्मुख करता है। बुध विद्वता, उदारता और सत्यता का प्रतीक है। यद्यपि धनु राशिस्थ बुध कुछ विपरीत फल व्यक्त करता है, किन्तु मंगल के साथ शत्रु भाव न रखने तथा सम रहने के कारण वह अपने अशुभ प्रभाव से प्रभावित करने में असमर्थ है।

परन्तु लग्न भाव पर शनि की दृष्टि होने से जातक को अनेक उतार चढ़ाव देखने पड़ते हैं। उसका अधिक जीवन संघर्षों से जूझते हुए व्यतीत होता है।

षष्ठ भावस्थ चन्द्रमा एक सशक्त राजयोग उपस्थित करता है। उसके कारण रोग शत्रु एव बाधाएं दूर होकर संघर्ष का अन्त हो जाना व्यक्त होता है।

नवम भावस्थ गुरु जातक को सौभाग्यशाली बनाता है। ऐसा जातक न्यायदान, धार्मिक, आस्तिक तथा उदार होना चाहिए। उस पर शनि की तीसरी दृष्टि सम परिणाम व्यक्त करेगी, जिसके कारण जातक के लिए अशुभ फल अप्रभावी होगा।

दशम भावस्थ राहु जातक को जनता का विश्वास पात्र बनाता है। वह उसके परोपकारी कार्यों से प्रभावित होकर पीछे-पीछे चल पड़ती है। इसलिए जातक भी जनता के दुःख-दर्दों से प्रभावित होकर नेतृत्व में अगुआ होता है।

एकादश भाव का शुक्र दाम्पत्य जीवन का सुखी होना व्यक्त करता है। द्वादश भावस्थ सूर्य साहसी होने का परिचय देता है। उसके कारण जातक स्थिर बुद्धि और संकट में भी न घबराने वाला होगा।

बुध का प्रभाव और मेधा शक्ति

यदि तीसरे भाव में बुध हो तो ऐसा जातक विलक्षण मेधा शक्ति वाला तथा सामयिक परिस्थितियों को भांपने में अद्भुत क्षमता वाला होता है। उसे विद्वान्, साहित्य प्रेमी तथा अध्यात्म शादि विषयों में जिज्ञासु होना चाहिए। यहाँ एक विशिष्ट कुण्डली प्रस्तुत है—
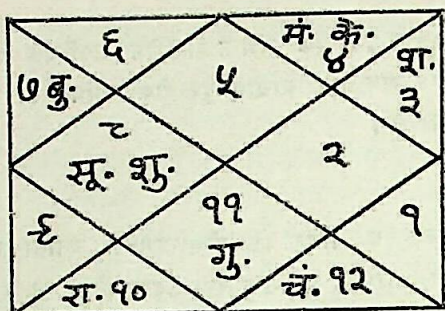
कविराज दाऊदयाल गुप्त

(एक प्रसिद्ध कवि, लेखक एवं समाज सेवी)

चौथे भाव में सूर्य और शुक्र दोनों की स्थिति जातक को कुछ परेशानी में डालती है। किन्तु शुक्र की सौम्यता और हितकर गुण सूर्य के गुणों को प्रभावित किये बिना नहीं रहते। शुक्र के अनुकूल प्रभाव से जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी रहना चाहिए। अति सन्तान योग बनेगा।

षष्ठ भावस्थ राहु जातक की कठिनाइयों को सुगम करता और शत्रुओं पर विजय प्राप्ति का संकेत देता है। यद्यपि इसके एक प्रभाव से शत्रुओं की हलचलें बढ़कर मानसिक अशान्ति का कारण बन सकती हैं।

सप्तम भावस्थ गुरु जातक को मानवीय गुणों से विभूषित करता है। वह उसकी विद्वता और कला प्रियता में वृद्धि कर जातक में ग्रन्थ-रचना सम्बन्धी योग्यता को पुष्ट करता है।

एकादश भावस्थ शनि का योग जातक को एक कुशल व्यवसायी, कुशल प्रशासक, व्यापार-विस्तार की रुचि से युक्त, आय के स्रोतों से सम्पन्न समाज एवं परिवार में सम्मानित बनाता है। इसके कारण जातक का भाग्योदय तरुणावस्था के ढलान पर होना चाहिए।

द्वादश भाव में मंगल जातक को साहसी और निपुण बनाता है। युवावस्था में घोर परिश्रम से अपने को साधन सम्पन्न बनाये रखना भी इस योग की विशेषता है।

द्वादश भाव में ही केतु की स्थिति संघर्षशील जीवन, बाल्यकाल मे ही राजनीति में रुचि, उत्थान-पतनयुक्त जीवन तथा कठिनाइयों से मुकाबला आदि व्यक्त करती है। ऐसा जातक कठिनाई परिश्रमी और साहसी होता है।

गुरु का विशेष प्रभाव और राजनीति

गुरु अत्यन्त शक्तिशाली ग्रह है। इसे क्रूर ग्रह और पाप ग्रह भी मानते हैं। इसके प्रभाव से जातक अत्यन्त मेधावी और विचारशील होता है।

सन्तान, धन, राज-सम्मान या राजपद आदि के विषय में भी गुरु का अत्यन्त प्रभाव है। यदि यह अष्टम'भावमें स्थित हो तो राजनीति में कुशल बनाता है। यदि स्वगृही या उच्चस्थ हो तो जातक राजपद पर प्रतिष्ठित हो सकता है। ऐसी ही एक कुण्डली यहां दी जा रही है—
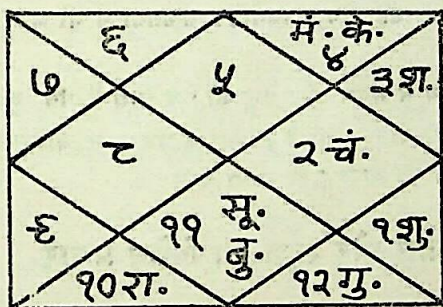
श्री हैराल्ड विल्सन

(इंग्लैंड के एक प्रधानमन्त्री)

षष्ठ भाव में स्थित राहु जातक को परेशानियों से उबारता तथा विजय प्राप्त करता है। शत्रु सक्रिय रहते हुए भी जातक से मात खा जाते हैं।

सप्तम भावस्थ सूर्य जातक का कुछ क्रोधी होना व्यक्त करता तथा कार्यों में बाधा उपस्थित करता है, किन्तु बुध के गुणों से अभिभूत अपनी बुद्धि की प्रखरता से उन बाधाओं पर विजय पाने में सफल हो जाता है।

अष्टम भावस्थ गुरु स्वराशि पर है, इसलिए जातक को सब प्रकार से योग्य बनाता है। उक्त कुण्डली में गुरु का यह योग राजनैतिक क्षेत्र में सफल बनाने वाला है।

दशम भावस्थ चन्द्रमा सौभाग्य वृद्धि करने में सशक्त समझा जाता है। इसके कारण भाग्य सदा उसका साथ देता और कठिनाइयों पर विजय पाने में समर्थ बनाता है।

ग्यारहवें भाव में स्थित शनि जातक का कुशल प्रशासक होना व्यक्त करता है। यह योग राजनैतिक सफलता में भी अपना योगदान कर सकता है।

द्वादश भाव में मंगल और केतु की एक साथ स्थिति युवावस्था में घोर परिश्रम की बात कहती है। केतु के प्रभाव से बाल्यकाल से ही सघर्षमय जीवन का आरम्भ हो जाना चाहिए।

साहस और शुक्र का विशेष प्रकार

शुक्र ग्रह शुभ हो तो जातक को साहसी, पराक्रम तथा अद्भुत शौर्य से सम्पन्न बनाता है। ऐसा जातक बहुत बली और कठिन से कठिन कार्यों का करने वाला होता है।

यदि शुक्र नवें भाव में हो तो जातक को अधिक साहसी, अधिक चतुर तथा भाग्यवान कहलाता है। ऐसा जातक संघर्षमय जीवन के साथ भी विजयशील होता है। उसकी चतुराई समय पर बहुत काम आती है। ऐसी ही एक लग्न पत्रिका यहाँ प्रस्तुत है—
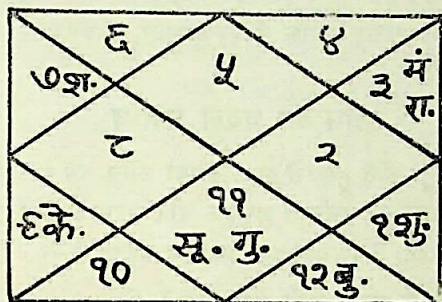
(छत्रपति शिवाजी)

उक्त कुंडली में शुक्र नवें भाव में मेष राशि पर बैठा है, इसलिए उसे स्थस्थ, दीर्घायु तथा कठिनाइयों से लोहा लेने वाला होना चाहिए। तीसरे भाव में शनि बैठा है, जो कि जातक में साहस, शौर्य, अदम्य उत्साह और भयंकर से भयंकर कार्यों के करने वाला बनाता है। ऐसे जातक में क्रोध की मात्रा भी अत्यधिक होगी।

द्वितीय भावस्थ चन्द्रमा धन के विषय में परेशानियों से बचाता है। जब-जब धन सम्बन्धी कठिनाई उपस्थित होती है, तब-तब कहीं न कहीं से पूर्ति हो जाती है।

पांचवें स्थान का केतु कुछ परेशानी में डालता है। सातवें स्थान पर सूर्य और गुरु दोनों मित्र भाव से बैठे हैं, इसलिए वे सभी परेशानियों

को दूर करते हैं। यदि सूर्य कुछ गड़बड़ भी करता है तो गुरु उसे सुधार देता है। आठवें स्थान का बुध भी अनुकूल योग उपस्थित करता है।

एकादश भावस्थ मंगल जातक को अत्यन्त पराक्रमी और साहसी बनता है तथा उसी के साथ बैठा हुआ राहु सभी प्रकार की दुर्बलताओं को दूर कर यशस्वी बनाता है। मिथुन राशि में स्थित राहु उच्च राशिस्थ होने के कारण जातक में अद्भुतमधा, कायक्षमता तथा ख्याति का कारण होता है।

शनि का प्रबल प्रभाव

यह ग्रह क्रूर होते हुए भी शुभ अथवा सौम्य बन सकता है। शुभ योग के साथ रहने पर पूर्णतया अनुकूल और सहायक सिद्ध होता तथा विजय प्राप्त करता है। यहां एक अध्ययन प्रस्तुत है—

ऐसे जातक के सामने सभी झुक जाते हैं, विशेषकर उस स्थिति में जबकि शनि लग्न भाव में हो। ऐसे जातक को आरम्भ में कुछ कठोर परिश्रम करना होता है, बाद में सब कुछ सामान्य हो जाता है। जीवन में असफलता के बाद सफलता अनिवार्य होती है।
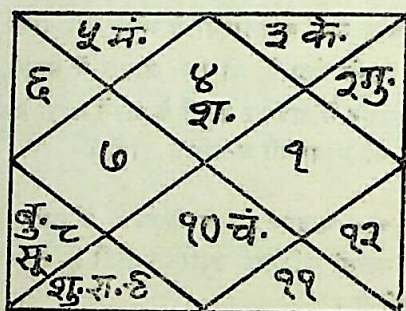
श्रीमती इन्दिरा गांधी
(भारत की वर्तमान प्रधानमन्त्री)

मङ्गल का द्वितीय भावस्थ होना जातक की आर्थिक सम्पन्नता व्यक्त करता है। ऐसा व्यक्ति विद्वान् एवं उच्च परिवार का होना चाहिए। वह न्यायवान, उत्साही भी होगा।

पंचम भाव में बुध और सूर्य दोनों की उपस्थित जातक के लिए अधिक, शुभ है। इनके प्रभाववश उसे उच्च शिक्षित, मेधावी, सुयोग्य सन्तानवान होना चाहिए। यद्यपि वृश्चिकस्थ बुध कुछ परेशानी व्यक्त करता है, किन्तु सूर्य का प्रबल प्रभाव उसे परेशानी को पूर्ण रूप से नष्ट कर देता है।

षष्ठ भावस्थ राहु जातक की परेशानियाँ दूर करने में बहुत सहायक सिद्ध होता है। उसके फलस्वरूप जातक को अत्यन्त प्रभावशाली सफल नेता होना चाहिए।

एकादश भावस्थ गुरु अत्यन्त शुभ होता है। उसके फलस्वरूप जातक आत्म-बल में प्रबल तथा गम्भीर चिन्तन युक्त होता है। वह जो निर्णय लेता है, उसमें दृढ़ता होती है तथा सफलता भी प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति राज-सम्मान से सम्मानित तथा विशेष सौभाग्यशाली समझे जाते हैं। उसके कारण राजपद की प्राप्ति होनी चाहिए—

लग्नस्थ शनि के प्रभाव से सम्बन्धित एक कुण्डली और प्रस्तुत है।
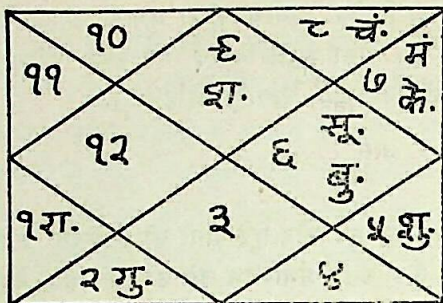
डा० चमनलाल गौतम

(सस्कृति सस्थान, बरेली के संस्थापक)

इस कुण्डली में भी शनि लग्नस्थ है, इसलिए अनेक संघर्षों के होते हुए भी सफलता मिलनी चाहिए। ऐसे जातक अपने लक्ष्य पर आगे बढ़ते जाते हैं। उसके कारण आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होनी चाहिए। यद्यपि जातक को कठोर परिश्रम करना होता है।

परन्तु शत्रु राशिस्थ होने के कारण शनि स्वास्थ्य के लिए कुछ विपरीत प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकता है। इसके कारण जातक को किसी ऐसे साधारण रोग से आक्रान्त होना चाहिए जो कभी ठीक हुआ प्रतीत हो और कभी पुनः परेशान करने लगे। फिर भी उसका प्रभाव द्योतक कभी नहीं हो सकता।

पांचवें भाव में राहु प्रारम्भ में सन्तान पक्ष में कुछ गड़बड़ी करता है किन्तु कुछ अधिक आयु में कुछ योगों के प्रभाव से पुत्र-योग उपस्थित करता है। पाँचवें भाव में स्थिति राहु आरम्भ में चित्त में अस्थिरता भी उत्पन्न करेगा। परन्तु, साथ ही स्वभाव में सत्यता गुरुजनों के प्रति श्रद्धा उच्च विचार रहने चाहिए।

षष्ठ भावस्थ गुरु अत्यन्त भाग्यशाली बनाने वाला है। धन की सम्पन्नता, विवेक बुद्धि, मुकदमे में विजय आदि सम्भावित हैं।

नवम भावस्थ शुक्र जातक को उदार, नम्र, धन से सम्पन्न, गृहस्थ जीवन में सुखी और सुशिक्षित बनाता है। सिंह राशिस्थ होने के कारण सौभाग्य में अधिक वृद्धि करता है।

दशम भावस्थ सूर्य जातक को सौभाग्यशाली, नेतृत्व शक्ति से युक्त राज-पद या राज-सम्मान से युक्त बनाता है। धन, भूमि, वाहन आदि की सम्पन्नता रहनी चाहिए। कन्या राशिस्थ होने के कारण अधिक उत्कर्ष का कारण होगा।

बुध भी दशम भाव में हैं, जो कि अत्यन्त सुलझे विचारों का सूचक है। इस योग के कारण जातक लेखक, प्रकाशक, पत्रकार, धर्माचार्य या कोई बुद्धिजीवी हो सकता है। कन्या राशिस्थ होने के कारण स्वराशिस्थ और उच्च राशिस्थ होने के कारण धन-प्राप्ति एवं राज-सम्मान का भी योग बनता है।

एकादश में मङ्गल और केतु दोनों साथ-साथ हैं। यहां मङ्गल तुला राशिस्थ होने के कारण उसे साहसी बनाता है और केतु पारिवारिक जीवन को सुखी बनाने में सहायक है। उसे माता-पिता से भी धन की प्राप्ति हो सकती है।

द्वादश भावस्थ चन्द्रमा के नीचस्थ होने के कारण स्वभाव में कुछ कृपणता व्यक्त करता है, किन्तु द्वादश भाव के कारण उदार और दान शील भी बनाता है।

कुल मिलाकर उक्त कुण्डली का फलादेश बहुत सुन्दर है। जातक सम्पन्न, सन्तोषी, व्यवहार-कुशल, सफल तथा सौभाग्यशाली होना चाहिए। ●

खोजपूर्ण ज्योतिष साहित्य

१. प्रारम्भिक ज्योतिष विज्ञान	—	७)५०
२. द्वादश ग्रह फलादेश विज्ञान	—	१०)
३. महादश विज्ञान	—	६)५०
४. ज्योतिष योग रत्नाकर	—	५)२५
५. रत्न ज्योतिष विज्ञान	—	६)५०
६. मुहूर्त ज्योतिष विज्ञान	—	५)
७. रोग, मृत्यु और ज्योतिष	—	५)५०
८. ज्योनिष और ग्रह पीड़ा निवारण	—	४)५०
९. पंचवर्षीय भविष्य वाणी	—	५)
१०. सरल अंक ज्योतिष	—	४)५०
११. ज्योतिष और जन्म लग्न	—	३)७५
१२. भाग्य और आकृति विज्ञान	—	४)
१३. जन्मकुण्डली (निर्माता और अध्ययन)	—	३)
१४. हस्तरेखा महाविज्ञान	—	११)
१५. हस्तरेखायें	—	३)५०
१६. स्त्री जातक विज्ञान	—	१)५०
१७. भाग्य रेखाये	—	३)७५
१८. वर्षफल कैसे बनायें ?	—	४)
१९. प्रश्न ज्योषित विज्ञान	—	६)५०
२०. स्वप्न ज्योतिष विज्ञान	—	३)७५
२१. राशि ज्योतिष विज्ञान	—	३)७५
२२. फलित ज्योतिष विज्ञान	—	४)
२३. शकुन ज्योतिष विज्ञान	—	३)७५
२४. ज्योतिष और आर्थिक समस्यायें	—	३)२५
२५. मुहूर्त चिन्तामणि	—	१०)

प्रकाशक—संस्कृति संस्थान, ख्वाजाकुतुब बरेली।

विश्व ओंकार परिवार की स्थापना

•••oOo•••

ॐ परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ व स्वाभाविक नाम है। इसे मन्त्र शिरोमणि, मन्त्र सम्राट, मन्त्र राज, बीजमन्त्र और मन्त्रों का सेतु आदि उपाधियों से विभूषित किया जाता है। इसे श्रेष्ठतम, महानतम और पवित्रतम मन्त्र की संज्ञा भी दी जाती है। सारे विश्व में इसकी तुलना का कोई मन्त्र नहीं है। यह सभी मन्त्रों को अपनी शक्ति से भावित करता है। सभी मन्त्रों की शक्ति ओंकार की ही शक्ति है। यह शक्ति और सिद्धिदाता है। भौतिक व आर्थिक उत्थान के लिये कोई भी दूसरी श्रेष्ठ व सरल साधना नहीं है।

सभी ऋषि मुनि ॐ की शक्ति और साधना से ही अपना आत्मिक उत्थान करते रहे हैं। परन्तु आज आश्चर्य है कि ॐ का अन्य मन्त्रों की तरह व्यापक प्रचार नहीं है। इस कमी को अनुभव करते हुये विश्व ओंकार परिवार की स्थापना की गई है। आप भी अपने यहाँ इसका एक प्रचार केन्द्र स्थापित करें। शाखा स्थापना का सारा साहित्य निःशुल्क रूप से प्रधान कार्यालय, बरेली से मंगवा लें। आपको केवल इतना करना है कि स्वयं ओंकारोपासना आरम्भ करके ४ अन्य मित्रों व सम्बन्धियों को प्रेरित करें और सभी संकल्प पत्र व शाखा स्थापना का प्रार्थना पत्र प्रधान कार्यालय को भिजवा दें। इस वर्ष २७००० साधकों द्वारा ९०० करोड़ मंत्रों के जप का महापुरश्चरण पूर्ण किया जाना है। आशा है कि ओंकार को जन-जन का मन्त्र बनाने के श्रेष्ठतम आध्यात्मिक महायज्ञ में आप सम्मिलित होकर महान पुण्य के भागी बनेंगे।

ओंकार रहस्य, ओंकार दैनिक विधि, ओंकार चालीसा, ओंकार कीर्तन और ओंकार भजनावली नामक १५ पैसे मूल्य वाली सस्ती पुस्तिकाओं को अधिक से अधिक संख्या में वितरित करें।

विनीत :

संस्कृति संस्थान **चमनलाल गौतम**

ख्वाजाकुतुब, वेदनगर, बरेली–२४३००३ (उ० प्र०)

एक मौन व्यक्तित्व का मौन समर्पण

....०O०....

डॉ० चमन लाल गौतम—एक व्यक्ति का ही नहीं वरन् ऐसे विशाल धार्मिक संस्थान का नाम है जो सतत् २४ वर्षों से ऋषि प्रणीत आर्ष साहित्य के शोध, प्रकाशन और व्यापक साहित्य प्रचार का कार्य देश-विदेश में करते रहे हैं। यह उनकी तप साधना का ही परिणाम है कि किसी भी आर्थिक सहयोग के बिना वेद, उपनिषद्, दर्शन, स्मृतियाँ, पुराण व मन्त्र-तन्त्र आदि साधनात्मक साहित्य की ३०० से अधिक पुस्तकों को प्रकाशित करके घर-घर में पहुंचाने की पवित्रतम साधना कर रहे हैं। मन्त्र, तन्त्र योग, वेदान्त व अन्य धार्मिक विषयों पर १५० खोजपूर्ण ग्रन्थों का लेखन, सम्पादन एक ऐसा अविस्मरणीय व असाधारण कार्य है जिस पर उनके अथक श्रम, गम्भीर अध्ययन, तप, प्रतिभा और मौलिक सूझ-बूझ की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। ध्यान और त्राटक पर उनके वैज्ञानिक प्रयोग प्राचीन ऋषियों की तप साधना की याद दिलाते हैं। इन प्रयोगों और अनुभूतियों पर रचा साहित्य स्वयं में एक आश्चर्य है। स्वस्थ साहित्य की रचना और प्रचार का उनकी जीवन योजना का यह पहला चरण पूरा हुआ।

पिछले २४ वर्षों से लगातार चल रही आध्यात्मिक साधना के महापुरश्चरण का दूसरा चरण भी समाप्त हो रहा है। तीसरे चरण-आध्यात्मिक साधनाओं और अनुभूतियों के विश्वव्यापी विस्तार का शुभारम्भ विश्व ओंकार परिवार की स्थापना के साथ बसन्त पञ्चमी की परम पवित्र बेला के साथ हो गया है। अतः उनका शेष जीवन तीसरे चरण की सफलता - विश्व ओंकार परिवार की शाखाओं के व्यापक विस्तार के माध्यम से करोड़ों व्यक्तियों को ओंकार साधना में प्रविष्ट करके उच्च आध्यात्मिक भूमिका में प्रशस्त करना, ओंकार अथवा उच्च आध्यात्मिक साहित्य की रचना व प्रसार को समर्पित है।

स्वामी सत्य भक्त

ज्ञानपूर्ण ज्योतिष साहित्य

१.	मानसागरी (भा. टी.)	२२)
२.	प्रारम्भिक ज्योतिष विज्ञान	७)५०
३.	द्वादश ग्रह फलादेश विज्ञान	१०)
४.	महादशा विज्ञान	६)५०
५.	ज्योतिष योग रत्नाकर	६)५०
६.	मुहूर्त ज्योतिष विज्ञान	५)
७.	रोग, मृत्यु और ज्योतिष	५)५०
८.	रत्न ज्योतिष विज्ञान	६)५०
९.	ज्योतिष और ग्रह पीड़ा निवारण	४)५०
१०.	सरल अंक ज्योतिष	४)५०
११.	ज्योतिष और जन्म लग्न	३)[illegible]
१२.	भाग्य और आकृति विज्ञान	४)[illegible]
१३.	जन्मकुण्डली (निर्माण और अध्ययन)	३)[illegible]
१४.	हस्तरेखा महा-विज्ञान	[illegible]
१५.	हस्तरेखायें	५)[illegible]
१६.	स्त्री जातक विज्ञान	१)[illegible]
१७.	भाग्य रेखायें	३)७५
१८.	वर्षफल कैसे बनायें ?	४)
१९.	प्रश्न ज्योतिष विज्ञान	६)५०
२०.	स्वप्न ज्योतिष विज्ञान	३)७५
२१.	राशि ज्योतिष विज्ञान	३)७५
२२.	फलित ज्योतिष विज्ञान	४)
२३.	शकुन ज्योतिष विज्ञान	३)७५
२४.	ज्योतिष और आर्थिक समस्याएं	४)५०
२५.	मुहूर्त चिन्ता-मणि (भा. टी.)	१०)
२६.	आकस्मिक धन लाभ के योग	३)

प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

ख्वाजाकुतुब, वेदनगर, बरेली-२४३००३ (उ० प्र०)